श्रीः ।

बीकानेर राज्यका इतिहास ।

जिसको

कुँवर कन्हैयाजू देवसे लिखाकर,

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें

मुद्रित कर प्रकाशित किया.

सं० १९८३, सन् १९२६ ई.

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन, स्वकीय "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया ।

Major-General His Highness Maharajadhiraj Raj-Rajeshwar Narendra-Shiromani, Maharajah Sir Shri Ganga Singhji Bahadur, G.C.S.I., G.C.I.E., G.C.V.O., G.B.E., K.C.B., A.D.C., LL.D., Maharajah of Bikaner

रौप्य जुबिली महोत्सवके

शुभ अवसरपर

यह क्षुद्र भेंट

प्रकाशककी ओरसे

राजराजेश्वर नरेन्द्रशिरोमणि

श्रीमहाराजाधिराज सर गंगासिंह बहादुर

जी.सी.एस.आई.ई, जी.सी.आई.ई, एल.एल.डी.

के

करकमलोंमें

सादर समर्पित।
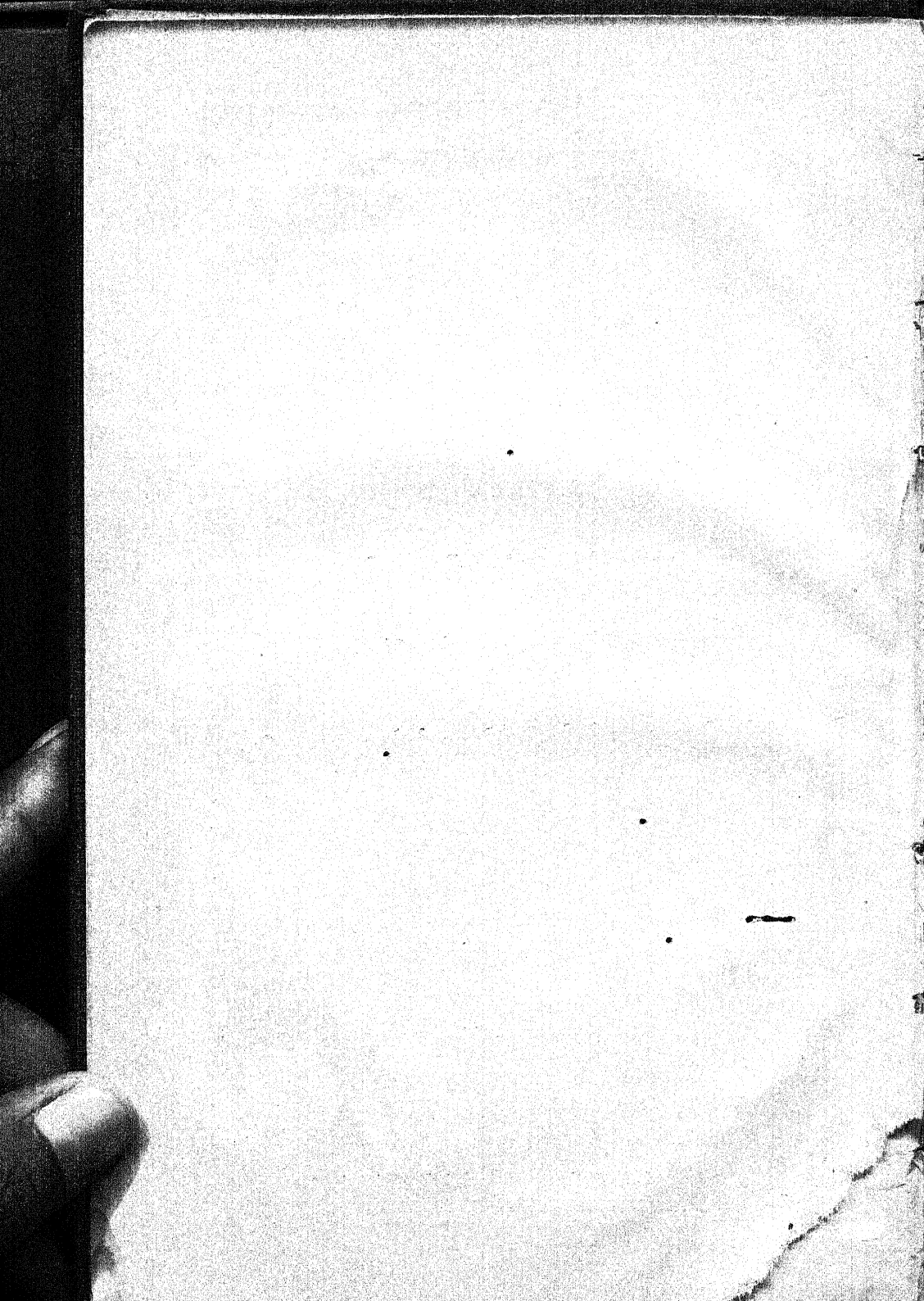
निवेदन ।

हिन्दी भाषामें इतिहास-ग्रंथोंका अभी एक प्रकार अभाव है, परन्तु साथ ही यह देख सन्तोष होता है कि इस अभावके मिटानेका उद्योग यथा सामर्थ्य किया जा रहा है । " **श्रीवेंकटेश्वर प्रेस** " से भी इस विषयके कई ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं और होते रहते हैं। उसी सिलसिलेमें आज यह "**बीकानेर राज्यका इतिहास**" भी हिन्दीभाषा-भाषियोंके समक्ष उपस्थित किया जाता है। बीकानेर-राज्यने अपने वर्त्तमान नरेश श्रीमन्महाराज राजराजेश्वर नरेन्द्रशिरोमणि श्रीमहाराजाधिराज सर गंगासिंह बहादुर जी. सी. एस. आई. जी. सी. आई. ई. ए. डी. सी. महोदयके शुभ शासनकालमें जैसी अपूर्व उन्नति की है, वह वास्तवमें सन्तोष देने और उत्साहित करनेवाली है । ऐसी दशामें उचित है कि देशवासी वीरभूमि राजस्थानके इस प्राचीन राज्यसे और भी परिचित हों, जिससे वे प्राचीन और आधुनिक दोनों दशाओंका मिलान करके वर्त्तमान उन्नतिका अनुमान कर सकें । इसी उद्देश्यसे यह ग्रंथ लिखा गया है । इसके निर्माणमें बीकानेरराज्य-पुस्तकालयसे प्राचीन कागज पत्रोंके रूपमें बहुमूल्य सहायता मिली है । उसके लिये मैं श्रीदरबारका अत्यन्त कृतज्ञ हूं। यह प्राचीन कालसे लेकर वर्तमान महाराजाधिराजके प्रथम जुबिली महोत्सवतकका इतिहास है । टाड साहबके " राजस्थान " में बीकानेरका जो इतिहास है, वह बहुत संक्षिप्त है । इस ग्रंथमें उसे विस्तार पूर्वक वर्णन करके उसके पीछेका भी सम्पूर्ण इतिहास दे दिया गया है । अवश्य ही इसकी शुद्धतापर विशेष ध्यान रखा गया है, परन्तु तो भी भूलें रह जाना सम्भव है । यदि वे कहीं दृष्टिगोचरहों तो पाठकगण कृपया क्षमा करें और मुझे सूचित करें । द्वितीयावृत्तिमें उन्हें दूर करनेकी चेष्टा की जायगी । अन्तमें इतिहास-प्रेमी सज्जनोंसे प्रार्थना है कि हिन्दीसाहित्य भंडारमें इस छोटीसी भेंटको भी स्थान प्रदान कर लेखक और प्रकाशकको उत्साहित करें ।

श्रीवेंकटेश्वर प्रेस.

बम्बई-ता० १९ नवम्बर १९१२.

प्रकाशक—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

चूरूनिवासी ।

अनुक्रमणिका.

प्रथम खंड ।

राठौड़ वंशकी उत्पत्ति—कनौजमें कनकसेन—मयूरसेनकी प्रशस्ति—रामदेवका दिग्विजय—श्रीपुंज और उससे राठौड़ वंशकी तेरह शाखाओंका विस्तार—राजा जयचन्द और उसका पृथ्वीराज चौहानसे विरोध—जयचन्दका यवन लोगोंपर विजय पाना—जयचन्दके पुत्र आस्तान—प्रपौत्र सियाजीराय—मरुभूमिमें राठौड़ राज्यकी स्थापना—राठौड़ और भाटियोंका झगड़ा—खेडेमें छाडौजी सबलीके पुत्र कानड़दका राज्य पाना—मल्लीनाथजीका पुनः राज्याधिकार प्राप्त करना—वीरमरा गढे मल्लीरा मढे—चौंडेजी—चौंड़ेजीका मंडोरमें राज्य स्थापित करना—सत्तोजी—सत्तोजी और रिडमलकी लड़ाई—रिडमलका उदयपुर राणा कुंभीकी सहायताके लिये जाना और वहीं मारा जाना—रिडमल जीके पुत्र जोधाजीके १७ बेटोंके नाम ।

द्वितीय खण्ड ।

बीकाजी—नापा सांखला—बीकाजीका पितासे पृथक् होकर देशनोक आना—बीकानेरकी भूमिमें भिन्न २ सम्प्रदाय—बीकाजीका पूगलकी कुमारीसे विवाह—जूनागढ़—जाट लोगोंका विस्तार और उनका बीकाजीको अपना राजा बनाना—जोधाजीका मोहिलोंसे झगड़ा और बीकाजी का मोहिलोंको परास्त करना—राठौड़ोंसे मोहिलोंका अंतिम युद्ध—कांधलजीका हिसारके पास तक अपना राज्य बढ़ाना और मुसलमानी सेनाके हाथ उनका मारा जाना—बीकाजी और जोधाजीका कांधलकी मृत्युका बदला लेनेके लिये चढ़ाई करना मुकाम द्रोणपुरमें जोधाजी और कांधलजीकी शर्तें—बीकाजीका शेखावाटी पर आखिरी आक्रमण—बीकाजीकी मृत्यु ।

लूणकरणजी—नरोजीका सात महीने राज्य करना—राव लूणकरणजीका गद्दीपर बैठना—शेखावतोंसे १२० गाँव लेना—लाला

चारणके द्वारा राठौड़ और भाटियोंमें विरोध—राठौड़ोंका जयपाना—लूणकरणके भाई, करणसी ।

राव जैतसी—रतनसिंहका महाजनकी जागीर लेना—लूणकरणजीका उदयकरण बीदावतको दंड देना—जोधपुरके झगड़ेमें जैतसीका राव गांगाकी सहायता करना—पहले पहल भटनेरपर बीकानेरका कब्जा होना—मालदेवका जोधपुरकी गद्दीपर बैठना—बीकानेरपर चढ़ाई—राव जैतसीका मारा जाना ।

कल्याणसिंहजी—बाबर और राना सांगाकी लड़ाईमें कल्याणसिंहका सांगाकी मददपर जाना—कल्याणसिंहजीका शेरशाहसूरसे मदद लेना—बीकानेरका राज्य पाना—भटनेरपर पुनः राठौरोंका कब्जा—कल्याणसिंहजीकी मृत्यु ।

तीसरा खण्ड ।

रावरायसिंहजी—आमेरके कुँवर मानसिंहका बीकानेरपर चढ़ाई करना—रायसिंहजीका मानसिंहसे संधि करना—रायसिंहजीका अकबरके दरबारमें जाना—अकबरकी आज्ञासे रायसिंहजीका अहमदाबादके किलेको जीतना—रायसिंहजीका जोधपुरपर चढ़ाई करना-सिरोहीके रावको कैद करना और फिर छोड़ देना—रायसिंहजीको बरहानपुरकी सूबेदारी मिलना—अकबरका देहान्त और जहाँगीरकी सिंहजीरायपर नाराजी—रायसिंहजीकी मृत्यु ।

सूरसिंहजी—रायसिंहजीके बाद दलपतसिंहजीका गद्दीपर बैठना-दलपतसिंहका दिल्लीसे बिना छुट्टी लिये चले आना—बादशाहकी नाराजी—सूरसिंहका बादशाहीमें फरियाद करना—और वहाँकी मददसे दलपतसिंहको कैद करके उनका बीकानेरकी गद्दीपर बैठना—सूरसिंहजीका राजविद्रोही करमचंद बच्छावतके कुटुंबियोंका सर्वनाश करना—भाट और ब्राह्मणोंका जल मरना—सूरसागर ताल—सूरसिंहजीकी मृत्यु ।

करणसिंहजी—करणसिंहजीका गद्दीपर बैठना—शाही दरबारमें सम्मान पाना—करणसिंहजीका औरङ्गजेबका पक्ष ग्रहण करना—औरङ्गजेबका सब हिन्दूराजाओंको मुसलमान करनेका प्रयत्न—करणसिंहको फकीर मित्रके द्वारा इस बातकी सूचना मिलना—करणसिंहका कटकपर शाही नावें तोड़ना—जंगलधर शाहकी पदवी पाना—औरङ्गजेबका इनको दरबारमें तलब करना और नाराजीके बदले प्रसन्न होकर खिलत देना ।

महाराज अनूपसिंह—इनके गद्दी बैठनेपर बनमालीदासका राज्यपर दावा करना—पद्मसिंह और केशरीसिंह—बीकानेर राज्यका विस्तार-अनूपसिंहका राज्याधिकार पाना—पद्मसिंहकी बीर मृत्यु—बनमालीदासका मुसलमान होकर बीकानेरका आधा राज्य पाना-अनूपसिंहजीका उसे मरवा डालना—अनूपसिंहजीको अर्वोनीकी सूबेदारी मिलना-अनूपसिंहजीकी विद्वत्ता--दक्षिणमें उनका देहान्त ।

सुजानसिंहजी—सरूपसिंहका राज्याभिषेक होना और चेचककी बीमारीसे दक्षिणमें ही मरना—सुजानसिंहका राज्याधिकारी होना—जोधपुरके राजा अजीतसिंहका बीकानेरपर चढ़ाई करना—सुजानसिंहका दक्षिणसे वापिस आना—नंदरामके कारण बाप बेटेमें वैर—बखतसिंहका बीकानेर पर चढ़ाई करना—राजकुमार जोरावरसिंहका बखतसिंहको परास्त कर लौटाना—सांखला लोगोंका बखतसिंहसे मिल जाना—भेद खुलनेपर सांखलोंका माराजाना और परिहारोंको किलेदारी मिलना ।

जोरावरसिंहजी—जोधपुरी फौजका बीकानेरपर आक्रमण करना-जोरावरसिंहजीका शत्रुदलको मार भगाना—जोधपुरके अभयसिंह और बखतसिंहमें विरोध और बखतसिंहका बीकानेरसे मदद माँगना—अभयसिंह और बखतसिंहका मेल—अभयसिंहका बीकानेरपर चढ़ाई करना—जयपुरके जयसिंहजीका बीकानेरवालोंका पक्ष लेना—जोरावरसिंहजीकी मृत्यु ।

गजसिंहजी—अमरसिंह और गजसिंह—गजसिंहजीका राजा होना अमरसिंहका जोधपुरसे फौज चढ़ा लाना और शिकस्त खाना—गजसिंहका अपने बागी जागीरदारोंको दण्ड देना—गजसिंहजीका बखतसिंहकी सहायता करना—बखतसिंहका जोधपुरकी गद्दी पर बैठना—भाटियोंसे झगड़ा—अकबरशाहका दूसरेको मदद देना—वहांसे नरेन्द्र महाराजाधिराजकी पदवी सहित हिसार परगना मिलना—हिसारपर कब्जा होना—गजसिंहजीका जयपुर जाना—कमरुद्दीन जोइयाको सिरोपाव देकर भटनेरके किलेकी कुञ्जी देना—गजसिंहजीकी रीतिनीति—उनका अन्तिम दुःख और मरण ।

चतुर्थ खंड ।

सूरतसिंहजी—गजसिंहके बाद राजसिंहजीका राजा होना और पन्द्रह दिनमें उनका देहान्त—नाबालिग प्रतापसिंहका गद्दीपर बैठना-गद्दीनशीनीके समय सूरतसिंहजीका अपमान—सूरतसिंहका प्रतापसिंहको मारकर आप राजा होना—देशी सरदारोंका विरोध और विदेशी सेना द्वारा उनका दमन—भटनेरका किला लेना—सिंधकी तरफ सेनाका जाना और शिवगढ़, मौजगढ़, वगैरहकी फतह—भावलखांकी संधि—जोधपुर पर चढ़ाई, विदेशी सेनाके कारण जागीरदार और प्रजाको दुःख अंग्रेज सरकारका दिल्लीकी बादशाहत पर अधिकार—सूरतसिंहजीका अंग्रेज सरकारसे संधि बंधन ।

रतनसिंहजी—जन्म—गद्दीपर बैठना—भाटियोंका सीमामें उपद्रव-कम्पनी सरकारके प्रतिनिधि जार्ज क्लार्कका सरहदी झगड़े तय करना—दिल्लीके बादशाहका खिताब देना—राज्यके जागीरदारोंका बन्दोबस्त करना—गया और पुष्करकी यात्रा—शासन सुधार—सिखोंकी लड़ाईमें मदद—डूँगरजी जवारजी ।

सरदारसिंहजी—गद्दीपर बैठना—राज्यमें अकाल और अशान्ति—दीवानोंकी रदबदल—रामलालद्वारकानी—सन् ५७ का बलवा और अंग्रेजोंको मदद—सरकारकी ओरसे ४२ गांव मिलना—पट्टेदारोंपर रेख मुकर्रर होना—तहसील और निजामतोंका कायम होना—राज कौन्सिलका टूटना—महाराजका स्वर्गवास ।

डूंगरसिंहजी—नाबालिगीमें रेजेन्सी कौंसिलद्वारा राज्यप्रबन्ध होना राज्याधिकार मिलना—प्रिन्स आव वेल्ससे मुलाकात—पट्टेदारोंपर रेख बढाये जानेकी तजवीज—बलवा खड़ा होना—बीदासरपर चढ़ाई—ठाकुरोंका कैद होना और रेखकी रकम निश्चित होकर सनदी रुक्के मिलना—शासनमें सुधार और उत्तम प्रबंध—कर्जदारोंका दावा और कर्जका फैसला ।

गङ्गासिंहजी—सात वर्षकी अवस्थामें गङ्गासिंहजी महाराजका गद्दीपर बैठना—रेजेन्सी कौन्सिल द्वारा राज्यका प्रबंध—भीतरी सुधार—शिक्षा आरंभ—बीकानेरमें नये सुधार—महाराजका राज्यकार्य्य सीखना—अकाल और महाराजका उत्तम प्रबंध—चीन युद्धमें महाराज गंगासिंहजी—राठौड़ सेनाकी चीनमें वीरता—कारोनेशनमें गङ्गासिंहजीकी विलायत यात्रा—लार्ड कर्जनका बीकानेरमें आना और गङ्गासिंहजीकी प्रशंसा करना—सन् १९०५ में कई राजाओंका बीकानेरमें मेहमान होना—बीकानेरमें प्रिन्स आव वेल्स—लार्ड मिण्टोका बीकानेरमें आना—गङ्गासिंहजीका दूसरी वार विलायतको जाना-गयाकी यात्रा—जुबिली महोत्सव । नवीन सुधार—पदवीप्रदान ।

परिशिष्ट ।

बीकानेरका भूगोल ।

भूभाग—जल और जलाशय—जल वायु—वनस्पति—पशु पक्षी और जीव जंतु ऊंटकी छप्पय—खेती और—खनिज पदार्थ—व्यापार और कारीगारी उपज रेलवे—जन संख्या और जन आचार समूह—आकार प्रकार और विचार—प्रसिद्ध—स्थान—शहर बीकानेर—हनुमानगढ़—चुरू—रेनी अनूपगढ़—भादरा—नौहर—राजगढ़—रतनगढ़—सुजानगढ़—सूरतगढ़—कोड़मदेसर—नाल—रगजनेर—कौलायतजी ।

श्रीः ।

अथ

बीकानेर राज्यका इतिहास ।

प्रथम खंड ।

हिंदुस्थानमें क्षत्रियजातिके तीन वंश और छत्तीस कुल प्रख्यात हैं । उनमेंसे राठौड़ कुल सूर्य्यवंशकी एक शाखा है । पौराणिक कथाओंसे जाना जाता है कि द्वापर युगमें अयोध्यापुरीमें बृहद्बल नामका एक राजा राज्य करता था वह महाभारतके युद्धमें अभिमन्युके हाथसे मारा गया । उससे ३० पीढ़ी पीछे राजा सुमित्र हुआ जिसका शासनसमय कलियुगके ७५० वर्ष गत अनुमान किया जाता है । सुमित्रका पुत्र विश्वराय हुआ और उसका पुत्र मल्लराय हुआ । इसकी रानीका नाम चन्द्रकला यादविनी था । मल्लरायकी युवावस्था व्यतीत होजानेपर भी उसके जब कोई सन्तान उत्पन्न न हुई तब राजा, रानी दोनोंने अपनी कुलदेवी राष्ट्रेश्वरीकी विशेष आराधना की, जिससे उनको एक पुत्र हुआ और उसका नाम राष्ट्रवर रखा गया । इसी राजा राष्ट्रवरके वंशधरमात्र आजकल राठौड़ कहलाते हैं ।

---

(१) सूर्यवंश चन्द्रवंश और अग्निवंश । पड़िहार प्रमार सोलंकी और चौहान यह जो चार क्षत्रिय यज्ञकुण्डसे उत्पन्न माने जाते हैं वही अग्निवंशी कहलाते हैं ।

(२) आदि पुरुष शेषशायी नारायणसे लेकर सुमित्रतककी पीढ़ियां भागवत और अन्यान्य पुराणोंके आधारपर लीगई हैं, सुमित्रके बादकी वंशावली भाटोंकी बहियोंमें मिलती है ।

(३) अबतक कलियुगके ५०५० वर्ष व्यतीत हुए हैं।

राष्ट्रवरके १५ पुत्र हुए, जिनमेंसे ज्येष्ठ अजयनन्द अयोध्याकी गद्दीपर बैठा । अजयनन्दके दो पुत्र हुए, जिनमें ज्येष्ठ कूर्मसेन तो पिताके राज्यसिंहासनका अधिकारी हुआ और कनिष्ठ कनकसेनने कनौजमें अपनी पृथक् राजधानी स्थापित की ।

राजा कनकसेनके ११ पुत्र हुए जिनमें सबसे बड़ा ध्वजदेव कनौज राज्यका अधिकारी हुआ । ध्वजदेवके बाद उसका पुत्र रणधीर गद्दीपर बैठा और उसके बाद उसका पुत्र कमध्वज कनौज राज्यका मालिक हुआ । यह राजा बड़ा प्रतापी हुआ, इसने माळ· वेके राजा धूम्रकेतुको परास्त करके समस्त हिन्दुस्थानमें अपना नाम विख्यात कर दिया । इस कमध्वजके समयसे कनौज राज्यकी उन्नति होने लगी इसीलिये कमध्वज आम तौरसे राठौड़ोंका " वंश विरद " बखान किया जाता है ।

छप्पय ।

जिनें भूप कमध्वज्ज देवि पंखनि वरदाइक ।
जिनें भूप कमध्वज्ज नगर कुंकुम नर नाइक ॥
जिनें भूप कमध्वज्ज केतु धूमर क्षयकारिय ।
काम रुंध्र धर:क्रोध सबल खल युध संहारिय ॥

---

१ दोहा–संवत आठ पचहत्तरै, शाकन्दर पंडवेश ।
कनकसेन कनवज्ज पुर, निरमित कियौ नरेश ॥

इस दोहेसे स्पष्ट होता है कि राजा कनकसेनने युधिष्ठिर शक ८[illegible] में कनौज नगरकी नीव डाली. किन्तु यह बात सर्वथा मान्य नहीं हो सकती क्योंकि कनौज नगर असलमें पड़िहारोंकी राजधानी थी और विक्रमी संवत् ८००, ९०० तकके ऐसे शिला लेख पाये जा चुके हैं जिनसे कनौज पड़िहार वंशकी पुरानी राजधानी साबित होती है, संभव है कि कनकसेनने पड़िहारोंसे कनौजका राज्य लिया हो और तब युधिष्ठिर शक नहीं 'विक्रमी शक होना ठीक है कवियोंने अन्योक्तिसे विक्रमीका युधिष्ठिर शक लिख दिया ।

(२) मालूम होता है, कनौजका असली नाम कुंकुमनगर ही है और राजा कनकसेन राठौड़के समयसे कनौज कहलाया ।

जिन कमध देश खट जीत जय, कलह जित्त अव वश कारिय ॥
रिनधीर तनय जय पाय रिन, अवनि सुयश तेहि विस्तरिय ॥

कमध्वजके २४ पुत्र हुए जिनमेंसे ज्येष्ठ परधाम राज्यका स्वामी हुआ। इसका रंगध्वज बड़े दल बलके साथ इन्द्रप्रस्थ पर चढ़ गया और वहांके राजाको परास्तकर उसने इन्द्रप्रस्थ अपने कब्जेमें कर लिया। रंगध्वजके बाद रत्नकेतु भावध्वज, आनन्ददेव, सेसदेव, समरनन्द और आसध्वज एकके बाद दूसरे गद्दीपर बैठे। आसध्वजने पश्चिमकी तरफ चढ़ाई करके मुकुन्दसूर मोरीको मारा और मेदपाठ देशपर अपना कब्जा कर लिया, किन्तु दो वर्षके बाद ही मेदपाठ देश इसके हाथसे निकल गया।

आसध्वजसे २१ वीं पीढ़ीमें राजा मयूरसेन बड़ा प्रतापी राजा हुआ। बत्तीस राजा इसके तावेमें थे। राज्यकी ख्यातमें इस राजाकी तारीफमें निम्न श्लोक लिखे हैं जो किसी प्रशस्तिके आवांश मालूम होते हैं–

श्लोक।

श्रीमद्वैराष्ट्रदेशे तिलकपुरवरे पत्तने भूनरेशो
द्वात्रिंशद्भूमिपटला मणिमुकुटधरा यस्य सेव्या ख्यात्।
एन स्वानि यान्मम् ममनत सदा चान्यदेशाधिपानाम्
सर्वेषाम् भूपतीनाम् सिरमुकुटसेव्यौ ॥

मयूरसेनसे ३४ पीढ़ी पीछे राजा वासुदेव ऊर्फ रामदेव हुआ। इसके ३१ भाई और थे जिन सबको ध्वंस करके यह स्वयं पिताकी गद्दीपर बैठा। इसने कछवाहोंसे नरवरका राज्य छीन लिया और उन्हें रोहितास्वके किलेकी बैठक दी। इसके तीन वर्ष बाद उसने बनारसकी तराईके जिले (लखनऊ) पर कब्जा किया, मालवेपर अपना अधिकार किया और फिर शिवालक पहाड़ोंकी तरफ ससैन्य यात्रा की। वहांके सब छोटे २ राजाओंने रामदेवकी सेवा स्वीकार की, केवल कमाऊँके राजाने लोहा लिया. किन्तु अन्तमें उसे भी राठौड़

(१) अशुद्ध है।

सेनाके सामने नीचा देखना पड़ा। इसके बाद रामदेवने जम्बूको अपने कब्जेमें करते हुए दरियाय सोर तक राठौड़ राज्यकी हद बांधी (मुताबिक ख्यात) तवारीख फरिश्तामें लिखा है, बंगाल नरहर वाला आदि सब देश राजा रामदेवके ताबेमें थे उसने २४ वर्ष राज्य किया। कहा जाता है कि इसके एक पुत्र नरहर रायने कालिंजरका किला बनवाया था।

राजा रामदेवके बल पौरुष और वीरताके विषयमें अंग्रेजोंके लिखे हुए कई एक इतिहासोंमें उल्लेख पाया जाता है। उसके राज्य कालमें हिन्दुस्तानपर मुसल्मानी हमले होने लगे थे और उसने सरहद्दपर कई एक यवन आक्रमणकारियोंको परास्त कर उलटा फेर दिया था जिसकी बाबत ख्यातमें निम्न छप्पय दर्ज है—

छप्पय।

प्रथम चीन पातिशाह ग्रहिव खाकान युद्धकर
कैकुवाद ईरान ईस किंतालह बसुधर
तहां साह तूरान सबल ग्रहिये निज सम्मर
कैसर रूम ग्रहेव इला राखी कथ अम्मर
समर विजैत वसुदेव सुव वसु यहु देश जीते सकल
किय राज राम नरियंद कल उदय अस्त पर्य्यन्त इल.

राजा रामदेवके बाद कई पीढ़ी पीछे नाथदेव[2], ज्ञानपति, तुंगनाथ, भरथ और श्रीपुंज आदि राजा एकके बाद दूसरे कनौजकी गद्दीपर

(१) कश्मीरी ब्राह्मण लाल भट कृत कोई रामदेव दिग्विजय नामक संस्कृत ग्रंथ काशीमें बतलाया जाता है।

(२)

नाम राजा	जन्म सम्वत	पाट संवत्	मृत्यु संवत्
नाथदेव	८८९	९११	९३४
ज्ञानपति	९१०	९३४	९९२
तुङ्गनाथ	९३२	९९२	९२३
भरथ	९६३	९२३	१०२४
श्रीपुञ्ज	९९९	१०२४	१०४२

बैठे । राजा श्रीपुंजसे राठौड़की १३ शाखाओंका विस्तार हुआ । पुष्करणा ब्राह्मणोंकी उत्पत्ति नामक एक मुद्रित पुस्तकमें लिखा है कि जब वे सिंधवी राक्षसोंसे अत्यन्त आक्रान्त हुए तब राजा श्रीपुंजने ही उनको आश्रय दिया था ।

श्रीपुंजके १३ पुत्रोंके नाम और उनसे राठौड़ वंशकी १३ शाखा-ओंके विस्तारकी सूची–

१ धर्म बंभु...	दानेश्वरा
२ भाणवदीप	अभैपुरा
३ वीरदचन्द्र	कपालिया
४ अमरविजय	कुरहावा
५ सजनविनोद	जलखेड़िया
६ पद्म ...	बुगलाणा
७ अहरदेव...	अहर
८ वासुदेव ...	पारक
९ उग्रप्रभाव	चन्देल
१० मणिमुकुट ...	वीरपुरा
११ भरथ ...	बरियाव
१२ कृपाचन्द ...	खेरोदा
१३ चन्द ...	जैवंत

जोधपुर बीकानेर राज दाने-श्वरा शाखामें है किन्तु कहीं २ इनको जलखेड़िया भी कहा है,

(२) उग्रप्रभावसे चन्देल और चन्दसे जैवंत शाखा होनेमें संदेह है अनुमान है कि नामोंका उलट फेर होगया है उग्रप्रभावसे जैवंत और चन्दसे चन्देल होना ठीक है,

श्रीपुंजके जेष्ठ पुत्र धर्मबंभुका जन्म संवत् १०२३ है । वह संवत् १०४८ में पाट बैठा और संवत् १०७१ में सुरधाम पधारा । उसके बाद अभयचंद राजा हुआ जो सं० १०४१ में जन्मा और सं १०८७ में सुरधाम पधारा । इसका बेटा अजयचंद गद्दीपर बैठा जो संवत् १०६० में जन्मा. और सं० १११५ में स्वर्गवासी हुआ । अजयका पुत्र विजयपाल सं० १०८६ में जन्मा १११५ में पाट बैठा और ११३२ में सुरधाम पधारा । विजयपालका पुत्र जयचंद हुआ जो ११०४ में जन्मा थी ।

(१) यह तो जगत्प्रसिद्ध निश्चित बात है कि राजा जैचन्द राठौड़ ओर.

यह राठौड़ कुलदीपक राजा जयचंद संवत् ११३२ में कनौजकी गद्दीपर बैठा। उस समय क्षत्रियोंकी राजश्री निर्वाणोन्मुख दीपककी भाँति द्विगुणित प्रकाशसे जाज्वल्यमान होरही थी । महमूदगजनवीके हमले होजानेसे दिल्ली अजमेर और कनौजके राजाओंने परस्पर संधिबंधन कर लिया था । इसीसे फिर कोई मुसलमानी फौज सिंधके इस पार आनेकी हिम्मत न कर सकी किन्तु जब दिल्लीका तोर राजा अनंगपाल पृथ्वीराज चौहाण अजमेरवालेको अपना राज्य देकर तपस्याको चला गया और पृथ्वीराजने दो राज्योंका अधिकार पाकर राजा जयचंदके अधिकारों पर हस्ताक्षेप करना आरंभ किया तब पुराना संधि बंधन टूट गया और जयचंद और पृथ्वीराज एक दूसरके प्रबल शत्रु होगये ।

परिणाम यह हुआ कि राजा जयचंदने अपने प्रभुत्व स्थापनकी इच्छासे संवत् ११४० में एक राजसूय यज्ञका अनुष्ठान किया उस यज्ञमें जयचंदका निमंत्रण पाकर हिन्दुस्थान भरके और सब राजा तो आये पर दिल्लीपति पृथ्वीराज और चित्तौड़पति राणा समरसी दोनों न आये, तब जयचंदने पृथ्वीराजकी एक स्वर्ण प्रतिमा यज्ञशालाके दरवाजेपर प्रतिहारीके स्थानपर स्थापित करवा दी । उसी यज्ञमें जयचंदने अपनी बेटी संयोगिताका स्वयंवर रचा था । संयोगिता जयमाल लेकर सभा मंडपमें आई तो उसने अन्य सब राजाओंको उलंघन कर पृथ्वीराजकी स्वर्ण प्रतिमापर जयमाल डाल दी । जब यह समाचार पृथ्वीराजको मिला तो वह ११४० सवारोंको साथ लेकर छद्मवेषसे कनौजमें आया और संयोगिताको लेकर दिल्लीको चला गया ।

दिल्लीपति पृथ्वीराज समकालीन थे । पृथ्वीराजका जन्म संवत् रासोमें १११५ अनन्द शक लिखा है । मालूम होता है यह भी अनन्द संवत है । जो प्रचलित विक्रमी संवत्से ९१ वर्ष कम होता है--(विवरणके लिये देखो रासो प्र. भा. प्र. समय)

इस मानहानिकारक घटनासे राजा जयचंदके हृदयमें और भी गहरी चोट लगी। किन्तु जबतक संयोगिता रही तबतक उसने पृथ्वीराजका कोई स्पष्ट अनिष्ट न किया। संवत् ११५१ में जब दैवात् संयोगिताकी मृत्यु हो गई और राजा पृथ्वीराज उसके वियोगमें विक्षिप्त होकर अपनी फौज और प्रजाको आप उजाड़ने लगा तब समय पाकर जयचंदने शहाबुद्दीन गोरीको बुला चाहुआ राज्यको ध्वंस कराकर अपने वैरका बदला लिया।

किन्तु "कलियुग नहीं करयुग है। इस हाथ दे उस हाथ ले" एक साल भी न बीतने पाया कि मुसलमानी लशकरने कनौजको भी घेर लिया। लड़ाईमें राजा जयचंद कुतबुद्दीन ऐबक सिपहसालार लशकरके तीरसे मारा गया और कनौजपर मुसलमानोंका अधिकार होगया।

दोहा।

अष्ट शाह नीलाव तट, जे न ग्रहे कर जंग।
सबल भूप बिजैपाल सुभ, पाय बिरद दल पंग॥

ख्यातमें लिखा है कि जयचंदने रूमके परवेजशाह ईरानके बादशाह बैमन दाराके भाई इस्पहानके सूबेदार शेरशाह, हबसके हुसेन, तूरानके तरहम बला सलीम॰ शाह ईराकी और बलखके बबर शाह आदि कई मुसलमान सिपहसालारोंको शिकस्त दी थी। राजा जयचंदका विशेष वर्णन "जैचंद यशचान्द्रिका" और जैमयंक नामक दो ग्रंथोंमें है जैसा कि ख्यातमें एक दोहा लिखा है।

दोहा—जैमयंक यशचन्द्रिका, पुनि जैचंद प्रकाश।
कवि मधुकर केदार किय, जग नरतग गुन जास॥

राजा जयचंदका देहान्त होनेपर उसका द्वितीय पुत्र वरदाईसेन कनौजकी गद्दीपर बैठा और उसने दिल्लीके मुसलमान सम्राट्की

(१) उक्त दोनों ग्रंथोंका पता नहीं परन्तु ग्रन्थकर्ताओंके नाम पृथ्वीराज रासोमें आये हैं, जो कि शहाबुद्दीनकी सभाके कवि बतलाये गये हैं।

सेवकाई स्वीकार की। वरदाईसेनका जन्म संवत् ११६१ और उसके परम धाम पधारनेका संवत् १२०० लिखा है।

वरदाइसेनके बाद उसका पुत्र सेतराम गद्दीपर बैठा । इसके समयम राठौड़ों और मुसलमानोंसे फिर झगड़ा हुआ जिससे मुसलमानोंने सारा कनौज राज्य अपने कब्जेमें कर लिया । सेतरामके पुत्र सियाजीको केवल २४००००० की जागीरै मिली थी। राव सियाजी संवत् १२१५ में गद्दीपर बैठा था । वह १० वर्ष राज्य करके संवत् १२२५ में अपने पुत्र यशवंतको राज्यका भार देकर आप श्रीद्वारिकाजीकी तीर्थयात्रा करने निकला ।

इस समय यद्यपि मुसलमान लोग दिल्ली और कनौजके राज्यों-पर अधिकार करके अपनेको हिंदुस्थानका सम्राट् समझते थे परन्तु उनका सार्वभौमाधिकार नहीं था. वरन् सारे देशमें एक प्रकारकी अराजकता सी फैल गई थी । इस समय सिंधुदेशमें लाखा फूलाणीका आतंक जमा हुआ था और पाटनमें मूलराज सौलंकी राज्य करता था । इन दोनोंमें परस्पर घोर विरोधभाव था । लाखा फूलाणी सौलंकियोंके राज्यको दबाता जाता था ।

जब राय (उर्फ सिद्धसेन) पाटनमें पहुँचे तो मूलराजने इनसे सहायता चाही । इसपर जब सियाजी द्वारिकाजीसे वापिस आये तो इन्होंने सौलंकी सेनाके साथ लाखा फूलाणीका मुकाबिला किया और पहले ही मोरचेमें उसे अपने हाथसे मारा । इस अमूल्य सेवा-के उपहारमें मूलराजने अपनी बेटी सियाजीको व्याह दी । इस प्रकार तीर्थयात्रा समाप्त कर नयी दुलाहिनसहित सियाजी सकुशल कनौज जा पहुँचे ।

इस सौलंकिनी रानीसे सियाजीको आस्तान, सोनगजी और अजजी तीन बेटे हुए । संवत् १२४३ में जब सियाजीका देहान्त

(१) इस जागीरके साथमें सियाजीको बैठक कहांकी मिली सो कुछ नहीं लिखा है।

(२) लाखा फूलाजी एक इतिहासप्रसिद्ध पुरुष है इसका विशेष बर्णन मुसलमान इतिहासमें मिलता है।

होगया और राज्यासीन इनके बडे पुत्रने आस्तान आदि तीनों भाइयोंको उचित जीविका न दी तो वे अपनी ननिहालकी तरफ चले। वहाँ इनको अपेक्षित आश्वासन और सहायता प्राप्त हुई जिसके द्वारा सोनगजीने तो गुजरातमें ईडरकी राजधानी स्थापित की और आस्तानजीने पालीके ब्राह्मणोंको बलहीन करके मारवाड़में राठौड़ राज्यका बीज बोया। यह बात संवत् १२४४ की है।

२ खेड़में उस समय चक्रसेल गोहिल राज्य करता था और डाभी राजपूत राज्यके कार्य्यकर्त्ता थे। डाभी और गोहिलोंमें कुछ वंश-परम्परासे असमंजस चला आता था, यह देखकर आस्तानजीने डाभी लोगोंका पक्ष समर्थन किया और उन्हींकी सहायतासे उन्होंने गोहिलोंका सर्वनाश कर दिया। फिर कुछ दिनोंके बाद डाभियोंको भी ध्वंस करके समस्त खेड़ राज्यको आस्तानजीने अपने कब्जेमें कर लिया। आस्तानजीका देहान्त संवत् १२७० में हुआ।

आस्तानजीके छ:पुत्र थे उनमेंसे ज्येष्ठ धूहड़जी रावकी पदवीसे अलंकृत होकर पिताके उत्तराधिकारी हुए। धूहड़जीने पड़िहार थिरपालको मारकर मंडोरपर अधिकार कर लिया किन्तु दो ही महीने बाद राठौड़ोंका अधिकार मंडोरपरसे उठ गया केवल पड़िहारोंकी कुल पूज्य देवी नागणेचांजीकी मूर्ति राठौड़ोंके हाथ रही।

धूहड़जीके पाँच पुत्र हुए-रायपाल, कीर्तिसेन, बंभ, पृथ्वीपाल और बीकमसी। सं० १२८७ में धूहड़की मृत्युके पश्चात् रायपाल पिताकी गद्दीपर बैठा। इसने ५०० प्रमारोंको मारकर वाढ़मेरके

---

(१) धूहड़जीके एक भाईका नाम धांधल था धांधलके दो बेटे हुए ऊदल और आसल। ऊदलके दो पुत्र हुए बूड़ो और पाबूजी। यह पाबूजी राठौड़ कुलमें एक प्रसिद्ध वीर और पूज्य पुरुष मानाजाता है। वर्तमान बीकानेर नरेश श्री गंगासिंहजीने पाबूजीके नामका एक मन्दिर भी बनवाया है।

(२) नागणेचांजीकी प्रतिमा चांदीकी है। इनकी स्थापना आजकल बीकानेरमें है, बीकाजी स्वयं इस मूर्तिको जोधपुरसे अपने साथ लाये थे।

किलेको अपने कब्जेमें लिया और सं० १२९१ में जैसलमेरकी सीमा-पर आक्रमण कर बुधचंद[1] भाटीको वहांसे पकड़ लाया और ८४ गांव भाटियोंके दबा लिये ।

राव रायपालजीके १० पुत्र थे—कनकजी ऊर्फ १ कन्हजी २ केलण ३ राजसी ४ मोहण[2] ५ महिपाल ६ सिवराज ७ सोडल ८ वल्लू ९ रामसिंह और १० डांगी[3] । रायपालजीकी मृत्युके पश्चात् कन्ह उसका उत्तराधिकारी हुआ । कन्हका पुत्र जालणसी हुआ और जालणसीके फिटकजी खोक्खरजी तथा सीमालजी तीन पुत्र हुए ।

छाड़ोजी २० वर्षकी अवस्थामें संवत् १३४० में खेड़ राज्यका स्वामी हुआ । इसने उसी वर्ष १२००० फौजके साथ जैसलमेरपर चढ़ाई करके गांवको लूटा और उसी रास्तेसे जाकर अमरकोटपर चढ़ाई की । अमरकोटके किलेका मालिक भीनमाल सौनगरा था

---

(१) इस बुधचन्द भाटीको राठौड़ोंने एक चारणकी लड़की ब्याह कर उसे बरबस अपना चारण बनाया था । इसकी औलादके चारण रोहड़िया चारण कहलाते हैं, वे जोधपुरमें अधिक हैं । रोहड़िया चारणोंका नख भी बुद्धभाटी है ।

(२) राजकी ख्यातमें दर्ज है कि मोहणजीसे ओसवाल महाजनोंकी उत्पत्ति हुई ।

(३) डांगीजीके विषयमें ख्यातमें तो कुछ नहीं लिखा पर बीकानेर राज्यके दमामी अपनेको डांगीजीकी औलाद बतलाते हैं । उनका कथन है कि जैसे राठौड़ोंने बुधचन्द भाटीको पकड़ कर चारण बना लिया था वैसे ही भाटी भी डांगीजीको पकड़ ले गये थे और उन्हें अपना नगारची बनाया था किन्तु छाड़ोजीने जब जैसलमेरपर हमला किया तो वह डांगीजीको छुड़ा लाये और उन्हे अपनी बांह देकर निज कुलका नगारची रहनेको आग्रह किया । डांगीजीके वंशधर दमामियोंको अभी बीकानेर राज्यसे पट्टा है ।

स्मरण रहे कि जंगी राठौर राजपूत भी हैं । बुन्देलखंडमें दांगी कहलाते हैं और डा के स्थानमें दा का उच्चारणका केवल देशभाषाका हेरफेर समझना चाहिये । ये लोग राज छत्रपूर नदुआके जागीरदार हैं । सम्भव है कि ये लोग डांगाजीके मीरासी होनेसे पहलेकी औलादके हों ।

उसने राठौड़ सेनाको परास्त करके भगा दिया। छाड़ौजी इसी लडाईमें काम आया।

छाड़ौजीके बाद उसका बड़ा पुत्र तीड़ौजी राज्यका मालिक हुआ। उसने संवत् १३५८ में गद्दीपर बैठते ही पिताके वैरका बदला लेनेके लिये भीनमालपर आक्रमण किया। भीनमालका स्वामी सावंतसिंह राठौड़ सेनाके सामने आया पर एक ही मुकाबलेमें सेनासहित भाग निकला। तीड़ौजीने भीनमाल नगर और वहांके राजमहलको लूट लिया। उसी लूटमें सवली नामक सावंतजीकी एक स्त्री छाड़ौजीके हाथ लगी। वह अत्यंत स्वरूपवती थी, इसलिये छाड़ौजीने उसे निज भार्या होनेको कहा। उसने यह बात इस शर्तपर स्वीकार की कि उसके गर्भसे जो पुत्र जन्मे वही राज्यका उत्तराधिकारी हो।

सवलीके औरससे कानड़दे नामका एक पुत्र जन्मा। इसी समय सिवानेके चौहानोंपर मुसलमानी सेनाने आक्रमण किया। निदान छाड़ौजी चौहानोंकी मददको गया और कानड़दे नाबालिग था इसलिये राज्यका भार सलखोजीको सौंप गया। दैवात् सिवानेकी लड़ाईमें राव छाड़ौजी मारा गया। उसी विजयी सेनामेंसे एक मुसलमान सेनापति खेड़ेपर चढ़ आया और सलखोजीको गिरफतार कर गुजरातकी तरफ चला गया।

छाड़ौजीके पाटवी कुमार सलखोजीके चार पुत्र थे—मल्लीनाथजी, जयतजी, बीरमजी और सांवतजी। अस्तु छाड़ौजीकी प्रतिज्ञानुसार कानड़दे तो खेड़ राज्यका प्रधान शासक हुआ और उक्त सलखोजीके भाई चारों पुत्र कानड़देकी आज्ञामें राजकर्मचारियोंका कर्तव्य प्रतिपालन करने लगे.

उस समय नागौर और मंडोरमें दोनों जगह मुसलमानी अमलदारी थी। इन मुसलमान हाकिमोंने मरुभूमिमें राठौड़ोंका अधिक विस्तार होता हुआ देख कर दिल्लीको समाचार लिख भेजा। इसपर वहांसे एक फौज चढ़ आई। उस फौजके सिपहसालारसे कानड़देने संधिका प्रस्ताव करके उसे दिलासामें ठहरा रखा और इधर गुप्त रीतिसे उसके मार डालनेका

प्रबंध किया। मल्लीनाथजी अपने भाग्योदयका यह संयोग पाकर मुसलमान सूबेदारसे मिल गया और उसे गुप्त षड्यंत्रका सारा भेद बतलाकर चुपकेसे चले जानेकी सलाह दी। उसने भी मल्लीनाथजीकी बात मानकर दिल्लीका रास्ता लिया पीछे.२ मल्लीनाथजी भी दिल्ली पहुँचे और उसी हाकिमकी सहायतासे उन्होंने बादशाहीमें अपना स्वत्व पानेकी फरियाद की। इस पर बादशाहने मल्लीनाथको एक शहजोर सेना मददके लिये देकर बिदा किया।

जबतक मल्लीनाथ दिल्लीसे लौटकर आये तबतक कानड़देव समाप्त हो चुका था, उसका पुत्र त्रिभुवनजी[1] राज्य करता था मल्लीनाथजीने उसे गद्दीसे उतार कर खेड़पर अपना अधिकार कर लिया और उसी सेनाकी सहायतासे उसने सिवानेको फतहकर वहांका राज्य जयतमालको दे दिया। खेड़से सात कोस पर गुड़ौकी जागीर वीरमजीको मिली २००, सवार ताबेमें थे।

कहा जा चुका है कि सिवाने पर पहले जोहियोंका अधिकार था। जब सिवानेका किला मुसलमानी सेनाके हाथ लगा तो जोहिया लोग जिधर तिधर तीन तेरह होकर जीविका उपार्जनके लिये देश विदेश फिरने लगे। मद्दू, लक्खू अम्बर, देयाल ये चार जोहिया गुजरातकी तरफसे खूब धनकमा लाये और एक सुन्दरी स्त्री भी लाये. गुजरातसे आते समय जब इनका मुकाम खास खेड़में था तो मल्लीनाथजीके बेटे जगमालने स्त्रीके सौन्दर्य्यकी चरचा सुनी। उसने जोहियोंका सर्व नाश कर उनका धन और स्त्री हरण करना चाहा किन्तु इस बातकी जोहियोंको भी खबर हो गई थी। इसलिये वे वहाँसे भागकर गुड़ामें वीरमजीकी शरणमें जा रहे थे। अस्तु जगमालने वीरमजीपर भी हमला करना चाहा किन्तु मल्लीनाथने अपने पुत्रको ऐसा न करने दिया और वीरमजीके पास स्वयं जाकर कहा कि परस्पर वंश विरोध

[1] राज्यच्युत त्रिभुवनजीको ४ गांवोंका पट्टा मिला था। त्रिभुवनजीका पुत्र ऊदो था जिसकी सन्तानके ऊदावत राठौड़ कहलाते हैं। वे आज कल बीकानेर राज्यान्तर्गत बीदावाटी कानासर और बीदासार आदिमें वसते और किसानी करते हैं।

फैलाना अच्छा नहीं इस हेतु तुम कहीं अन्यत्र अपना स्वतंत्र ठिकाना जमा लो तो अच्छा हो ।

वीरमजी बड़े भाईकी आज्ञा शिरोधार्य्य करके जोहियोंकी सीमामें पहुँचे । उन लोगोंने पूर्ण कृतज्ञता-पूर्वक वीरमजीको स्थान दिया और इन्हींकी सहायतासे उन्होंने चूड़ारावको मार कर सिवाने पर फिर दखल कर लिया; किन्तु ज्यों ज्यों राठौड़ोंका जोर बढ़ने लगा त्यों त्यों वीरमजी पक्षपातसे जोहियोंका अनादर करने लगे । पहले तो जोहिया लोग वीरमजीकी कृतज्ञतामें दबे रहनेके कारण कुछ न बोले पर जब उन्होंने देखा कि राठौड़ प्रबल होकर हमारा सर्वनाश करनेपर कटिबद्ध हैं तो दश पांच जोहिया सरदारोंने एक दिन वीर[1] धौल गांवके पास वीरमजीको रास्ते चलते जा घेरा और अचानक आक्रमण करके उन्हें मार डाला ।

वीरमजीका पुत्र चौड़जी उस समय गुढ़ेमें था । जब उसने पिताकी मृत्युका समाचार पाया तो वह अपनेको निराश्रित अवस्थामें देखकर तुरन्त मल्लीनाथजीसे मिलने चला ।

मारवाड़ और बीकानेरमें मल्लीनाथजी एक सिद्धकी भांति पूजे जाते हैं । वास्तवमें वह एक अतीव बुद्धिविचक्षण और दूरदर्शी पुरुष थे ।उन्होंने चौड़ेजीकी वीराकृति देखते ही उनको कण्ठसे लगा लिया और हँसकर कहा, मुझे निश्चय हो गया कि " वीरमरा गढ़े और मालेरा मढ़े" तू राज्य करेगा और मेरी सन्तानवाले साधारण कृषक होंगे ।

मल्लीनाथने चौड़ेजीको कुछ आर्थिक एवं सैनिक सहायता देकर गुजरातकी तरफ लूट मार करनेकी सलाह दी । दैवात् चौड़ेजीका पहला वार रास्ते चलते हुए शाहीखजाने और घोड़ोंपर हुआ, इससे मल्लीनाथ अत्यंत अप्रसन्न हुए क्योंकि वह बादशाहसे वैर बिसाहना

---

(१) वीरधवल एक सोलंकी क्षत्रिय होगया है उसीके नामपर यह गांव बसा था । वीरधवल संवत् १२०० में हुआ था । उसकी प्रशंसाका एक संस्कृत ग्रन्थ भी जसलमेरके पुस्तकालयमें मौजूद है ।

अच्छा नहीं समझते थे, किंतु चौड़ेजीने इसकी कुछ परवाह न की। वह मल्लीनाथजीसे मिलने भी न गया सीधा इन्दा पड़िहारके पास मंडोर पहुँचा।

इन दिनों मंडोरका राजशासन मुसलमानोंके हाथमें चला गया था। अस्तु चौड़ेजीने राज्यच्युत पड़िहारोंसे मेल करके रात्रिके समय मंडोरके किलेपर हमला किया और मुसलमानोंको बाल बच्चों सहित संहार कर किलेपर अपना अधिकार कर लिया। जब मल्लीनाथजीने यह समाचार सुना तो वह स्वयं मंडोरको दौड़े आये और अपने हाथसे चौड़ेजीको राजतिलक किया।

इसके दूसरे वर्ष संवत् १४६५ में चौड़ेजीने नागौर पर हमला किया और वहाँके मुसलमान हाकिमको मारकर नागौरको अपने कब्जेमें कर लिया। नागौरके हाकिमका लड़का महम्मद फीरोज मुलतानके नवाब सलीमकी शरणमें गया। वहांसे सलीमने चौदह हजार फौज उसके साथ कर दी। इधर भाटियोंकी आंखोंमें राठौडोंका विस्तार खटकता ही था इसलिये आसपासके भाटी सरदार भी फीरोजके सहायक हो गये। निदान सं० १४७५ में नागौरके पास मुसलमान और राठौड़ोंकी बड़ी लड़ाई हुई जिसमें चौड़ाजी काम आया और नागौर पर फिरसे मुसलमानी कब्जा होगया।

चौड़ेजीके १४ पुत्र थे--सत्तोजी, रिडमलजी, अड़कमलजी, रणधीरजी, सहसमलजी, अरजनजी, भीमजी, राजसी, रामजी, पूनाजी, लूभोजी, सुरतान और जैसिंह। चौड़ेजीकी एक बेटी भी थी जो मेवाड़के राणा लाखाको व्याही गई थी, वह उसी राणा मोकलकी जननी थी, जो लाखाके बाद मेवाड़की गद्दी पर बैठा।

जिस समय चौड़ेजी नागौरकी लड़ाईमें काम आया उस समय रिडमलजी मेवाड़में थे और सत्तोजी मंडोरमें मौजूद थे। इस लिये सब सरदारोंने सत्तोजीको मंडोरकी गद्दी पर बिठाकर राजतिलक कर दिया। जब रिडमलजी मंडोरमें आये तो इनके लिये साधारण जागीरका पट्टा और भांडासरकी बैठक बतलाई गई। इन्होंने उसे स्वीकार करलिया और चाड़ासरमें रहकर अपनी माताकी आज्ञा-

नुसार पिताके नामपर एक ताल खुदवाया । इस अरसेमें इनके एक भाई कानड़दे जो जाँगलूमें रहते थे निःसन्तान परमधामको प्राप्त होगये । उसकी माने रिडमलजीको गोद ले लिया । मोहिलोंकी बेटी थी इस कारण आसपासके बहुतसे मोहिल सरदार रिडमलजीके सहायक होगये ।

तब तक क्या हुआ कि मंडोरके राज्याधिकारी सत्तोजीके पुत्र नरवद और राज्यके प्रधान कर्मचारी रणधीरके पुत्रोंमें परस्पर असमंजस होगया जिसका परिणाम यह हुआ कि रणधीर रिडमलजी-से आ मिला । रणधीरका सहारा पाकर रिडमलजीने कुछ फौज मेवाड़से मँगाई और कुछ मोहिलोंकी जमात लेकर मंडोरपर आक्रमण किया । सत्तोजी भी अपने स्वत्वकी रक्षाके लिये मैदानमें आया । एक बड़ी लड़ाईके बाद सत्तोजी रणभूमिमें काम आया । उसका पुत्र नरवद नेत्रहीन होकर मेवाड़ राज्यकी शरणमें रहने लगा और मंडोरपर रिडमलजीका अधिकार होगया । राठौड़ कुलका नेतृत्व प्राप्त करते ही रिडमलजीने पहले नाडौलके सौ नगरोंपर हमला किया और वह भूमि अपने राज्यमें मिला ली । इसके बाद उसने पिताका वैर लेनेकी इच्छासे जैसलमेर पर आक्रमण किया । जैसल-मेरे में उस समय रावल लखमलसी राज्य करता था । एक लड़ाई होनेके बाद जब भाटियोंने फतहकी कोई उम्मेद न देखी तो इन्होंने संधि कर ली ।

जैसलमेरकी मुहिमसे लौटकर रिडमलजी मंडोर आये ही थे कि मेवाड़ राज्यमें एक अत्यंत जघन्य काण्ड होगया । राणा मोकलजीका चाचौ नामका एक दासीपुत्र था । उसने मेवाड़ प्रमारकी सहायतासे राणाजीको मारकर राज्यपर अपना अधिकार कर लिया और मोकल-के शिशु कुमार कुंभाजीको भी उसने मारना चाहा । यह समाचार पाकर रिडमलजी चित्तौड़को दौड़े गये और निज राठौड़ सेनाके बलसे इन्होंने चाचौ तथा उसके सहायकोंको मारकर कुंभाजीको मेवा-ड़के सिंहासन पर बिठाया । राणा कुंभा नाबालिग थे इस हेतु उनकी माताके आग्रहसे रिडमलजी स्वयं मेवाड़ राज्यका शासन प्रबन्ध

करनेके लिये विवश हुए। जब कुंभाजी वय:प्राप्त हुए तो उन्हें स्वतंत्र शासन करनेकी इच्छा हुई । इधर रिडमलजीके शत्रुओंने मौका पाकर राणाके कान भरे कि वह दिन शीघ्र आनेवाला है, कि मेवाड़पर राठौड़ोंका अधिकार होजाय।यह वहम दिलमें होतेही कुंभाजीका दिल रिडमलजीकी तरफसे फिर गया और उसकी आज्ञानुसार एक दिन आधीरातके समय अठारह आदमियोंने रिडमलजीको महलोंके अंदर सोतेमें ही मारडाला। रावरिडमलजीके चौबीस पुत्र थे। योधाजी, कांधलजी, वैरीसाल, चांपौ, हद्दौ, सकतौ, जग्गौ, अक्खौ, लक्खौ, डूंगर, पत्तौ, अजौ, वालौ, साहू, हाथौ, रूपौ, भांडण, वैरौ, भाखर, अड़माल, ऊधौरण, सायर, करण और मंडलौ ।

जिस समय रिडमलजी मारे गये उस समय जोधाजी और कांधलजी आदि ये सब भाई कोटके बाहर डेरे डाले पड़े हुए थे। रिडमलजीकी मृत्युका कुहराम सुनकर एक नगारचीने नफीरीके स्वर द्वारा जोधाजीको इशारा दिया कि "जोधा भाज सकै तो भाज थारौ रिडमल मारियौ" सहनाईके स्वरकी सूचनाको समझते ही सब राठौड़ अपने अपने घोडोंपर सवार होकर जहां तहां चल दिये । पीछेसे सीसौदिया सेनाने धावा किया, पर लड़ते झगड़ते कटते मरते तीन सौ सवारोंके साथ जोधाजी मेवाड़की सीमाको पार करके मारवाड़की सीमामें आ गये। जोधाजीका इस प्रकारसे बच भागना राणा कुंभाजीके लिये अत्यंत व्याकुलताका कारण हुआ । उसे इस विचारने बेचैन कर दिया कि शेष शत्रु कहीं ऐसे प्रबल न हो जायँ कि एक दिन वह मुझे भी भस्म करनेमें समर्थ हों, इस कारण राणा कुंभाजीने जोधाका सर्व नाश करनेके यावत् उपाय किये किन्तु मारनेवालेसे बचानेवाला बड़ा है, जोधाजीने कई वर्ष पर्य्यन्त यहांतक आपत्ति झेली कि उन्हें केवल घास पात खाकर ही जीवन निर्वाह करना पड़ा।किन्तु धीर, वीर और साहसी पुरुषोंका ईश्वर सदा सहायक होता है. अंतमें जोधाजीकी जय हुई और राणाको अपनी ही राजसीमामें हाथ पैर पटक कर चुप रह जाना पड़ा। जोधाजीने मंडौरमें राजधानी स्थापित करनेके

बाद जब देखा कि यह स्थान सतत शत्रुओंके आक्रमणसे बचनेके लिये उपयुक्त नहीं है तो उसने संवत् १५१५ ज्येष्ठ वदी ११ को जोधगढ़की नींव डाली और अपने नामसे जोधपुर शहर भी बसाया।

जोधाजीके १७ पुत्र थे—बीकाजी, सुजौंजी, दूदौंजी, कम्मूजी, सांतलजी, जोगाजी, वरसिंहजी, नींवकरन, शिवराज, सांवतसी, बनवीर, करण रायमल, भोज, कूंयौंजी और रामौंजी। इनमेंसे सांतलजी जोधाजीका उत्तराधिकारी हुआ। उसकी संतानके हाथमें जोधपुर मारवाड़ राज्य है और वीर बीकाजीने निज बाहुबलसे जो भूमि अर्जन करके अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया वह राज्य बीकानेरके नामसे विख्यात है।

प्रथम खंड समाप्त हुआ।

श्रीः ।

बीकानेर राज्यका इतिहास.

दूसरा खंड ।

बीकाजी ।

जिस समय राठौड़ वंश विभूषण वीर बीकाजीने पैतृक स्वत्वाधिकारसे पृथक् होकर राज्यबीकानेरकी नीव डाली थी, वह हिन्दुस्तानके इतिहासमें यदि अराजकताका समय कहा जाय तो अनुचित न होगा। साथ ही इसके मस्तिष्कमें इस स्फूर्तिको भी स्थान मिलता है कि यदि राजपूत जातिमें स्वाभाविक वीरता और साहसके साथही साथ परस्परकी एकता और दूरदर्शिताकी कमी न होती तो हिंदुओंकी परतंत्रता भी वहींसे बस हो जाती।यह सन् ईस्वीकी १५वीं शताब्दीका मध्याह्न काल था जब कि द्वीपान्तरस्थ यूरपवालोंको हिन्दुस्थानका रास्ता भी नहीं मालूम था और यहां साम्राज्यका मुकुट उन पठान बादशाहोंके शिरपर सुशोभित था जिनकी शासनप्रणालीका कोई निश्चित नियम नहीं था, उस समय समस्त हिन्दुस्तानमें यह कहावत पूर्ण रूपसे चरितार्थ हो रही थी कि " जिसकी लाठी उसकी भैंस "

प्रथम खंडमें कहा जा चुका है कि मारवाड़ या जोधपुर राजधानीके व्यवस्थापक राव जोधाजीके सत्रह पुत्र थे । उनमें बीकाजी सबसे बड़े पाटवी कुमार या युवराज पदके

---

(१) कर्नल टाड साहबने बीकाजीको जोधाजीका दूसरा पुत्र लिखा है और जोधपुरकी ख्यातमें छठवां लिखा है परंतु राज बीकानेरको सब ख्यातोंमें पाटवी कुमार माना है। बीकाजीका पाटवी कुमार होनेका एक यह प्रमाण भी उपस्थित है कि बीकाजीके मांगनेपरही जोधाजीने वंशप्रपंरागत राजचिह्नोंको देना स्वीकार करलिया।

आगे देखा जाता है कि हिंदुस्थानके या क्षत्रिय जातिके इतिहासमें ऐसे अगणित प्रमाण मौजूद हैं कि अमुक राजाने अपनी कनिष्ठा रानीके प्रेमवद्ध होकर पटरानी या पाटवी कुमारको मूल स्वत्वाधिकारोंसे च्युत करके कनिष्ठ-

अधिकारी थे किन्तु जोधाजी सांतलजीकी मातापर विशेष स्नेह रखते थे इसलिये वह सांतलजी ही को जोधपुरकी गद्दीपर अपना उत्तराधिकारी नियत करना चाहते थे। बीकाजीकी माता नापा सांखलेकी बँहिन थी। नापा सांखला राठौड़ोंके इतिहासके संबंधमें एक प्रसिद्धिप्राप्त अत्यन्त बुद्धिविचक्षण पुरुष माना गया है। नापाकी एक बहिन मेवाड़पति राणा कुंभाजीको भी व्याही थी। अतः जब जोधाजी निर्वासित अवस्थामें फिर रहे थे, तब नापा चित्तौड़में रहता था और गुप्त रीतिसे वहाँके सब समाचार जोधाजीको पहुँचाता रहता था। इस कृतज्ञतावश जोधाजी नापाका बड़ा सन्मान करते और उसकी बात भी मानते थे।

बीकाजीका जन्म संवत् १४९५ सन् १४३९ ई. में हुआ था। जब नापा सांखलेने जोधाजीके उक्त अभिप्रायकी चरचा की, तो उसने उनसे एक दिन स्पष्ट कहदिया कि यदि आप सांतलजीको युवराजत्व देना चाहते हैं तो प्रसन्नतापूर्वक देवैं, किन्तु बीकाजीको कुछ सैनिक सहायता सहित सारूंडेका पट्टा दे दीजिये। उनके भाग्यमें होगा तो वह अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लेंगे। जोधाजीने नापाकी इस सलाहको प्रसन्नतापूर्व्वक स्वीकार करलिया और पचास सवार मय सारूंडेके पट्टेके उसी समय नापाको समर्पण किये। जब यह विषय सर्व साधारणपर प्रगट हुआ तो कांधलजी रूपाजी, मांडलजी, नंदाजी और नत्थूजी ये पाँच सरदार जोधाजीके सगे भाई और नापा सांखला, वेला पड़िहार, लाला लखनसी वैद्य, चौथमल कोठारी, नारसिंह बच्छावत् विलमसी प्रोहित और साल्लूजी राठी आदि कई लोगोंने बीकाजीका साथ दिया। इस प्रकारसे कुल

औरसोंको अपना उत्तराधिकारी बनाया और इसी हेरफेरमें अगणित राज्य और राजवंशोंका लोप होता गया है। क्योंकि राजकर्मचारियोंमेंसे जिन लोगोंने वास्तविक सत्वको मुख्य माना वे एक पक्षमें होगये और जिन्होंने राजाज्ञाको पालन करना मुख्य कर्तव्य माना वे दूसरे पक्षमें होगये और इस प्रकार परस्परके वैर विरोधमें सर्वनाश होगया।

सरदार, सिपाहियों समेत सौ सवार और दो सौ पैदलोंके साथ आसोज सुदि १० संवत् १५२२ (सन् १४६५ ई०) को बीकाजीने जोधपुरसे कूचकरके मंडोरमें पहला मुकाम कियाँ ।

जिस समयकी यह घटना है, उस समय जोधपुर राज्यकी सीमा देशनोक तक पहुँच गई थी । आगे, जहाँ कि अब बीकानेर राज्यका विस्तार है, वह भूमि उस समय विभिन्न सम्प्रदायोंके शासनगत थी । जनरल कनिंघमके मतानुसार इस प्रदेशका पुराना नाम बागड़ी या बागरी देश था । क्योंकि यहाँपर सर्वत्र बागड़ी लोगोंका अधिकार था, किन्तु हम जिस समयकी बात लिख रहे हैं उस समय बीकानेरके उत्तर और पश्चिममें भाटी लोगोंका अधिकार था, ईशान पूर्व और आग्नेय दिशाओंमें जाटोंका राज्य था । इसके आगे भटनेरके आसपास भट्टी मुसलमानोंका कबजा था। उन्हींमें मिला जुला। चाईल और

(१) बडी ख्यातमें लिखा है कि एक दिन राव जोधाजी दरबारमें बैठे थे, बीकाजी जरा देरसे दरबारमें आये और मुजरा करके अपने काका कांधलजीके पास बैठकर उनके कानमें कुछ बात करने लगे । यह देखकर राव जोधाजीने व्यङ्गसे कहा, "मालूम होता है चाचा भतीजे किसी नवीन राज्यको विजय करनेकी सलाह कर रहे हैं" इसपर बीकाजीने तो कुछ उत्तर न दिया पर कांधलजीने दर्पपूर्वक कहा कि यदि आपकी ऐसी कृपा है तो ऐसा ही होगा और इसी पर चाचा भतीजे दोनो दरबारसे उठकर चले आये ।

(२) बागड़ी लोग आजकल गोंड, भील, कोल आदिकी भाँति जंगली अवस्थामें बुन्देलखण्डके जंगलोंमें पाये जाते हैं । वे जरायम पेशा नहीं हैं पर उठाऊ चूल्हा हैं । फन्देसे जंगली जानवरोंका शिकार करनेमें बडे दक्ष होते हैं । यही उनकी आजीविका है।बागडी लोगोंको कनिंघमने बागरीरायकी संतान लिखा है और बागरीरायका नाम हम पृथ्वीराज रासोमें भी देखते हैं कि वह उसका एक खास सामन्त था क्या जाने ये लोग उसी चौहान वीरके वंशज हो । इनकी प्राचीन राजधानी नागौरमें थी ।

(३) भाटी राजपूत जो मुसलमान होगये वे भट्टी कहलाते हैं।

(४) चाइल किस मूलवंशकी शाखा है यह अभी संदिग्ध है।

जोइया लोग जहां तहां डेढ चावलकी खिचडी पकाते थे, हिसारमें बादशाही सूबेदारका थाना था और सुजानगढ़की आग्नेय सीमापर जिसे कि अब बीदावाटी कहते हैं, उन दिनों मोहिल राजपूत राज्य करते थे.

राव बीकाजी अपने सब साथियों सहित देशनोंकमें आये और श्रीकरणीजीके दर्शन करके उसने अपना यावत् बीतक निवेदन किया। इसपर श्रीकरणीजीने बीकाजीको आश्वासन देकर आशीर्वाद दिया और कहा कि हालमें तुम चांडासरमें ठहरो । श्रीकरणीजीकी आज्ञा शिरोधार्य्य करके बीकाजी चांडासरमें रहने लगे । दैवात् इसी समय पूगलके भाटी राव शेखोजीको मुलतानकी फौजने गिरफतार कर

---

(१) जोइया लोगोंको टाड साहबने जाट लिखा है किन्तु ये वास्तवमें क्षत्रिय हैं और प्रमार वंशकी शाखा हैं। ये लोग आजकल पंजाबमें बहुत हैं और सरकारी फौजकी नौकरी ही मुख्य आजीविका है। उनमेंसे बहुतेरे लोगोंसे म खुद मिला हूं। वे अपनेको राजा जगदेवकी सन्तान बतलाते हैं जो प्रमार वंशमें एक प्रख्यात पुरुष माना जाता है। उसने अपने हाथसे अपना मस्तक देवीको चढाया था।

(२) करणीजी एक चारणकी बेटी थी। उसमें एक प्रकारकी ऐसी देवी शक्ति थी कि वह जिसको जो वरदान वा शाप देती वह शीघ्र सफल होता था । इसी लिये सारे राजपूतानेमें करणीजीको भी भगवतीका अवतार मानते हैं । इसने ख्यातोंके लेखानुसार करीब १५० वर्षकी आयु पाई । बीकानेरसे कोई २० मील पूर्व दक्षिण देशनोंकमें अब भी करणीजीका मंदिर बना हुआ है। इन्हीं करणीजीके पुत्रपौत्रोंके वंशधर चारण लोग इस मंदिरके पुजारी हैं । अश्विन की नवरात्रमें यहां बडा मेला होता है। इस स्थानपर चूहोंकी बहुतायत है जिस किसीको सफेद चूहा देख पडे तो खास करणीजीके दर्शन होना मानाजाता है। यहांसे बजरी और मरीका प्रसाद मिलता है । वर्तमान बीकानेर नरेश भी करणीजीको बहुत मानते हैं।

(३) मुकाम चांडासर शहर बीकानेरसे कोई १२ मील पश्चिम उत्तरको है । उस समय वहींसे भाटियोंकी अमलदारी शुरू होती थी।

लिया। यह सुअवसर देखकर नापा सांखलाने राव पूगलके कामदार गोगलीको मिलाकर शेखोजीकी बेटीसे बीकाजीका व्याह पक्का करा-लिया। लग्न आनेपर राठौडोंकी बरात पूगलको गई किन्तु ठीक उस समय जब कि दूलह दुलहिनकी भांवरें पड रही थीं, शेखोजी मका-नपर आ पहुँचा। उसने यह रहस्य देखकर पहले तो बहुत क्रोध किया किन्तु श्रीकरणीजीके समझाने बुझानेसे वह शान्त पड गया.

उक्त विवाह हो चुकनेके पीछे बीकाजीने कोडमदेसरमें जाकर वहां एक किला बनवाना आरंभ किया। यह देखकर आसपासके अन्यान्य भाटी सरदारोंको यह बात भास गई कि सीमापर राठौडों-का दुर्ग बनजानेसे भविष्यमें हमारे अधिकारका सर्वनाश होगा। वे लोग बीकाजीको कोडमदेसरसे हटानेकी चेष्टा करने लगे। निदान दस वर्ष तक तो बीकाजीने भाटियोंका मुकाबला किया किन्तु जब देखा कि इस झगडेमें हानिके शिवाय लाभ नहीं है तो वहांसे हटकर जांगलूमें जा ठहरे। दस वर्ष तक जांगलूमें रहे पर वहाँ भी इनका पैर न जमसका। अस्तु संवत् १५४२ (सन् १४८५ ई०) में राव बीकाजीने उस स्थानपर डेरा डाला जहाँ इस समय शहर बीकानेर आबाद है।

यहां आकर बीकाजीने जिस स्थानपर अपना चिरस्मरणीय निशान रोपा था, उसे आजकल जूनागढ कहते हैं। यह स्थान बीकाजीकी अवस्था-के अनुकूल बहुत उपयुक्त था। समतल मरुक्षेत्रमें एक यह ऐसा ऊंचा टीला है कि जहाँसे कोसोंतक नजर दौडती है और इसके चारों ओर ऐसे बडे बडे अव्यवस्थित खंदक (भरके) हैं कि जिनमें हजारों आदमी सहज ही छिप सकते हैं। उस समय इसी टीलेके दाक्षिण पूर्व पार्श्व एक मीलके अन्तरसे पूर्व पश्चिम लंबायमान मुलतान और हिन्दुस्तान (दिल्ली) का रास्ता था और शीतकालमें जब कि व्यापा-रियोंकी आमदरफ्त इस रास्तेसे होती थी तो वे प्रायः उक्त भरकोंमें

(१) कोडमदेसरमें बीकाजीने एक देवीकी मूर्ति स्थापन की थी। वह और उनके किलेके निशान अबतक वर्तमान हैं। कोडमदेसर वर्तमानमें बीकानेर राज्यान्तर्गत राजधानीसे कोई १५ मील वायव्य दिशामें है।

जलरहनेके कारण इसी टीलेके आसपास डेरा डालते थे। निदान बीकाजीने इन काफलोंकी लूटसे थोड़े ही दिनोंमें बहुत द्रव्य संचय कर लिया। इस द्रव्यके प्रभावसे इनका सैनिक बलभी दिन दिन बढ़ने लगा । तब संवत् १५४५ बैशाख २ (सन् १४८८ ई.) को राव बीकाजीने वर्तमान बीकानेर[1] नगरकी नीव डाली।

कहा जा चुका है कि बीकानेरके ईशान पूर्व और वायव्य दिशाओंमें स्वतंत्र कृषिजीवी जाटोंका विस्तार था। वे लोग छः सम्प्रदायोंमें विभक्त थे, यथा गोदारा, सारन, कसबा, बेनीवाल, सियांग और सोवां। उस समय इनकी आबादीके करीब दो हजार गाँव और कसबे थे. किन्तु इन लोगोंमें परस्पर एकता नहीं थी, इसी कारण पार्श्ववर्ती राजपूत या मुसलमान लोग इनको प्रायः दुःख दिया करते थे। इसी बीचमें एक और घरफोड़ घटना उपस्थित हुई। वह यह कि गोदाराओंका मालिक पाण्डु सारन पल्लूकी स्त्रीको ले भागा। इस पर पल्लू सिवाने के निकटस्थ नरसिंह जाटूकी सहायक सेना सहित पाण्डूपर चढ़ आया यह देखकर पाण्डू घबराया हुआ राव बीकाजीकी शरणमें आया और उनसे सविनय निवेदन किया कि यदि आप मुझे इस आपत्तिसे उबार लें तो मैं निज बंधुबांधव और सन्मित्रों सहित आपकी प्रजा बन जाऊंगा। जाटों की बात सुनकर वीर बीकाजीने सदर्प

(१) कर्नल टाड साहबने लिखा है कि यह भूमि जाटोंकी अमलदारीमें थी अतः जब जाटोंके नेता नेरा जाटने बीकाजीको अपना राजा मानकर यह भूमि समर्पण करदी तो बीकाजीने उसकी यादगारके लिये शहरका नाम बीकानेर रखा, किन्तु न तो ख्यातमें इस बातका कोई जिकर है न अनुमानको स्थान मिलता है. क्योंकि जहां बहुतसे शहरोंके नामके अन्तमें 'नेर' प्रत्यय संयुक्त है, जैसे "भटनेर, सांगानेर और गजनेर" इत्यादि मालूम होता है कि "नेर" शब्द "नगर" का अपभ्रंश है। जैसे नगर = नयर--नइ० यर = नेर । इस प्रान्तकी बोलीमें बहुतसे ऐसे शब्द हैं जिनमें 'ग' के स्थानमें यका उच्चारण होता है। जूनागढ़पर "भाडासर" नामसे प्रसिद्ध एक जैन मंदिर है जो संवत् १५२५ का बना हुआ है उससे यह भी मालूम होता है कि मंदिर बननेके समय यहां कुछ बस्ती भी थी, मालूम होता है कि उसी प्राचीन बस्तीका बीकाजीने अपने नामसे नामकरण किया। बीकानेरको आदिसे नहीं बसाया।

उत्तर दिया—"रे कृषिजीवी जाट लोगों ! जोधपुर राज्यके व्यवस्थापक जोधाजीको जहान जानता है। मैं उन्हींका पुत्र हूं। राठौड़ोंकी तलवारके सामने किसकी सामर्थ्य है जो ठहर सके । यदि तुम लोग मेरी शरणमें आये हो तो मैं तुम्हारी रक्षा करनेके लिये सन्नद्ध हूँ और तुम्हारी ही इच्छापूर्वक मैं तुम्हें अपनी प्रजा मानकर सदैवके लिये तुमलोगोंके संरक्षण और पोषणका भार अपने हाथमें लेता हूं, और जब कि तुम मेरी शरणागत प्रजा हो, तो यह भी वचन देता हूं कि मैं या मेरे उत्तराधिकारी तुम्हारे भूस्वत्व पर किसी प्रकारका अनुचित हस्तक्षेप न करेंगे ।

बीकाजीके ऐसे आश्वासनप्रद वचन सुनकर गोदारापति पाण्डु अपने आसनसे उठा और उसने उसी समय अपने हाथसे बीकाजीके ललाटपर राजतिलक करके अपने सब साथियों सहित प्रजा प्रतिनिधिकी भाँति नजरें कीं, किंबहुना और भी सब राजसी शिष्टाचार होचुकनेपर कुछ थोड़ीसी राठौड़ सेनाके साथ कांधलजी पाण्डूके साथ हो लिये और चढ़ी सवारी आधी रात्रिके समय उन्होंने नरसिंह जाटूको जा मारा । नरसिंह जाटूके मारे जाते ही समस्त जाटोंपर बीकाजीकी वीरताका ऐसा आतंक जमगया कि वे सबके सब एक एक करके बीकाजीकी शरणमें आये और राजसीकी नजरें देदेकर राठौर वंशकी प्रजा बन गये ।

(१) किंतु असलमें इस बातका पालन नहीं हुआ । इस जमानेके बाद जाटोंकी सत्ता नष्ट की जाने लगी और इस समय तो एक भी जाट भूम्यधिकारी नहीं रहा ।

(२) पाण्डु गोदारा लाधड़ी वा सेखासरका रहनेवाला था । उसके उत्तराधिकारी अबतक बीकानेरके राजाको गद्दी होनेके समय अपने हाथसे तिलक करते हैं ।

छहो संप्रदायोंके जाट लोगोंको अपनी प्रजा बना लेनेपर जब वीरवर बीकाजी मंत्री, सेना, कोष और प्रजा क्रमात् इन राजसीके चारोंअंगोंसे सम्पन्न हो गये तब उन्होंने अन्यान्य पार्श्ववर्ती निर्बल भूम्यधिकारियोंको दबाना आरम्भ किया । सबसे पहले बीकाजीने उन खीची राजपूतोंको जेर किया जो बीकानेरसे पूर्व्व जाटोंकी सीमाके उसपार एकसौ चालीस गांवोंमें आबाद थे। उनकी मुख्य राजधानी रेनीमें थी।

बीकाजीको जोधपुर छोड़े अभी थोड़े ही दिन हुए थे कि राव जोधाजीकी मोहिल राजपूतोंपर आंख पड़ी। उन दिनों मोहिलोंका सरदार अजीतमल[2] बड़ा वीर और साहसी पुरुष प्रसिद्ध था। उसकी राजधानी छापर द्रोणपुर[3]में थी। किन्तु जोधाजीने देखा कि यह दुर्जय

(१) उक्त छः जाट संप्रदायोंका विवरण ।

	नाम कौम	गांव संख्या	मुख्य स्थान	नाम नेता
१	गोदारा	३६०	लाघड़ी व शेखसर	पाण्डू
२	सारन	३६०	भडांग	पल्लू
३	कसवां	३६०	सीदमुख	कुंवरपाल
४	बेनीवाल	१५०	रासलाना	राइसाल
५	सियांग	१४०	सूई	चोखू
६	सोवां	८४	धानसी	अमरा

कर्नल टाडसाहबने कसवां सियांग और सोवांके स्थानमें पूनियां, आसब और जोइया नाम दिये हैं।

(२) चौहान वंशमें कोई चाहड़देव नामका पुरुष होगया है। उसका बेटा धीणासुर हुआ। उसका चूहड़, उसका गंग, उसका इन्द्रवार, उसका अर्जुन, उसका सुरजन और सुरजनका बेटा मोहिल हुआ। मोहिलके बाद हरदत्त, विरसी, व्यालहर, आसल, आहड़, रेणसी, साहणपाल, लोहर, वोव, वेग, माणिकराव, सामतसी क्रमशः एकके बाद दूसरे मोहिलोंके नेता होते गये। उक्त अजीतमल सामतसिंहका पुत्र था।

(३) छापर द्रोणपुर बीकानेरसे अग्नेय दिशामें ५० कोसकी दूरी पर है। कहते हैं इस नगरकी नीव द्रोणाचार्य्यने डाली थी। उस समय इसकी चतुर्दिक् भूमिपर डाहलिया छत्रियोंका राज्य था जो कि शिशुपालके वंशज बतलाये-

शत्रु कूटनीतिके चक्रके अतिरिक्त और किसी स्थावर शस्त्रसे परास्त नहीं किया जा सकता। तब उन्होंने उसे विवाहके बहाने जोधपुरमें बुलाया और रात्रिको उसके मारडालनेका प्रबंध किया। उसी रात्रि उसको भी इस षड्यंत्रकी सूचना मिलगई। इसलिये वह रात्रिको उठकर भागा और राठौड़ सेनाने उसका पीछा किया। अन्तमें छापरके पास गांव घनेरूके मैदानमें राठौड़ोंने अजीतका काम तमाम कर दिया और चढ़ी सवारी द्रोणपुरपर आक्रमण करके अजीतके पुत्र हेमराजको भी मारडाला, परन्तु हेमराजका पुत्र मेघा समस्त मोहिलोंका नेता बनकर राठौड़ोंको दुःख देने लगा, यहांतक कि जोधाजीको द्रोणपुरसे अपना थाना हटा लेना पड़ा.

किन्तु मोहिलपति वीर मेघा भी थोड़े ही दिनोंमें पंचत्वको प्राप्त होगया। उसके दो पुत्र थे, नरवद और बरसल। इन दोनोंने परस्पर झगड़ाकर मोहिलोंके दो दल करदिये। इस फूटका फल भी उन्हें तत्क्षण प्राप्त हुआ, जोधाजीने सुअवसर जानकर फिरसे आक्रमण किया और संयुक्तबल राठौड सेनाने बिभक्त बल मोहिलोंको एक एक करके देशसे निकाल दिया। तब जोधाजीने अपने एक कुमार जोगाजीको द्रोणपुर राज्यके संरक्षणका भार सौंपा, किन्तु जोगाजीमें शासनशक्तिका अभाव होनेसे फिर मोहिलोंका जोर बढ़ने लगा। जोधाजीने हाथ आई हुई जमीनको जाते देखकर जोगाजीको जोधपुर बुला भेजा और बीकाजीके अनुज वीर बीदाजीको—जो कि अपनी माता सहित अबतक जोधपुरमें ही उपस्थित थे—द्रोणपुरका थानापति नियत किया। बीदाजीने अत्यंत कुशलतापूर्व्वक अपना कर्तव्य पालन किया। साम, दान, दंड, भेद "येन केन प्रकारेण" शत्रु समाजको शमन करके बीदाजीने मोहिलोंकी प्रजापर अपना पूर्ण प्रभाव जमा लिया।

जाते हैं। डाहलियोंको पराजित करके बागड़ियां द्रोणपुरके राजा हुए और उनके बाद उक्त राणा मोहिलके पिता सुरजनके समयसे यहां मोहिलोंका राज्य हुआ। संवत् १५३१ तक यहांपर मोहिलोंका राज्य रहा। अब यह भूमि बीकानेर राज्यान्तर्गत बीदावाटी नामसे प्रसिद्ध है और तहसील सुजानगढ़के प्रबन्धमें है।

इधर बीर बीकाजी बराबर दिग्विजयमें दत्तचित्त थे। बीकानेरके पूर्व और पूर्व उत्तरनिवासी जाटों तथा खीची और चाइल राजपूतोंपर अपना प्रभुत्व जमाकर बीकाजीने राठौड़ सेनाके दो दल कर दिये जिसमेंसे एक दलका नेतृत्व तो बीकाजीने स्वयं स्वीकार किया और वे बीकानेरके पश्चिम और पश्चिमोत्तरकी भूमि दबानेको अग्रसर हुए।दूसरे दलके नेता कांधलजी थे। इस दलमें विजित जाट और खीचियोंकी संख्या राठौड़ोंसे कम न थी एवं वे लोग फौजी रसद बरदास भी राठौड़ सेनाको देते जाते थे। इसलिये वीर कांधलजी साहसपूर्वक उत्तरोत्तर बढते ही गये और भटनेरके आसपास अपना कब्जा करके हिसारकी सरहदमें हमले करने लगे। राठौड़ोंका यह साहस देखकर हिसारके शाही सूबेदार सारंगखांने एक मुसलमानी सेना कांधलजीके मुकाबिले पर भेजी। इस शाही सेनासे और राठौ-डोंसे मामूली छेडछाड सुरू हुई थी, कि तबतक मोहिलोंके नेता वरसल और नरवद दिल्लीके बादशाह दौलतखां लोदीकी शरणमें फरियादी हुए। बादशाहने कुछ फौज दिल्लीसे उनकी सहायताके लिये दी और सूबेदार सारंगखांके नाम एक परवाना भी भेज दिया। सारंगखां तो खुद राठौडोंके दमन करनेकी चिंतामें था, अब जो उसने बादशाहका मन पाया तो उसका दिल दूना हो गया। उसने अपनी वैतनिक सेनाके सिवाय भटनेरके आसपासके भट्टी (मुसलमान) और सिवानेके जोइया राजपूतोंको भी अपनी सहायताके लिये बुला भेजा। इधर वे मोहिल लोग भी जो अबतक बीदाजीकी सेवा सुश्रूषा करते थे, अपने नेताओंका बल बढ़ा देखकर खुद राठौड़ोंसे लड़नेके लिये सन्नद्ध हो गये।

इस समय बीकाजी बीकानेरके पश्चिमोत्तर प्रान्त निवासी भाटि-योंकी भूमिको दबाते हुए अनूपगढ़ तक अपनी विजय पताका उड़ा चुके थे, अब जब उन्होंने देखा कि मोहिलोंकी सहायक मुसलमान सेनाके बिजयी होजानेसे केवल मोहिलवाटीके जानेका भय नहीं है बरन शत्रुके जोर पकड़ लेनेसे हमारे नवाङ्कुरित राज्यको भी हानि

पहुँचनेकी संभावना है, तब वह कांधलजी सहित आठ हजार राठौड़ सेना लेकर बीदाजीकी मददपर आ पहुँचे । इस लडाईमें प्रत्यक्षमें तो मोहिलोंका नाम था परन्तु वास्तवमें बादशाही फौज और राठौड़ोंका आखिरी फैसला था । निदान जिस समय दोनों दल रणक्षेत्रमें उपस्थित हुए तो राठौड़ सेना दो भागोंमें विभाजित हो गई । उधरसे मोहिल और भाटी आदि स्थानीय राजपूत पैदल होकर हरावलमें थे और उनके पीछे मुसलमान सवारोंकी कितारें थीं । इधरसे बीदाजीने पैदल सेनाके नेता होकर शत्रुके हरावलपर हमला किया, और जब दोनों पैदल दल एक दूसरेमें रिलमिल कर कतल करनेलगे तब रणकुशल कांधलजीने चार हजार सवारोंसे बायीं बगलसे धावा किया । राठौड़ोंके इस प्रबल आक्रमणको मुसलमान सेना न सह सकी । इधर मोहिलोंके नेता नरवद और वरसल भी मारे गये; इसलिये सारंगखांको लाचार होकर खेतसे भागजाना पडा ।

इस युद्धमें विजय पानेके पश्चात् राव बीकाजी स्वयं कुछ दिनों तक द्रोणपुरमें रहे और बीदाजीके शासन–प्रबन्धमें सहायता देते रहे । एक तो सहोदर–वात्सल्य, दूसरे उक्त लड़ाईमें सहायताकी कृतज्ञतासे बीदाजीने राव बीकाजीको आत्म समर्पण करके सदा उनके आज्ञानुवर्ती रहना स्वीकार किया । इस जगह यह स्पष्ट करना हम अपना कर्त्तव्य समझते हैं कि बीदावत सरदारोंका यह दावा

(१) ख्यातमें लिखा है कि कांधलजीका एक पुत्र बाघसिंह नरवद, वरसलसे मिल गया था, जब इस लडाईका मौका आया तो बीकाजीने उसे इस कुलद्रोहके लिये बहुत धिक्कारा और समझाया बुझाया । इसपर उसने पुनः निज वंशका पक्ष अवलम्बन कर लिया और लडाईके समय मोहिलोंको समझाया कि तुम्हारे घोडे थकगये हैं इस लिये तुम पैदल लडाई करो । इधर राठौड़ घोडोंपर सवार थे । इसीसे राठौडोंकी जीत हुई । पर यह बात विश्वासनीय नहीं है । घोडोंकी थकावटसे कोई लड़ाईका मोरचा न बिगाड़ देगा असल बात तो यह है कि मोहिलोंके पास घोड़े थे ही नहीं ।

दूसरे राठौड़ सवारोंका हमला सदासे प्रसिद्ध है । बरनियर खुद लिखता है कि राठौड़ सवार हमला करनेमें ऐसे तेज हैं कि यूरपकी शिक्षित सेना भी उनके मुकाबलेमें नहीं ठहर सकती ।

सही है कि हम बीकानेर राज्यकी दी हुई भूमि नहीं भोगते, हम स्वतंत्र हैं और हमारे अधिकार राज्यके अन्य पट्टेदारोंसे अधिक हैं। यदि हमारे पूर्वज बीदाजीने बीकाजीको बड़ा मान कर उनकी सहायता करने या उनके आज्ञाकारी रहनेकी प्रतिज्ञा की थी तो हम भी राज्यकी आज्ञा पालन करनेको तैयार हैं । परन्तु हमारे प्राचीन अधिकारों पर राजाका हस्तक्षेप करना उचित नहीं है।

उधर ज्यों ज्यों सारंगखाँ हिसारकी तरफ हटता जाता था त्यों त्यों कांधलजी निज पदाक्रान्त भूमिपर राठौड़ राज्यका विस्तार करते हुए उसका पीछा करते जाते थे । जब सारंगखाँ हिसारके किलेमें पैठ गया तो कांधलजीने मौजा साहबेके तालावपर डेरे डाल दिये । एक दिन अचानक ही मुसलमान सेनाने राठौड़ोंके डेरे आन घेरे । इधरसे कांधलजीने मुकाबला करनेकी आज्ञा दी । बड़ी देर तक लड़ाई होती रही । अन्तमें कांधलजीके मारे जानेसे लडाई खतम हुई । जो राठौड़ सैनिक जीते जागते बचे थे उन्होंने यह समाचार बीका-जीको आ सुनाया ।

कांधलजी राठौड़ वंशमें एक बड़े ही वीर पुरुष होगये हैं । ७३ वर्षकी अवस्थामें दैवात् घोडेकी लगाम टूटजानेपर भी इक्कीस शत्रुओंको मारकर धराशायी हुए थे । साथ ही इस राज्यके विस्तारके लिये बीकाजी इस मृत वीर पुरुषके विशेष आभारी थे । तीसरे सगे काका थे । अतः कांधलजीकी मृत्युका समाचार सुनकर बीकाजीको असह्य खेद हुआ । उन्होंने उसी आवेशमें प्रतिज्ञा की कि " अब जबतक सारंगखाँको न मार लूंगा तबतक अन्न ग्रहण नहीं करूंगा ।" यह सब समाचार राव जोधाजीके पास भेजकर अपनी फौजमें तैयारी होनेकी आज्ञा दी । भाईकी मृत्युका समाचार पाते ही जोधाजी भी एक जबरदस्त राठौड सेना लेकर बीकाजीसे आमिले । इधरसे राठौड़ चले और उधरसे सारंगखां स्वयं बढता आता था निदान मौजा कानासरमें दोनों सेनाओंका मुकाबला हुआ और पहली ही लडाईमें सारंगखां मारागया । सारंगखांके मारे जानेसे

सर्वत्र सन्नाटा छागया । आस पासमें फिर किसीने राठौड़ोंके विरुद्ध शस्त्र उठानेका साहस नहीं किया ।

सारंगखांको मारकर लौटते समय राव जोधाजी कई दिनतक द्रोणपुरमें मुकीम रहे । वहां उन्होंने राव बीकाजीको भी बुलाया । एक दिन दरबारमें राव जोधाजीने बीकाजीके बाहुबल और नीति चातुरीकी प्रशंसा करते हुए कहा कि तुमने मेरे नामको खूब उज्ज्वल किया । मैं तुम्हारे कर्त्तव्यसे परम संतुष्ट हूं । अब मैं दो बातें तुमसे कहता हूं, उन्हें मेरी आज्ञा मानकर शिरोधार्य्य करो । एक तो यह कि लाडनू परगनेको तुम मुझे देदो और दूसरे तुम कभी अपने भाईके राज्यपर आक्रमण करनेकी चेष्टा न करना । राव बीकाजीने पिताके दोनों वचन सादर अंगीकृत करलिये, किन्तु उन्होंने कहा कि यदि आप मुझसे संतुष्ट हैं तो एक वर मैं भी चाहता हूं । वह यह कि राठौड़ वंशके वंशपरम्परा पैतृक राजचिह्न मुझे प्रदान किये जायं, क्योंकि न्यायपूर्व्वक मैं ही उनके संरक्षणका अधिकारी हूं । जोधाजीने बीकाजीकी इस बातको प्रसन्नता पूर्व्वक स्वीकार करलिया ।

किन्तु राव जोधाजीकी मृत्युके पश्चात् जब कि राव सूजाजी जोधपुरके सिंहासनपर सुशोभित थे तो राव बीकाजीने बेला पडिहारको उक्त राजचिह्न लानेके लिये जोधपुरको भेजा, परंतु वहाँसे साफ इनकार कर दिया गया । तब राव बीकाजीने स्वयं जोधपुर पर चढाई की, इस मुहिममें बीदाजी भी तीन हजार फौजके साथ राव बीका-

(१) जोधपुरसे आये हुए राजचिह्न, सुनते हैं, कि अब भी बीकानेरमें मौजूद हैं । वे ये हैं:--

छत्र, चमर, ढाल, तलवार, कटार लक्ष्मीनारायण हिरण्यगर्भ, नागणेचाजी देवीकी अठारह भुजी मूर्ति, करण्ड, भवरढोल, वैरीसाल नगारा, दलसिंगार घोडा, और भुजाई देगे.

दलसिंगार और सहेला नामके दो घोडे अब भी थानपर बँधे रहते हैं जिनकी नित्य पूजा होती है । केवल दसहरेकी सवारीमें वे कोतल चलते हैं । जो घोडे मर जाते हैं उनकी जगह दूसरे रखलिये जाते हैं । थान खाली नहीं रहता ।

जीकी सेवामें हाजिर हुए थे। बीकाजीने एक भारी लशकरके साथ जोधपुर पर आक्रमण करके पहले तो छः घंटे तक शहरको खूब लूटा इसके बाद किलेका घेरा डालकर पड़ रहे। किलेकी फौजने साहस पूर्वक कई महीने तक बीकानेरकी फौजका मुकाबला किया किन्तु अंतमें जब जलके अभावसे फौजमें हाहाकार मचगया तब सूजाजीकी माता स्वयं बीकाजीके पास आइ और उन्हें उक्त राजाचिह्न समर्पण करदिये। जोधपुरसे घेरा उठाकर अभी बीकाजी बीकानेरके रास्तेमें ही थे कि अजमेरके सूबेदारने सूजाजीके भाई,नारासिंहको पकड़ रक्खा उनके छुड़ानेके लिये जब सूजाजी अजमेरको जाने लगे तो बीकाजीने स्वयं उनका साथ दिया और भाईपनकी पूरी नीति निर्वाहकर भाईको कैदसे छुड़ा लाये।

बीकाजीका अन्तिम अक्रमण शेखावाटीकी सीमान्तर्गत राज्य खंडेलापर हुआ था राठौड़ सेनाकी चढ़ाईकी खबर सुनकर खंडेलापति राव रिडमल शहरसे दो कोसके फासले पर आगे आन पड़ा पर राठौड़ सेनाने एक ही लड़ाईमें सेखावतोंको तीन तेरह करादिया और शहरको लूट पाटकर किलेपर अपना कब्जा करालिया। राव रिडमल लड़ाईमें हारकर बादशाहकी शरणमें जा पुकारा और वहाँसे नवाब हिंदालकी मातहतीमें आठ हजार सेना लेकर बीकानेरपर चढ़ आया। यह समाचार पाकर राव बीकाजीने एक बलिष्ठ राठौड़ सेना साथ लेकर रिवाड़ीके पास मुसलमानी लश्करका मोरचा रोक लिया एक बड़ी भारी खड़ी लड़ाई हुई। परिणाममे राव रिडमल और हिन्दाल दोनों मारेगये और राव बीकाजी विजयका डंका बजाते हुए निज राजधानी बीकानेरमें आ उपस्थित हुए।

राव बीकाजीके समयकी अंतिम वीर घटनाका कोई सन् संवत् नहीं दिया गया किन्तु अनुमान है कि इसके बाद उन्होंने कुछ थोड़े ही दिन शान्तिपूर्वक राज्यमें सुख भोग किया था। उस समय बीकानेर राज्यमें कुल तीन हजार गांव कसबे थे। इसमें रिवाड़ी और हिसारके इलाकेके वे गाँव शामिल न समझना चाहिये जो आज राठौड़ोंके और कल मुसलमानोंके होते रहते थे। बीकाजीने अपने शान्तिशास-

नके समय कई चारण और ब्राह्मणोंको गांव जमीन और इनाम दिये थे जिनमेंसे कई एकके पास अब भी बीकाजीके दिये हुए ताम्रपत्र मौजूद हैं।

वर्तमान समयके विशेष उन्नतिशाली राज्य श्रीबीकानेरके व्यवस्थापक राव बीकाजी अपना कर्त्तव्य पूर्ण करके या यों कहिये कि संसाररूपी रंगशालामें एक चिरस्मरणीय अभिनय करके संवत् १५६१ आसोज (सन् १५०४ ई.) सुदी ३ के दिन देवलोकको चल बसे।

राव लूणकरणजी,

राव बीकाजीके पंचत्वको प्राप्त होनेके पश्चात् उनके ज्येष्ठ पुत्र नरोजी अपने पिताके उत्तराधिकारी हुए, किन्तु केवल सात महीने राज्य करके जब वह भी इस संसारसे चल बसे तो उनसे लघु राव लूणकरणजी बीकानेरके राज्याधिकारी हुए। ख्यातमें इनका जन्म संवत् १५२६ (सन् ई० १४७०) माघ सुदी १० मी लिखा है।

संवत् १५६१ (सन् ई० १५०५) में जब राव लूणकरणजी गद्दीपर बैठे उस समय आसपासके वे राजपूत भूमियां जिन्हें बीकाजीने उनके पैतृक स्वत्वोंसे रहित करके अपना राज्य स्थापित किया था शनैःशनैः इकट्ठे होकर राजविद्रोहका निशान उठानेको उद्यत हुए। यथा संभव भाटी लोग उनमें मुख्य थे। जब राव लूणकरणजीने उनको और बढ़ते देखा तो एक बलवान राठौड़ सेना साथ लेकर उन्होंने मुकाम ददरेवाके एक मैदानमें जा बाइयों-

(१) राज्यकी सब ख्यातोंमें नरोजीका नाम पाया जाता है किन्तु टाडसाहबने इनका जिकर नहीं किया। बीकाजीके सिर्फ दो पुत्र होना लिखा है—लूणकरणजी और घड़सीजी। ऐसे छंदबद्ध दोहा कवित्त जिनमें राजाओंकी पीढियां गिनाई गई हैं उनमें भी नरोजीका नाम नहीं आता। यथानुमान इसका यही कारण जान पडता है कि इन्होंने बहुत थोडे दिन राज्य किया।

(देखो) बीको लूणी जैतसी कल्लौ राज्य सुजान।

का मुकाबला किया । लगातार सात महीने तक कई छोटी २ लड़ाइयाँ होती रहीं किन्तु परिणाम कुछ भी न हुआ । जब विद्रोहियोंकी पूरी जमैयत होगई तो उन्होंने मानसिंह देवालोतके नेतृत्वमें राठौड़ सेनाके विरुद्ध खड़ी लड़ाई करनेकी चेष्टा की। इधरसे रावजीके छोटे भाई घड़सीजी सेनानायक नियत हुए । प्रातःसे सायं पर्य्यंत बिकट लड़ाईके बाद विद्रोही भाग उठे और ददरेवा पर राठौड़ सेनाका कब्जा होगया ।

बीकानेरसे पूर्व दक्षिण फतेहपुर[1] झुँझनूं जो आज कल राज्य सीकरके इलाकेमें है उस समय कायमखानियोंकी राजधानी था । दैवात् उन लोगोंमें परस्पर विद्रोहाग्नि उत्पन्न हुई जिसके कारण राव लूणकरणजीने उन्हें दबाकर उनसे १२० गांव केवल इस शर्तपर लिये कि वे आपसमें चाहै जैसे लड़ें भिड़ें पर राठौड़ सेना किसीकी सहायता न करेगी । इसके थोड़ेही दिनों बाद राव लूणकरणजीने हिसारकी वर्तमान सरहद पर स्थित चाइल राजपूतोंपर आक्रमण कर उनके ४४० गांवोंपर अपना अधिकार जमा लिया ।

---

(१) बीकानेरसे १०० कोस पूर्व शेखावाटी राजगढ़ परगनेमें फतेपुर झुंझनू-से दक्षिणमें स्थित ददरेवामें कोई चौहान राज्य करता था । एक समय हिसार-का सूबेदार सैयद नासिर ददरेवापर चढ़ आया । लड़ाईमें फतह पाकर उसने कतलआम बोल दिया और ददरेवाको लूट लिया । लूट खतम होनेपर वहां दो दुधमुहे बच्चे जीते जागते पाये गये इन्हें सैयद नासिर अपने साथ हिसारको लेगया और उन्हें पाल पोस कर बड़ा किया । उनमें एक लड़का जाटका था और एक राजवी चौहानका। इस चौहान बच्चेने वंश वैरका स्मरण करके सैयद नासिरको दो टुकड़े कर दिया । सैनिक लोग उन दोनोंको पकड़कर दिल्लीके बादशाह बह-लोल लोदीके पास लेगये । उसने चौहान वीरका नाम कायमखां रखा और उसे हिसारकी सूबेदारी देदी । उसीके वंशधर कायमखानी कहलाते हैं । इनके विषयमें ये दो दोहे भी ख्यातमें लिखे हैं:--

पहले तो हिन्दू हुआ, पीछे भये तुरक ।
ता पीछे गोले भये, ताते बडपन तुक ॥ १ ॥
धाये काम न आवही, कायम खानी थंदे ।
बंदी आद जुगाद के, सैयद नासिर हंदे ॥ २ ॥

किसी समय भाट और चारणोंके द्वारा राजाओंके अनेक इष्ट साधन हुआकरते थे। इसीसे राजपूतोंमें इन दोनों जातियोंका वंशपरम्परासे आदर सम्मान चला आता है किन्तु दैवात् जब राजपूतोंकी मूल नीतिमें अन्तर पड़गया तब उन्हीं भाट और चारणोंके कारण इतिहासमें अनेक अनिष्टकर आदर्श पाये जाते हैं।

संवत् १५७० (सन् १५१४ ई.) में राव लूणकरणजीने मेवाड़के राणा रायमलकी बेटीसे अपना बिवाह किया। इस बिवाहकी देनगी या बखेरमें बीस हाथी और सौ घोड़े चारणोंको दिये गये थे। इस दानके पानेवालोंमें एकका नाम लाला चारण था। वह बीकानेरसे दान लेकर जैसलमेरको गया। किन्तु वहां जब उसको कुछ विशेष प्राप्ति न हुई तो यादवोंके दरबारमें राठौड़ोंका गौरव गुण गान करने लगा। यह बात जैसलमेरपति रावल देवीदासको बहुत बुरी लगी। वह राजपूतोंके जातीय नियमके विरुद्ध चारणको तो कुछ सजा दे नहीं सकता था इसलिये उसने स्वयं प्रतिवादमें राठौड़ोंको तुच्छ कहकर उसे अपने यहांसे बिदा करदिया। उसने वहांसे आकर राव लूणकरणजीके पास एककी चार भिड़ाई। निदान रावजी एक बलवान राठौड़ सेना लेकर जैसलमेर पर चढ़ गये और लड़ाईमें देवीदासको बन्दी बनाकर लाला चारणके वचनका निबाह दिया किंतु घड़सीसरके अजेय दुर्गपर राठौड़ सेनाको दो महीनेतक घेरा डाले रहना पड़ा था।

राव लूणकरणजीने केवल जातीय बलकी जोम जाहिर करनेके लिये देवीदासको पकड़ा था। अस्तु उक्त चारणका मुकाबिला कराकर उसे जैसलमेरको भेज दिया और आप बीकानेरको चले आये। देवीदास भी अपने इस अपमानका बदला लिये विना कब रह सकता था, उसने गुप्तरूपसे सिंधके नबाबकी सेना सहायताके लिये मँगाकर राठौड़ सेनापर आक्रमण कर दिया। इधर ठीक लड़ाईके समय बीदावत सरदार अपनी सेना सहित मोरचेपरसे चाल चल गये। इस कारण अपने तीन महाराज कुमारों सहित राव लूणकरणजी इसी लड़ाईमें काम आये। यह लड़ाई मुकाम दोसीमें

संवत् १५८३ श्रावण बदी ४ को हुई थी। रावजीकी मृत्युका समाचार पाकर उनकी तीन रानियाँ बीकानेरमें सती हुईं.

राव लूणकरणजीके नौ पुत्र थे जिनकी नामावली नीचे देते हैं।

नाम		वंश
१ जैतसी	...	राज्याधिकारी हुआ।
२ प्रतापसी	...	प्रतापसिंहोत बीका।
३ बीरसी	...	इसके पुत्र नारनकी संतानके नारनौत गीका
४ रतनसिंह	...	कहलाते हैं।
५ तेजसिंह	...	पट्टेदार महाजन वर्तमान ठाकुर हरीसिंहजी।
६ करनसी	...	तेज सिंहोत बीका।
७ किशनसिंह	...	Heirless.
८ खुशहालसिंह		
९ रूपसिंह	...	निःसन्तान।

राव लूणकरजीका छठा पुत्र करणसिंह अपने सब भाइयोंमें शिरोमणि था। वह स्वयं जैसा विद्वान् गुणवान् और चतुर पुरुष था वैसाही उदारचित्त और गुणग्राहक भी था। एक समय एक चारणने उसकी प्रशंसामें निम्न सोरठा पढ़ा:-

सोरठा।

तू दूंजो संसार, माटीसूँ गढ़ियो मँडल।
तू गढ़ियो करतार, कायाहसूं करणसी॥

इस पर करणसीने एक करोड़ रुपयेका पसाव कविको दान दिया किंतु जो कुछ पास था उसे दे चुकने पर भी जब एक करोड़की जमा न पूरी हुई तब उसने कीर्तिसिंह नामक अपने एक पुत्रको कविके हवाले किया। कविने उस कुमारका सिरोहीके एक ठाकुरकी बेटीसे विवाह करवाया था जिसकी औलादके आज कल इस रियासतमें कीर्तिसिंहोत बीका हैं.

(१) इस राठौड़के इतिहासमें पुत्रको दान करनेकी यह एक अनुपम और अंतिम घटना है।

राव जैतसीजी ।

* कर्नल टाड लिखते हैं कि राव लूणकरणजीके तीन पाटवी राजकुमारोंमें रतनसिंहजी सबसे बड़े और अपने पिताके उत्तराधिकारके अधिकारी थे, किन्तु उन्होंने लूणकरणजीके सामने ही पिताकी गद्दीपर बैठनेसे अनिच्छा प्रगट करके एक सौ चवालीस गांव महाजनकी जागीरमें अलग कटा लिये थे। अस्तु राव लूणकरण-जीके उक्त लड़ाईमें मारे जानेके पश्चात् श्रावण बदी ९ संवत् १५८३ (सन् १५२६ ई०) में राव श्री जैतसीजी ३७ वर्षकी अव-स्थामें बीकानेरकी गद्दीपर बैठे। इनका जन्म संवत् १५४६ कार्तिक बदी २ को हुआ था।

राव जैतसीजीको गद्दीपर बैठे अभी थोड़े ही दिन हुए थे कि ठाकुर उदयकरण बीदावत, जिसके मोरचेपरसे हटजानेके कारण राव लूणकरणजी उक्त लड़ाईमें मारेगये थे, मृत रावजीकी छतरीपर कुछ दान पुण्य करनेके बहाने छलसे राज्यका अनिष्ट करनेकी इच्छासे बीकानेरको आया। किन्तु रावजीने उसे बीकानेरकी सरहद पदा-क्रान्त करनेके पहले ही उलटा लौटा दिया और पीछेसे आप खुद कुछ फौज लेकर द्रोणपुर पर चढ़गये। निदान उदयकरण तो भागकर नागौरके नवाबकी शरणमें रहने लगा और जैतसीजीने द्रोणपुरका पट्टा राव सलगाके नाम करादिया और उसे हिंसारकी सरहदपर आवाद उन जोइया लोगोंको दमन करनेके लिये भेजा जो उक्त उदयकरणकी भाँति जैसलमेरकी लड़ाईसे धोखा देकर भाग आये थे। सलगाजीकी चढ़ाईकी खबर पाकर जोइयोंका नेता जैनपाल तो लाहौरको भाग गया और उस भूमिपर सदाके लिये राठौड़ोंका कब्जा होगया।

Noonkaran made * * * frontier. He had four sons; his eldesf desiring a separate establisment in his life time, for the fief of Mahajan and one hundred & forty villages, renounced his right of primogeniture in favour of his brother Jaitrao.

कहा जा चुका है कि यह एक प्रकारसे अराजकताका समय था न्याय विचार, शासनयोग्यता, स्वत्वाधिकार और पारस्परिक-ऐक्य ये चारों अमूल्य रत्न राजपूतोंके हाथमें होते हुए भी दुर्दैववशात् वे मिट्टीमें मिलते जाते थे। प्रत्येक राज्यमें यह एक साधारण प्रथा होरही थी कि जब कभी कोई राज्याधिकारी कालकवलित होता तो उसका उत्तराधिकार प्राप्त करनेके लिये उसीके पुत्र या अन्य कुटुंबी-जन राजविप्लव करके परस्पर रक्त प्रवाह किये बिना न रहते। इस लेखमें जिस समयसे हमारा संबन्ध है उसमें राव पृथ्वीराज आमेर राज्यका शासक था। उसके दो पुत्र थे-रतनसिंह और सांगाजी। पृथ्वीराजका देहान्त होने पर रतनसिंह आमेरकी गद्दीपर बैठे। तब सांगाजी जो कि मृत राव लूणकरणजीके दामाद होते थे बीका-नेरसे मदद माँगनेके लिये दौड़े आये। इसपर राव जैतसीने पंद्रह हजार राठौड़ सेना सांगाजीके साथ कर दी जिसके बलसे उन्होंने रतनसिंहजीको मारकर आमेर राज्यपर अपना कब्जा करलिया। अभी यह मामला ठंढा भी न होने पाया था कि मारवाड़ राज्यके जोधपुरमें इसी गद्दी नशीनीके लिये वंशाग्नि प्रज्वलित हुई। जोधपुरके राव सूजोजीकी मृत्युके पश्चात् संवत् १५८५ में जब उसका पोता गांगाजी गद्दीपर बैठा तो उसके चाचा सेखाजीने आप मारवाड़का मालिक होना चाहा। इसके लिये उसने नागौरके नवाब दौलतखांसे मदद माँगी और बीस हजार मुसलमान सेना लेकर वह गांगाजीके बिरुद्ध युद्ध करनेको सन्नद्ध हुआ। तब गांगाजीने बीकानेरको समाचार भेजा। निदान यहाँसे राव जैतसीजी स्वयं छः हजार फौजके साथ

(१) कर्नल टाडकृत अंग्रेजी राजस्थानमें सूजाजीकी मृत्यु एवं गांगा-जीके गद्दी नशीन होनेका संवत् १५७२ सन् १५१६ ई० लिखा है।

(२) टाड साहबने लिखा है कि यह वही दौलतखां लोदी था जिसने बाबरको काबुलसे बुलाया था और नागौर राज्यको राठौड़ोंके हांथसे छीनकर मालिक बन बैठा था किन्तु यह बात ठीक नहीं है। यह दौलतखां गुजरातके बाद-शाहोंकी शाखामेंसे टाक जातिका मुसलमान था और खानाजादा कहलाता था। गजख्यातमें खोखर लिखा है शायद यह 'खोकर' खानजादेका ही अपभ्रंश हो।

गांगाजीकी मदद पर गये । कई दिनों तक लड़ाई होती रही । अन्तमें मुसलमान सेना मनहार होकर मोरचेपरसे चालदेगई । इस कारण मैदान जैतसीजीके हाथ रहा । कहा जाता है कि सेखाजी खुद रावजैतसीजीके हाथसे काम आया था ।

बीकानेरसे १४४ मील उत्तरको भटनेर[1] एक स्थान है जो इस समय हनुमानगढ़के नामसे प्रसिद्ध है । बीकानेर राज्य स्थापित होनेके समय यह स्थान चाइल राजपूतोंके हाथमें था किन्तु राव लूणकरण-जीके शासन समयमें काँधलजीके पुत्र हुक्मसिंहने भटनेर किलेको अपने कब्जेमें करके राज्य बीकानेरमें मिला लिया था । भटनेरमें इस समय एक श्रीपूंज[2] नामक जैन यती रहता था । वह राठौड़ोंके कुछ

---

(१) ख्यातमें लिखा है कि इस किलेकी नींव भरथजीने डाली थी-इसलिये इसका पुराना नाम भरथनेर था । एक हजार वर्ष पहिले यहांपर जोइयोंका कब्जा था, उनसे इसे चंगेजखांने लिया, चंगेजखांसे भाटियोंके हाथ आया और भाटियोंसे यह स्थान चाइलोंने लिया । किन्तु हालके इम्पीरियल गजीटियरमें मुसलमान तवारीखोंके आधारपर लिखा है कि शायद यह वही भटींडा है जिसपर सन् १००४ में महमूद गजनवीका आक्रमण हुआ था । सन् १३९८ में भटनेरपर तैमूरका कब्जा हुआ, फिर भाटी धवलचन्दने तैमूरिया खानदानमें अपनी बेटी व्याहनेसे यह स्थान जागीरमें पाया । इसके बाद सन् १५२७ में यहांपर राठौड़ोंका राज्य होगया किन्तु सन् १५३९ में कामरांने उसे राठौड़ोंसे छीनलिया और बीस वर्ष तक यह स्थान हिसारके सूबेदारके ताबेमें रहा पर सन् १५६० में यहां फिर राठौड़ोंका राज्य हो गया। यों एक सरहदका किला होनेसे कभी इसे मुसलमान दबालेते कभी राठौड़। आखिर सन् १८०५ में दरबार बीकानेरने भाटी सरदार जावताखांको परास्त कर सदाके लिये भटनेरपर अपना निशान गाड़ दिया । यह फतह मंगल-वारके दिन हुई थी इसीसे भटनेरका नाम हनुमानगढ़ रखा गया और आजकल वह इसी नामसे प्रसिद्ध है ।

(२) तथा गच्छ श्री पूज भीवदेव सूरि एक बड़ा विद्वान् पुरुष था । उसके समयके बहुतसे संस्कृत ग्रंथ-जो कुछ धर्मके और कुछ तन्त्रमन्त्र शास्त्रके हैं-वर्तमान दरबार श्री गङ्गासिंह साहबने हनुमानगढसे मंगाकर राज्यके संस्कृत पुस्त-कालयमें जमा कराये हैं । इनमें कोई २ पांच सौ वर्ष पहलेके लिखे हुए हैं ।

अनुचित व्यापार या हस्तक्षेपसे रुष्ट होकर दिल्लीको भाग गया और हुमायूँके भाई कामरांसे उसने कहा कि मरुभूमि और पंजाब प्रान्तकी सीमापर स्थित किला भटनेर आपके हाथमें आजानेसे सिंध और गुजरातको दबानेका अच्छा अवसर हाथ आवेगा। इसपर कामरां एक शहजोर सेना लेकर भटनेरपर चढ़ आया और उक्त किलेपर अधिकार करलेनेके पश्चात् वह बीकानेरकी तरफ अग्रसर हुआ। यह समाचार पाकर राव जैतसीजी भी राठौड़ सेना लेकर आगे बढ़े। एक दिन जब कि मुसलमानी सेनाका पड़ाव मौजा छात्रियाँके पास था राठौड़ सेनाने रात्रिको छापा मारा जिससे कामरांकी बडी हानि हुई और उसे दिल्लीको उलटा फिर जाना पड़ा।

इधर अपने पिता राव गांगाको मारकर जब राव मालदेव जोधपुरकी गद्दीपर बैठा तब उसने सबसे पहले बीकानेरको अपने राज्यमें मिला लेनेकी इच्छासे बीस हजार फौज इकट्ठी की और वह बीकानेरपर चढ़ आया। बीकानेरसे थोडी दूरपर गांव सोहाके पास जोधपुरकी फौजका पडाव था। इधरसे राव जैतसी भी यथाशक्ति लाव लशकर लेजाकर मुकाबिले पर आ डटे। दोनों रावोंमें परस्पर दूतों द्वारा बातें हो रही थीं कि इसी बीचमें बीकानेरके कुछ सरदार राव मालदेवसे मिल गये। जब सुलहकी बातें कोसों दूर देख पड़ीं और हथियार चलनेका मौका आगया तो रावजीको एक रात्रिके लिये जंगी पड़ाव छोडकर किलेका इन्तजाम करनेके निमित्त बीकानेरको आना पड़ा। इस समय उक्त दगाबाज सरदारोंने मौका पाकर रावजीके भागजानेकी गप्प उडा दी जिससे अन्यान्य सरदार और सिपाही लोग भी उदास होकर मैदान जंगसे तीन तेरह हो गये। प्रातःकाल जब रावजैतसीजी पडावपर पहुँचे तो वहाँ मैदान खाली पाया। इसपर इनके साथवालोंने इन्हें समझाया कि अब कोटको लौट चलना उचित है किन्तु राठौड़वीर जैतसीजीने कायरोंकी भांति भागकर कलंकित होनेसे वीरोंकी भाँति रणक्षेत्रमें मरना ही श्रेयस्कर समझा। वे यह भी समझते थे कि कोटको लौट जानेसे कुछ फल न होगा, राव मालदेव वहां भी आक्रमण करेगा और अंतमें फिर भी मारने मरनेसे

काम पडेगा । इस समय रावजीके साथ कुल सौ सिपाही पैदल और २७ सवार थे । उन्हींके साथ इन्होंने जोधपुरी फौजपर आक्रमण किया । कहाँ सौ कहां वीस हजार वे उनमें दालका नमक थे । निदान थोडी दूर रणप्रवाह होनेके बाद राव जैतसीजी अपने सब साथियोंसहित काम आये । यह बात चैत बदी ११ संवत् १५९८ सन् १५४२ ई० की है । रावजीके साथियोंमें लखनसी प्रोहित बड़ी वीरतासे काम आया था ।

राव जैतसीके मारेजानेपर राव मालदेवने बीकानेरके किलेपर हमला किया । *

भोजराज साँखला यहांका किलेदार था । उसकी इच्छा थी कि रनिवासको हिसार भेजकर किला खाली कर दिया जावे किन्तु इस बातका अवसर न मिल सका । निदान रावजीकी सात रानियाँ तो सती हो गईं, शेष स्त्रियोंने जाहर व्रत किया और१५००आदमी जो किलेमें थे केसरिया बागे पाहिन करोंमें रण कङ्कण बांध किलेका दरवाजा खोल

(१) पुराना किला जूनागढ, जहां लक्ष्मीनारायणका मन्दिर है ।

* राव जतसीजीके बेटोंकी नामावली :

कल्याणसिंह..................राज्याधिकारी हुए.
भीमराज ....इसकी सन्तानके भीमराजोतबीका है.
ठाकुरसी ....इनको सीदमुख मिला और इन्होंने जैतपुर वसाया.
कान्हजी ....
मालदेव ....
सिरंगजी..................सिरंगोतवीका मूरिस हैं,
सिरजनसी..................सिरजनसर आवाद किया
कुवरसेनजी
पूरनमल
अचलदास
मानजी
भोजराज
तिलोकसी

कर हर हर कहते हुए मरने मारनेको निकल पडे । वे सब एक एक करके कट मरे और किलेपर जोधपुरी फौजका कब्जा होगया ।

राव कल्याण सिंहजी ।

ख्यातमें लिखा है कि जिस समय राव मालदेवने राव जैतसीजीको मारकर बीकानेरके किले पर अधिकार करलिया था उस समय राव कल्याणसिंह बीकानेरमें नहीं थे । वह पिताकी आज्ञानुसार राणा सांगाके पक्षपर बयानातकी उस लडाईमें गये थे जिसमें विजय पाकर बाबरने हिन्दुस्तानमें मुगल बादशाहतका बीज बो दिया । बयानासे लौटकर जब कल्याणसिंहजीने अपने घरको शत्रुके हस्तगत पाया तो यह सिरसामें रहकर कालक्षेप करने लगे । यहां और कोई तो नहीं केवल गोदारा संप्रदायके जाट नेतोंने इन्हें अपना राजा मान कर तिलक किया और वह इनको आवश्यक आर्थिक सहायता भी देता रहा । उधर जब बाबरके मरनेपर हुमायूँ दिल्लीके तख्तपर बैठा तब राव कल्याणसिंहजीके छोटे भाई भीमराज पचास सवार लेकर शाही नौकरी करनेकी इच्छासे हुमायूंके दरबारमें हाजिर हुए । हुमायूंने इनको शेरखाँकी मातहतीमें शाही फौजमें नौकरी देदी । इतनेमें बीरमदेव मेड़लिया ठाकुर जिसकी जागीरको मालदेवने खालसा करके उसे राज्यसे निकाल दिया था भीमराजसे जा मिला । भीमराजने बीरमदेवको भी शाही लशकरमें नौकरी दिला दी । अतः ये दोनों राठौड़ ठाकुर बड़े मित्रभावसे रहने और येन केन प्रकारेण अपनी पैतृक भूमिको सबल शत्रुके हाथसे उद्धार करनेके सुअवसरकी प्रतीक्षा करने लगे ।

इसी अर्सेमें जब कि हुमायूँ अपने मुगल और तुर्क सिपाहियों सहित बंगालकी तरफ गया हुआ था शेरखांने बगावतका डंका बजाया और हुमायूंको हिन्दुस्थानसे निकालकर जब वह शेरशाह सूरके लकबसे दिल्लीके तख्तपर बैठा तब तक उक्त दोनों राठौड बीर बीरमदेव और भीमराज उसके साथ थे । बादशाहत पाने या तख्त नशीनीकी खुशीमें जब शेरशाहने अपने सब मातहतोंको इनाम देना

शुरू किया तब इन दोनों राठौड़ोंने उससे अपनी वास्तविक इच्छा प्रगट की जिसपर उसने इनको आश्वासन देकर कहा कि तुम लोग मय राव कल्याणसिंहके अजमेरके मुकाम पर हमसे मिलो।

जब भीमराजने कल्याणसिंहसे आकर सब समाचार कहा और इस बातका इधर उधर शोर हुआ तो बीकानेर राज्यके अन्य सब पट्टेदार तथा वे सरदार भी जो राव जैतसीजीसे फूटकर मालदेवसे मिलगये थे सब आपसे आप कल्याणसिंहजीके पास आये। इनसे राव कल्याणसिंह बडी उदारतापूर्वक मिले और विगत घटनाके असमंजसको इस तरहसे विस्मरण करादिया मानो कभी कुछ हुआ ही नहीं यह देखकर सब राजपूत सरदार कल्याणसिंहजीके साथ मरने मारनेपर मुस्तैद हो गये। इस प्रकार कोई छःहजार राठौड़ सेना लेकर राव कल्याणसिंहजी अजमेरमें शेरशाहसे जा मिले। अजमेरके पास ही राव मालदेव और मुसलमानी लशकरसे लडाई हुई जिसमें राव मालदेवको हार मानकर भागना पडा और जोधपुरके किलेपर मुसलमानी सेनाका निशान फहराने लगा। अजमेरसे चलकर राव कल्याणसिंहजी जब बीकानेरमें आये तो यहां किला खाली पाया। इसलिये उन्होंने सरलतापूर्व्वक अपने पैतृक स्वत्वपर पुनराधिकार प्राप्त करलिया। इतना ही नहीं, नीति निपुण कल्याणसिंहने शाही मित्रताका सुअवसर पाकर केवल अपनी प्राचीन सीमाका ही उद्धार नहीं किया वरन सिरसा, फतेहाबाद, हिसार और सिबानी आदि जिलोंकी बहुतसी उपजाऊ भूमिभी बीकानेर राज्यकी सीमामें मिला ली।

भटनेरका किला इस समय शाही जेर निगरानीमें चाइल राजपूतोंके हाथमें था। भटनेरके पास सीदमुख या अजीतपुरामें राव कल्याणजीके एक भाई ठाकुरसी रहते थे। इन्होंने अवसर पाकर भटनेरके भूमियां एक तेलीकी सहायतासे रात्रिके समय किलेपर धावा करदिया और किलेवालोंको एक एक करके मार कर भटनेर पर अपना दखल कर लिया। यह बात सन १५३८ ई० की है। इसके बाद बीस वर्षतक भटनेरका किला बीकानेर राज्यमें रहा पर सन् १५६० ई० में जब कि दिल्लीके तख्तपर जलालुद्दीन महम्मद

अकबर सुशोभित था भटनेरके पास कुछ शाही खजाना लुटगया और उसके लूटनेका संदेह उक्त ठाकुरसीपर किया गया। इस कारण हिसारके सूबेदारने फौज भेजकर किला राठौड़ोंसे खाली करवा लिया। थोड़ेही दिनोंमें ठाकुरसीका पुत्र बाघसिंह अकबरके दरबारमें हाजिर हुआ। वह बड़ाही धीर वीर और साहसी पुरुष था। उसने अकबरके सामने निरस्त्र अवस्थामें एक सिंहको चीरकर दो फाँककर दिया और एक मुलतानी कमान जो किसीसे उठती भी नहीं थी उसे चढ़ा लिया। उसकी यह बीरता देखकर अबकरने भटनेरका किला पुनः उसीको दिला दिया।

एक फारसी तवारीख तवकात अकबरीसे जाना जाता है कि सन् १५७० ई० में जब अकबरने राव मालदेवके विरुद्ध नागौरपर आक्रमण किया था तब राव कल्याणसिंह मय अपने पुत्र रायसिंहके उससे जा मिले थे। वहांसे फतह पानेपर अबकरकी राव कल्याणसिंहजीपर विशेष कृपा हुई और इसके उपलक्ष्यमें रावजीने अकबरको अपनी बेटी विवाही। स्मरण रहे कि राठौड वंशका मुसलमानोंसे रिश्तेदारीका सिलसिला डालनेका यही प्रथम अवसर था। नागार फतह करनेके बाद जब अकबर अयोध्याकी तरफ गया, तब राव रायसिंहजी तो इस मुहिममें न जा सके पर युवराज कुमार उचित सेवा करके अकबरके विशेष कृपापात्र होगये जिसका वर्णन आगे यथास्थान दिया जायगा।

इस प्रकार अपनी खोई हुई पैतृक भूमिपर पुनः अधिकार प्राप्त करके और अपनी आन्तरिक निर्बलता देख कर सबल सम्राटसे दृढ़ संबंध कर राजधानी बीकानेरको सुरक्षित अवस्थामें छोड़कर राव कल्याणसिंहजी बैशाख बदि ५ सं. १८२८ मुताबिक सन् १५७१ ई० को स्वर्गवासी हुए।

दूसरा खंड समाप्त।

श्रीः ।

बीकानेर राज्यका इतिहास ।

तीसरा खंड.

राजा रायसिंहजी ।

पूर्व दो खंडोंमें एक राजपूत राजवंशकी उस अवस्थाका उल्लेख किया जा चुका है जिसमें जगद्विजयी राजपूत जातिके क्रमशः अधः-पतन और अद्यावधि जातीय जीवनकी स्थितिके हेतु विद्यमान हैं। बिचारशील पाठक समझ सकते हैं कि यद्यपि राठौड़ लोग क्षत्रिय जातिकी प्राचीन रीति नीतिसे च्युत होकर प्रति दिन स्वार्थान्ध होते जाते थे पर जातीय स्वतंत्रताको, प्रेम तथा धार्मिक मर्य्यादाको उन्होंने अब भी नहीं त्यागा था। वे चप्पा चप्पा भर जमीनके लिये भाई भाई और बाप बेटे परस्पर शत्रु हो बैठते थे, परंतु जब कभी किसी विदेशी या विजातीय शत्रुके आक्रमणकी आशंका होती तो वे जातयि स्वत्वोंकी रक्षाके लिये फौरन प्रायः इकट्ठे होजाते थे।

आजकल यह निश्चय करना कठिन है कि राठौड़ वंशके सौभाग्यवश या दुर्भाग्यवश विक्रमी सोलहवीं शताब्दिके उत्तरार्धमें प्रकृतिदेवने राठौड़ोंकी जातीयस्वतंत्रता पर भी परदा डाल दिया और तब वे एकमात्र धार्मिक मर्यादाके आधारपरही, सदाकी भाँति उद्दंड और स्वावलंबी रहनेमें असमर्थ होकर अपने पूर्व पुरुषोंका निर्वाणोन्मुख नाम और वंशका बीज संसारमें सदा बनाये रखनेके लिये अपने जातीय बल पौरुष पराक्रम और बीरताको एक यवन विजेताके हाथ बेचदेनेपर विवश हुए। प्रसंग वशात् यहांपर यह कहना कदापि अनुचित न होगा कि आजकाल राठौड़ वंशका जो कुछ वैभव और विस्तार देख पडता है उसका हेतु एकमात्र सनातन हिंदु धर्मकी मर्य्यादाको ही समझिये।

द्वितीय खंडकी इतिमें उल्लिखित राव कल्याणसिंहजीका स्वर्गवास होनेपर उनके ज्येष्ठ पुत्र रायसिंहजी बीकानेर राज्यके सिंहासनपर सुशोभित हुए ।

ख्यातमें इनका जन्म संवत् १५९८ (सन् १५४१ ई०) श्रावण बदी १२ लिखा है और संवत १६२८ (सन् १५७१ ई०) वैशाख सुदि १ आपके गद्दी पर बैठनेकी तिथि है ।

जिस समय बीकानेरमें राव रायसिंहजी सिंहासनासीन हुए उस समय दिल्लीके साम्राज्य-सिंहासनपर मुगलवंश-विभूषण जल्ल जलालहू जलालुद्दीन महम्मद अकबर बादशाह विराजमान था । हिन्दुस्तानके विशाल साम्राज्यका सूत्र हाथमें आते ही अकबरको सौभाग्यवश वे मुसाहब भी सलाहके लिये मिल गये थे जिनके कारण शेरशाह सूर एक निर्दयी शासक होकर भी दिन प्रति वैभव शाली और सर्वप्रिय होता जाता था । अकबरके शासनका मूल सिद्धान्त यही था कि साम दान दंड भेद जिस प्रकारसे हो राज-पूतोंको अपने पक्षमें करलेना ही मुगल-साम्राज्यकी स्थितिके लिये कल्याणकर है । अस्तु सबसे पहले आमेरके महाराज भगवानदास उस नीतिचतुर सम्राटके मनोरथ की सफलतामें अग्रसर हुए थे । इसीसे आमेर राज्यका बल वैभव अब दिन दूना प्रदीप्त होने लगा था ।

आमेर यानी जयपुर, जोधपुर और बीकानेर इन तीनों राज्योंकी सीमाएँ परस्पर एक दूसरेसे मिलती हैं । अतः आमेर राज्यने जब अपनेको सबल साम्राज्यकी मित्रतासे विशेष बलशाली बना लिया तब आमेरके युवराज मानसिंहने अपने सहयोगी राज्य जोधपुर और बीकानेरको दमन करनेकी इच्छासे छः हजार फौजके साथ पहले बीकानेर पर चढ़ाई की । यदि जोधपुर और बीकानेर दोनों राठौड़ राज्योंमें परस्पर मित्रभाव होता तो मानसिंहका साहस व्यर्थ हो जाता किंतु होनहारवश घरकी फूटका अन्तिम परिणाम यह हुआ कि कछवाहोंके साथ साथ राठौड़ वंशभी यवन सम्राट्की सेवामें सर्वस्व समर्पण करनेको सन्नद्ध हुआ ।

जब राव रायसिंहजीने देखा कि यवन सम्राट्की फूट नीतिसे प्रेरित एक सहयोगी राजपूत राजा शत्रु बनकर शिरपर चढ़ आया है और अपने सगे भी इस राज्यको ग्रासकरनेकी चेष्टामें रहते हैं तब उन्होंने मानसिंहजीसे संधि कर ली और उन्हींकी सलाहके अनुसार राव रायसिंह कुछ राठौड़ सेनाके साथ अजमेरके मुकामपर अकबरसे जा मिले[1]। बादशाह इनसे बडे आदर भावके साथ मिला। जब अकबर दिल्लीको रवाना होने लगा तो उसने कुछ सहायक सेना देकर राव रायसिंहजीको नागौरकी मुहिमपर भेजा। एक तो सरहदी मामला दूसरे सम्राट्की आज्ञा, बस रायसिंहजीने बड़े बेगसे नागौरपर आक्रमण किया और पहली ही लड़ाईमें नागौरके खानको परास्त कर वहांपर शाही निशान गाड़ दिया।

अबतक बीकानेर राज्य साधारण अवस्थामें था किन्तु साम्राज्यका सहारा पानेसे अब इसकी दिनदिन उन्नति होने लगी। बादशाह अकबरने राव रायसिंहजीको एक वीर और विशाल बुद्धि पुरुष जानकर कुमार मानसिंहजीकी मातहतीमें अटककी मुहिमपर भेजा। वहांपर पठानोंने इस बीरतासे अपना बचाव किया कि राजपूत सेनाको हार मानकर अन्तमें पीछे हटना पड़ा। तब अकबरने स्वयं बड़े भारी दलबलके साथ अटक पार जाकर विजय प्राप्त की। यहांसे वापिस आकर रावजी कुछ दिन बीकानेरमें रहकर पुनः दिल्लीको पधारे। बादशाह अकबरने रावजीको एक योग्य पुरुष समझकर मेवाड़ और गुजरातकी सीमाकी रक्षाके लिये भेजा। इन्हीं

(१) कर्नल टाड साहबने लिखा है कि राव कल्याणसिंहजीका देहान्त होने पर राव रायसिंहजी स्वयं अपने पिताकी भस्म सिरानेके लिये गङ्गाजीको गये थे। वहांसे लौटते समय रायसिंहजी दिल्ली होकर आरहे थे कि आमेरराज मानसिंहजीने इनको शाही दरबारमें लिवा जाकर अकबरसे इनका परिचय कराया। बादशाह अकबर और राव रायसिंहजी जैसलमेरके सम्बन्धसे परस्पर साढू साढू होते थे इसलिये रावजी शीघ्र ही बादशाहके विशेष कृपापात्र हो गये। किन्तु राजकी ख्यातमें इस बातका कोई जिक्र नहीं है। वरन दलपतसिंहजीके बयानमें यह बात मिलती है।

दिनोंमें अहमदाबादका हाकिम मिरजा महम्मद हुसेन शाहीशासन नियमोंके विरुद्ध आचरण करने लगा । तब रावजीको अहमदाबादपर चढ़ाई करनेकी आज्ञा दी गई । राव रायसिंहजीने शाही आज्ञा शिरोधार्य्य कर अहमदाबादके किलेको जा घेरा । कई दिन तक घोर युद्ध होता रहा । अन्तमें मिरजा महम्मद खुद राव-जीके हाथसे मारा गया और किलेपर राठौड़ सेनाका कब्जा होगया। इस लड़ाईमें राठौड़ सेनाकी बहुत हानि हुई । अगणित राजपूत सिपा-हियोंके सिवाय ३१ राठौड सरदार काम आये थे, पर लूटका माल और खजाना इनके हाथ अच्छा लगा । अहमदाबादको विजय करके दिल्ली आनेपर बादशाहने रावजीको एक खिलत और जागीरके फर्मा-नके साथ राजाका खिताब अता फरमाया । रावजीके छोटे भाई रामसिंहने भी इस लड़ाईमें बड़ी वीरता प्रगट की थी इसलिये उन्हें

(१) अंग्रेजी इतिहासकार मिस्टर टाडने तबकात अकबरीके आधारपर लिखा है--मिरजा महम्मद हाथीसे गिरकर घायल अवस्थामें रावजीके समीप लायागया तो राव जीने अपनी तलवारसे उसके दो टुकडे कर दिये किन्तु राज-पूतोंके जातीय नियमके विरुद्ध यह बात विश्वसनीय नहीं है । उस समय घायल और बंदीपर हाथ चलाना महा पाप समझा जाता था ।

(२) शाही दरबारसे जागीरमें मिले हुए परगनोंकी सूची ख्यातमें यों लिखी है ।

नाम सूबा	नाम परगना	तादाद रकम आमदनी
बीकानेर	बीकानेर	३२५००००
	बारनद	६४०००० दाम
हिसार	बारथल	९८००३२ दाम
	सीदमुख	७२१५२ दाम
अजमेर	द्रोणपुर	७२१३८६ दाम
भटनेर	भटनेर	९३२७४२ दाम
	मारोठ	२८०००० दाम
सरकर सूरत	जुनागढवा ४७ दीभर परगनाजात	३२२६९९६२ दाम

भी मनसब और जागीर शाही दरबारसे दी गई। इस खिताब और फर्मानके मिलनेकी तारीख ख्यातमें सन १५९९ ई० लिखी है।

जोधपुरमें राव मालदेवकी मृत्युके पश्चात् उसका पुत्र चंद्रसेन भी अपने पिताकी भाँति यवन सम्राटसे घृणा करता था। अतएव अकबरने राजा रायसिंहजीको नागौरका परगना देकर जोधपुरपर दखल करनेकी आज्ञा दी। रावजीने चन्द्रसेनको परास्त करनेके लिये यथासाध्य चेष्टा की किन्तु सफल मनोरथ न होसके। निदान यह सन १५७६ ई. में दिल्लीको बुलालिये गये और शाहबाजखां एक उद्दंड यवन सेनाके साथ जोधपुरपर चढ़ आया। अभी एक वर्ष भी समाप्त न होने पाया था कि सिरोहीके मालिक राव सुरतानने शाही नियमके विरुद्ध सिर उठाया इसलिये रायसिंहजी सिरोही पर भेजे गये। रायसिंहजी एक बलवान राठौड सेना लेकर आबूको गये और अचलगढ़के किलेको जहां राव सुरतान रहते थे जा घेरा। किलेमें घिरकर कुत्तेकी मौत मरना पसंद न करके सुरतान भी मैदानमें आगया। परन्तु राठौड सेनाने सिरोहीके सिपाहियोंको मार भगाया और राव सुरतानको महाजन और द्रोणपुरके ठाकुरोंने गिरफ्तार कर लिया।

राजा रायसिंहजी जैसे वीर और बुद्धिविशारद थे वैसेही दयार्द्र और उदारहृदय भी थे। उक्त राव सुरतान नौहर गढ़के किलेमें कैद था। दूदा नामक एक चौहानोंका भाट दरबारमें आया और उसने अचलगढ़की लडाईको वीररसके छन्दोंमें वर्णन करते हुए बडे गंभीर शब्दोंमें दर्शाया जिसमें राजा रायसिंहजीके शस्त्राघातसे सुरतानका एक दाँत टूटगया था। कविके काव्य-कौशलपर प्रसन्न होकर राजाजीने कहा तुझे जो कुछ चाहिये माँगले। इस पर उसने प्रार्थना की कि यदि आप प्रसन्न हैं तो राव सुरतानको छोड दीजिये। रावजीने उसी समय सुरतानको बन्धनमुक्त करादिया, यही नहीं वरन चारणके आग्रहसे अपने छोटे भाई पृथ्वीराजकी बेटी भी राव सुरतानको ब्याह दी। राजा रायसिंहजीके दान और विद्वत्ताकी इसी प्रकारकी कई बातें ख्यातमें लिखी हैं। वह मेवाडमें

जब अपने राजकुमारको व्याहने गये थे तो ५०० घोडे और ५० हाथी चारणोंको बखेर दिये थे। एक बार एक कविको एक कवित्तपर खुश होकर एक करोडका पसाव दिलाया। पर कविको इतना रुपया देनेमें जब कामदारोंने आनाकानी की तब सवाकरोड रुपये रावजीने अपने सामने ही उसे दिलवाये।

कर्नल टाड साहब लिखते हैं कि जिस समय राजा रायसिंहजी अपनी राठौड़ सेना सहित शाही आज्ञा पालनमें लगे हुए प्रायः बीकानेरकी सीमासे बाहर रहते थे, उस समय सिवानेके आसपासके जोइया भाटी और चंद जाट सरदारोंने परस्पर एका करके राज विद्रोहका झंडा उडाया। यह देखकर राजा साहबके छोटे भाई रामसिंहजी निज पैतृक राज्यकी रक्षा करनेपर सन्नद्ध हुए और उन्होंने शीघ्र ही समस्त विद्रोहियोंको दमन करके राज्यमें अमन चैन स्थापित करादिया। इस विद्रोहदमनमें रामसिंहजीकी बुद्धिमानी और वीरताका विशेष नाम होगया यहांतक कि इन्हींके बलके भरोसे राजा रायसिंहजीने पुनः जोधपुरपर आक्रमण करनेका साहस करके अकबरसे आज्ञा मांगी, और संवत् १६३५ मुताबिक सन् १५७८ ई० में राजा रायसिंहजीने चंद्रसेनको परास्त करके जोधपुर पर अधिकार करलिया। राजा रायसिंहजीने कुछ दिन स्वयं जोधपुरमें रहकर राज्यका जब अपनी तरफसे पूर्ण प्रबंध करलिया, तब अकबरकी आज्ञानुसार राजा उदयसिंहको जो सदासे साम्राज्यके पक्षपाती रहते आये थे—जोधपुरकी गद्दीपर बिठाकर आप बीकानेरको चले आये। इस लड़ाईमें चंद्रसेनी नगाडा और फौजी निशान आदि कई चीजें जो राव रायसिंहजी जोधपुरसे लाये थे अबतक बीकानेरमें मौजूद हैं। बादशाहकी तरफसे नागौरका परगना इस सेवाके पुरस्कार स्वरूप राजा रायसिंहजीको दिया गया।

इसके बाद संवत् १६४२ से संवत् १६४९ तक राजा रायसिंहजी दाक्षिण प्रान्तमें बुरहानपुरके सूबेदार रहे। इस मौकेपर इन्होंने विद्रोहियोंको दमन करके सम्राट्की प्रसन्नता प्राप्त की और दीन दुखी प्रजाकी रक्षा करके यह प्रजाप्रिय भी होगये। इसी बीचमें इन्होंने

मौका पाकर अपने पास नकदी माल भी खूब जमा करलिया। निदान राजाजीने अपने दीवान करमचंद वच्छावतको बीकानेरके वर्तमान किलेकी नीव डालनेकी आज्ञा दी। तदनुसार संवत् १६४५ में किलेका बनना प्रारंभ हुआ और संवत् १६५० में जब राजा भी दक्षिणकी मुहिमसे बीकानेरको वापिस आये तब किला बनकर तैयार हो चुका था।[1]

राजा रायसिंहजी समयके सच्चे सेवक और नीतिचतुर सरदार थे। अपना तथा अपने ज्ञातिभाइयोंका मस्तक बेचकर उन्होंने जिस सम्राट्की कृपा और सहानुभूतिको प्राप्त किया था उसका वे क्षणमात्रके लिये भी दुरुपयोग नहीं करते थे। वे सदा अपने पुरुषोंकी कमाई हुई सम्पात्तिकी श्री वृद्धि करनेमें दत्तचित्त थे। उधर अकबर भी इस बातसे सदा सचेत रहता था कि उसका कोई मुसाहब कहीं ऐसा सबल न हो जाय कि किसी दिन उसपर भी हाथ फेरनेका साहस कर सके। निदान अकबरने रायसिंहजीकी स्वावलेपताको अधिक स्फूर्ति पाते देख फौरन भेद नीतिका प्रयोग किया। यानी राजाजीके ज्येष्ठ पुत्र दलपतसिंह[2] भाई रामसिंह और दीवान करमचंदको फोडकर राज्यमें दो दल कर दिये। जब राजा रायसिंहजीको यह भेद ज्ञात हुआ,

---

(१) इस किलेकी बाबत ख्यातमें भेडिया और भेड़के बच्चोंकी दंतकथाका उल्लेख है, जैसा कि प्रायः हिंदुस्तान भरके प्रसिद्ध २ किले कोटोंके विषयमें कहा जाता है. अस्तु. उसका उल्लेख करना निरर्थक जान पड़ता है किन्तु यह कह देना परम आवश्यक है कि इस वालुकामय समतल क्षेत्रमें यह स्थान इतना नीचा है कि, इसके एक एक मीलके फासिलेसे भी किसी तरफसे तोप चलाई जाय तो गोला पुराने कोटके ऊपरसे निकल जायगा। कोटमें रहनेवालों-पर कोई जरर नहीं पहुंच सकता।

(२) दलपतसिंहजीका विशेष वर्णन आगे राजा सूरसिंहजीके बयानमें लिखा जायगा।

तो उन्होंने रामसिंहको तो विषप्रयोग द्वारा शान्त कर दिया और दीवान करमचंद बच्छावतको पदच्युत करके रियासतसे निकाल दिया। वह सपरिवार दिल्ली जाकर बादशाहकी सेवामें रहने लगा। यद्यपि करमचन्दने राजा साहबसे नाराज होकर बीकानेर राज्यको ठेस पहुचानेमें अपने वशभर कोई कसर नहीं की किन्तु बुद्धिमान अकबर किसीको बनाकर बिगाड़ना भी नहीं चाहता था इसलिये कोई हानि तो न हुई पर घरमें विरोध होनेसे उन्नतिके मार्गका अव-रोध होगया। मुसलमानी तवारीखोंसे ज्ञात होता है कि सन१५८२ में जब कि अकबरने पहले काबुलपर और फिर बंगालपर चढाइयाँ कीं तब भी रावजी इन हमलोंमें शामिल थे और सन् १५८६ ई० में राजा रायसिंहजीने अपनी बेटी शाहजादे सलीमको व्याही थी, जिसके औरससे अभागे शाहजादा परजेवका जन्म हुआ था[२].

संवत् १६६१ (सन् १६०५ ई०) में अकबरका देहान्त हो जानेपर जब शाहजादा सलीम, जहांगीरके नामसे दिल्लीके तख्तपर बैठा तब राजा रायसिंहजी पुनः दिल्लीको गये। जहांगीरने इनको बड़ी खातिरसे लिया और चारहजारीके स्थानमें पंचहजारी मनसब-का रुतबा इनका बढ़ाया। कहा जाता है कि जिस समय जहांगीर पंजाबकी तरफ कैखुसरोका पीछा करनेको गया था उससमय राजा रायसिंहजीको उसने अपने जनानेकी रक्षापर मुकर्रिर करके लशकरके पीछे आनेकी आज्ञा दी थी किन्तु राजाजीने इसमें अपनी अप्रतिष्ठा समझकर इस सेवासे इनकार किया और बीकानेरको वापिस चले आये। जहांगीर पहले इनपर अत्यंत रुष्ट हुआ किन्तु वहांसे वापिस

(१) ख्यातमें लिखा है कि जोधपुरकी लड़ाईमें रामसिंहके हाथसे एक प्रोहित मारा गया था तबसे इन्होंने हथियार बाँधना छोडदिया था संवत् १६५६ में राजा रायसिंहजीकी एक रानीकी प्रेरणानुसार एक चुरूके ठाकुरने राम-सिंहजीको विष देकर मार डाला।

(२) कर्नल टाड साहबने रायसिंहजीकी बेटीका व्याह सलीमके साथ ही माना है परन्तु यह बात गलत है। रायसिंहजीकी यह बेटी खास अकबरको व्याही थी और वही उसकी राठोड़ बेगम जोधाबाईके नामसे प्रसिद्ध थी।

आनेपर जब राजाजीने दरबारमें अपनी उचित दलीलें पेश कीं तब जहांगीर खामोश होगया। इसके बाद फिर कोई विशेष घटना संघटित नहीं हुई।

संवत् १८५२ में जब राजा रायसिंहजी मृत्युशय्यापर पड़े हुए थे तब उनके द्वितीय पुत्र सूरसिंहजीने पास जाकर पूछा कि क्या हमारे लिये कोई आज्ञा है? उसका राजाजीने यह उत्तर दिया कि राज्यके विद्रोही मात्रका सर्वनाश करना तुम्हारा कर्त्तव्य है। इसीसे मेरी आत्मा संतुष्ट होगी। इतना कहकर संसारके माया मोहसे मुख मोड कर उन्होंने सदाके लिये आँखें मीच लीं।

सूरसिंहजी।

राजा रायसिंहजीके चार पुत्र थे। दलपतसिंह, सूरसिंह, किशनसिंह और भोपतसिंह। वास्तवमें दलपतसिंह ही अपने पिताके उत्तराधिकारी होनेके हकदार थे किन्तु राजा रायसिंहजीका सूरसिंहजी पर प्रेम विशेष था इसी लिये दलपतसिंहने राजविद्रोही दीवान करमचन्द बच्छावतसे मिलकर स्वतः राज्यपर प्रभाव डालना आरंभ किया। यद्यपि राजा रायसिंहजीने भविष्यकी होनहारसे सचेत हो करमचंदको राज्यसे निकालकर गुप्त विद्रोहका सर्वनाश करादिया पर वे दलपतसिंहके वास्तविक स्वत्वमें बाधा देनेसे विवश होकर उनके अधिकार और प्रभावमें कुछ भी कमी न कर सके।

निदान राजा रायसिंहजीकी मृत्युके पश्चात् संवत् १६६८ में दलपतसिंहजी बीकानेरके दूसरे राजा हुए। राज्यमें नियमपूर्वक गद्दी नशीनीका दस्तूर हो चुकनेपर यह दिल्लीको गये। वहां जहांगीरने भी इनके स्वत्वको स्वीकार कर लिया. मामली शिष्टाचार और राजसी दस्तूर हो चुकनेके बाद इन्होंने अधिक दिन दिल्लीमें व्यर्थ पड़े रहना निष्प्रयोजन जानकर बादशाहकी इजाजत लिये विना ही बीकानेरको यात्रा कर दी। इस बातसे जहांगीर इनपर मनही मन अप्रसन्न होगया। यद्यपि सम्राट्की मंजूरी पाकर दलपतसिंहने समस्त

राज्यपर अपना पूर्ण अधिकार जमालिया परंतु इन्हें अपने विमातृ भाई सूरसिंहजीकी तरफसे फिर भी संदेह और खटका था । अस्तु दलपतसिंहजीने अपने अंतरंग मित्र वा मंत्री मान महेश प्रोहितकी सलाहसे सूरसिंहजीकी जागीरके सब गांव खालसा करलिये, सिर्फ फलोदी उनकी आजीविकाके लिये रहने दिया ।

यह बात राज्यके सब प्रतिष्ठित कर्मचारियोंको और जागीरदार ठाकुरोंको बहुत बुरी लगी। प्रत्यक्षमें तो कोई राजाके विरुद्ध कुछ भी न करसका, परंतु वे सब सूरसिंहजीसे मिलगये और अब उन लोगोंको भी सूरसिंहजीकी सहायता करनेका अच्छा मौका हाथ लगा जो मृत राजा रायसिंहजीके विश्वासपात्र और दलपतसिंहजीके गुप्त शत्रु थे। पहले तो कुछ दिन पर्यंत सूरसिंहजी राज्यमें ही अपनी आजीविकाके पुनरुद्धारकी दाद फरियाद करते रहे किन्तु जब यहांसे उक्त मान महेशने रूखा उत्तर दे दिया कि कुछ नहीं होसकता तब सूरसिंहजी दिल्लीमें जाकर दलपतसिंहजीके विरुद्ध फरियादी हुए। बादशाह जहांगीर पहले हीसे दलपतसिंहजीकी उद्दंडताको नजरमें रख चुका था और उसकी सजा देनेके लिये सिर्फ समुचित समयकी प्रतीक्षा कर रहा था । अस्तु, उसने सूरसिंहजीकी पुकार पर विशेष ध्यान दिया । ऊपरसे आमेरके महाराज मानसिंहने भी इनके पक्षका प्रतिपादन किया । सौभाग्यवशात् राज्यलक्ष्मी उसी समय इनपर प्रसन्न होगई।जहांगीरने सरे दरबार सूरसिंहजीको सिरोपाव और राजाका खिताब देकर बीकानेरका स्वत्वाधिकारी स्वीकार कर लिया और पचास हजार मुसलमानी लशकरके साथ नवाब जियाउद्दीनखांको सहायताके लिये देकर बीकानेर पर अधिकार प्राप्त करनेके लिये बिदा किया । उक्त नवाबसे और राजा दलपतसिंहजीसे द्रोणपुरके पास लड़ाई हुई। इस लड़ाईमें यद्यपि दोनों ओरकी बहुत हानि हुई पर राठौड़ोंने मुसलमानोंको बेहद मारा यहां तक कि नवाब साहब मैदान छोड़कर ऐसे भागे कि फिर उन्हें इस तरफ आनेकी हिम्मत भी न हुई ।

किन्तु सौभाग्यशाली राजा सूरसिंहजीने हिम्मत न हारी। उन्होंने इधर तो खरबारहके ठाकुर द्वारा अपने उन कूट मित्रोंको सचेत किया जिनके हाथमें दलपतसिंहजीका सर्वस्व था और उधर भागतोंमेंसे कुछ सिपाही बटोर कर दलपतसिंहजीका मुकाबला करनेकी पुनः तैयारीकी। सगे शत्रुके प्रचारने पर दलपतसिंह स्वयं हाथीपर बैठकर एक विकट राठौड़ सेनाके साथ रणाङ्गनमें आ डँटे। लडाई शुरू हुई थी कि खवासखानेमें बैठे हुए चुरूके ठाकुरने मौका पाकर दलपतसिंहजीको कैद करके शत्रुओंके हवाले कर दिया। निदान बादशाहकी आज्ञानुसार दलपतसिंह तो अजमेरके किलेमें कैद रहनेके लिये भेज दिये गये और बीकानेर राज्यपर राजा सूरसिंहजीका अधिकार हो गया। इनके पाट बैठनेकी तिथि ख्यातमें संवत १६७० मुताबिक सन् १६१३ ई. लिखी है। इनका जन्म संवत १६५१ है।

इस प्रकारसे भाईको राज्यच्युत करके राजा सूरसिंहजी १९ वर्षकी अवस्थामें बीकानेर राज्यकी गद्दीपर बैठे। इन्होंने अठारह

(१) ख्यातमें लिखा है कि राजा दलपतिसिंह सौ सिपाहियोंके पहरेमें अजमेरके किलेमें कैद थे। इन्हें वहां अभी चार ही महीने हुए थे कि जोधपुर हरसोलावके जागीरदार ठाकुर हरीसिंह चम्पावत कोई चारसौ आदमियोंके साथ ससुरालको जाते हुए अजमेरमें मुकीम हुए। उनके आनेकी खबर पाकर दलपतसिंहने उनसे मिलनेकी इच्छा प्रगट की। उक्त ठाकुरको जब पहरेदारोंने किलेमें जानेसे रोका तो उसने बलसे दलपतसिंहको कैदसे छुडा लिया। यह समाचार पाकर सूबेदार अजमेरने कई सिपाहियोंसे मय ठाकुर दलपतसिंहजीको घेर लिया इस पर इन चारसौ राठोड़ोंने एक एक करके प्राण दे दिये पर अपनी नोक न बिगड़ने दी। इन्हींमें राजा दलपतसिंह भी मारे गये। ठाकुर हरीसिंहजीके वीरकर्तव्यकी यादगारमें बीकानेर राज्यमें अद्यावधि यह नियम प्रचलित है कि हरसोलावके टिकैतठाकुर किलेके अन्दर हरीपोलतक घोडे पर सवार होकर जा सकते हैं; दूसरे सरदार किलेके बाहर ही घोडेपरसे उतर पड़ते हैं।

किन्तु मुसलमानी तवारीखोंसे जाना जाता है कि सूरसिंहने दलपतसिंहको पकड़ कर जब दिल्ली भेजा तो बादशाहने अपने हुक्म अदूलीकी सजामें उसे उसी समय मरवा डाला था। सम्भव है कि अजमेरके झगड़ेके बाद दलपतसिंह कैद करके दिल्ली लाये गये हों और तब उन्हें प्राण दण्डकी सजा दी गई हो।

वर्ष पर्य्यंत शान्तिपूर्व्वक राज्य शासन किया । यद्यपि यह अपने पिताकी भाँति आजन्म शाही सेवामें रहे किन्तु उससे अपना कोई हित साधन न कर सके; बल्कि जो कुछ राज्यकी सीमा राजा रायसिंहजीके समयमें थी उसमें भी बहुत न्यूनता होगई । इधर तो जोधपुरवालोंने सम्राट्‌का कृपापात्र बनकर नागौर और फलोदीको दबा लिया, उधर हिसार और सिरसाके परगनेकी जो भूमि सतलजके किनारेतक राजा रायसिंहजीने दबाकर बीकानेर राज्यकी सरहदमें शामिल कर ली थी वह भी निकल गई । इनके राज्यकालमें बीकानेर राज्यमें कुल तेरह परगने रह गये थे किन्तु पितृभक्त राजा सूरसिंहजीने पिताकी अंतिम आज्ञा पालन करनेमें जो हस्तलाघवता दिखाई वह ध्यान देने योग्य है ।

बीकानेरका भूतपूर्व्व दीवान राजविद्रोही कमरचन्द वच्छावत तो दिल्लीमें जाकर कुछ दिनके बाद राजा रायसिंहजीके सामने ही समाप्त होगया था किन्तु उसके लड़के तथा अन्य सगे लोग अब भी दिल्लीमें आबाद थे । राजा सूरसिंहजीने राज्याधिकार प्राप्त करके स्वयं दिल्लीकी यात्रा की और करमचंदके घर जाकर उसके लड़कोंसे कहा कि तुम बीकानेरको चलो और राज्यका काम करो हमारे पास कोई योग्य आदमी नहीं है, वे लोग राजाकी बात मानकर बीकानेरको चले आये। चार महीनेतक तो उनके बडे सुखसे बीते पर जब वे सब तरहसे निश्चित होगये तो एक दिन रात्रिके समय कुछ राठौड़ सिपाहियोंने उनका घर जा घेरा और बालबच्चोंसहित वच्छावत वंशको कतल कर डाला।इस वंशकी केवल एक गर्भवती स्त्री अपने माइकेमें थी उसके पुत्रसे जो संतान वृद्धि हुई वे वच्छावत लोग आजकल उदयपुरमें आबाद[1] हैं ।

(१) ख्यातमें लिखा है कि जिस समय करमचन्द वच्छावत मृत्यु शय्यापर पड़ा हुआ था उस समय राजा रायसिंहजी स्वयं उसके पास मौजूद थे । राजाजीने उससे सब तरहसे प्रबोध निराशासे उसकी तरफ देखते हुए आंखोंमें आंसू भर दिये । जब राजाजी चले आये तब वच्छावतके बेटोंने अपने पिताकी कृतघ्नतापर पश्चात्ताप प्रगट करते हुए कहा--धन्य ऐसे राजा जो अब भी-

इसके बाद राजा सूरसिंहजीने मानमहेश प्रोहित और छोटजी भाटकी जागीर और जायदाद जब्त करनेका हुक्म दिया। ये दोनों वह शख्स थे जिन्होंने करमचन्दसे मिलकर उक्त दलपतसिंहको राजा रायसिंहजीके विरुद्ध भड़का दिया था एवं जिनकी बदौलत राज्यकी उन्नतिमें विशेष बाधा पहुँची थी। जायदाद जब्त होने पर इन दोनोंने कुछ दिन तो बम्हनोत्तरी करके किलेके दरवाजे पर धरना दिया परन्तु जब उसका कुछ भी ख्याल न किया गया तो यह दोनों जघन्य अनुष्ठान करके जीते ही चितामें जल मरे। यद्यपि भाट और ब्राह्मणका इस तरहसे हत्या देकर मरना एक क्षत्रिय राजवंशके लिये बड़े कलंककी बात है परन्तु वे दोनों स्वयं विश्वासघात और राजविद्रोहके पापसे कलंकित थे इसलिये इस बातपर कुछ ख्याल नहीं किया गया और मानो दोनों पापियोंने अपने कुकृत्यका फल आप ही पालिया। कहाजाता है कि वे दोनों ब्राह्मण और भाट उस स्थानपर जलकर मरे थे जहाँ कि इस समय सूर-सागर तालाब किलेके सामने है। उन्हींकी शान्तिके लिये यह तालाब खुदवाया गया था।

राजा सूरसिंहजीके समयकी एक घटना इस राजवंशमें अब भी सजीव रूपसे विद्यमान है। वह यह कि राजा सूरसिंहजीकी एक भतीजी जैसलमेरके राव भीमजीको व्याही थी। राव भीमजीकी मृत्युके पश्चात् एक शिशुराज कुमार उक्त राठौड़ रानीकी गोदमें था। जब दूसरे लोगोंने राज्याधिकार पानेकी इच्छासे वास्तविक स्वत्वाधिकारी नाबालिग कुमारका सर्वनाश करना चाहा तब रानीने अपने चाचा सूरसिंहजीके पास सहायताके लिये संदेसा भेजा। राजा सूरसिंहजी अभी जैसलमेरको चलनेकी तैयारी कर रहे थे कि तबतक उक्त यादव राजकुमारके मारेजानेका समाचार आ

आप पर ऐसा स्नेह करते हैं। तब बच्छावतने कहा बेटा! वे आंसू स्नेहके नहीं थे इस बात पर आंसू थे कि मैं उनके देखते हुए सुखसे संसार छोड़ रहा हूँ। कभी भूलकर भी राठौड़ वंशके फन्देमें न फँसना। सच है जो न माने बडेकी सीख, सो लै खपाड़िया माँगे भीख।

पहुँचा। इस शोकजनक घटनाका राजाजीके चित्त पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने उसी समय प्रतिज्ञा की कि अबसे इस राजवंशकी कोई राजकुमारी जैसलमेरमें न व्याही जाय। इस प्रतिज्ञाका अबतक निर्वाह होता है।

राजा सूरसिंहजी शाही आज्ञासे दक्षिण प्रान्तमें थे। वहीं पर संवत् १६८८ (सन् १६३१ ई०) में इनका देहान्त होगया। इनकी मृत्युका संदेसा पाकर इनकी दो रानियाँ, एक वेश्या और एक बड़ारिनने उनके वस्त्रोंके साथ सतीत्व आगमें शरीर होम दिया। इनके तीन पुत्र थे करणसिंह, शत्रुशाल और अर्जुनसिंह।

श्रीमान् राजा करणसिंहजी जंगलधर बादशाह।

श्रीमान् राजा करणसिंहजी उक्त राजा सूरसिंहजीके ज्येष्ठ राजकुमार और आमेरपति राजा मानसिंहजीके भानजे थे। ख्यातमें इनका जन्म संवत् १६६२ लिखा है। पिताका देहान्त होने पर संवत् १६८८ मुताबिक सन् १६३१ ई० में २५ वर्षकी अवस्थामें आप बीकानेरके सिंहासन पर सुशोभित हुए थे। कर्नल टाडसाहब लिखते हैं कि अपने पिताके राजकालमें करणसिंहजी दो हजारी मनसब पर दौलताबादके सूबेदार थे। किन्तु बीकानेरकी गद्दी पर बैठकर जब यह दिल्लीमें अपने पिताकी मान मर्य्यादा प्राप्त करनेके लिये गये तो इनको उससे हताश होना पड़ा।

किन्तु कुछ दिनोंके बाद इनकी शाही दरबारमें रसाई होगई। तबतक इधर एक सरहदी झगड़ा उठ खड़ा हुआ। अमरसिंहजीको जोधपुरसे नागौरकी बैठक मिली थी, उन्होंने पार्श्ववर्त्ती बीकानेर राज्यके लाखनियां मौजेको दबालिया। इस पर इधरसे फौज चढगई और उधरसे भी फौज चढ़ आई। बहुत दिनोंतक आपसमें खून खराबी होनेपर भी जब झगड़ा रफा न हुआ

---

(१) इनकी यह भी प्रतिज्ञा थी कि वच्छावत वंशका कोई भी बीकानेर राज्यमें नौकरी या आजीविका न पावे। कहते हैं इस प्रतिज्ञाका भी अबतक निर्वाह होता है।

तो करणसिंहजीने दिल्ली जाकर शाही दरबारमें अर्ज गुजारी । सौभाग्यवशात् वहां इन्हींके पक्षका प्रतिपादन हुआ । इसके साथ ही इनको दक्षिणकी मुहिम पर भी जानेका हुक्म हुआ संवत् १७०१ वि० में करणसिंहजीने दक्षिण प्रदेशमें जाकर जारीके बागी सरदारको दमन कर उसकी भूमि सम्पत्ति पर अपना अधिकार कर लिया । निदान शाही दरबारसे वह जौरी गांव इन्हींको बख्श दिया गया ।

संवत् १७०४ में जिस समय करणसिंहजी दक्षिणसे बीकानेरको वापिस आये तो पूगलके भाटियोंमें जागीरके बटवारेके लिये परस्पर झगडा होरहा था । निदान राजाजीने स्वयं पूगलमें जाकर झगडेका निवटेरा कराकर सबको शान्त करदिया । ख्यातमें लिखा है कि पूगलमें पहले प्रमारोंका राज्य था संवत् ९१५ में भाटियोंने यह स्थान प्रमारोंसे छीनकर अपने कब्जेमें करलिया था । पहले तो पूगलकी हदमें कुल दोसौ गांव थे, लेकिन राजा करणसिंहजीके समयमें ५६१ गांव हो गये ।

कुछ दिनोंके बाद जब दिल्लीमें सिंहासन प्राप्तिके लिये पुनः विप्लव उपस्थित हुआ और शाहजहांके चारों पुत्र अपने बापको जीवित ही राजश्रीसे भ्रष्ट करके अपना अपना अधिकार जमानेको अग्रसर हुए तो राजा करणसिंहजीने भाग्यवान औरंगजेबका पक्ष अवलंबन किया और केशरीसिंह तथा पद्मसिंह नामक अपने दोनों पुत्रों सहित औरंगजेबके साथ प्रत्येक लडाईमें रहकर बडी वीरता दिखाई । ख्यातसे यह भी जाना जाता है कि किसी २ लडाईमें करणसिंहजी सेनानायक या हरावलके नेता भी रहे थे । दारा शिकोहके साथ आखिरी लडाईमें जब औरंगजेबकी सारी फौजके पैर उखड गये और केवल सौ आदमियोंके साथ वह हाथीपर लडाईके मैदानमें रह गया तब भी केशरीसिंहजी उसके पास थे । शत्रुसेनाका एक सरदार औरंगजेबका काम तमाम करना ही चाहता था कि केशरीसिंहजीने उस सरदारको एक ही हाथमें दो कर दिया । करणसिंहजीके ये दोनों राजकुमार पद्मसिंह और केशरीसिंह बडे ही वीर और बलवान् पुरुष थे, इनका विशेष वर्णन यथास्थान किया जायगा ।

राजा करणसिंहजीके समयकी एक घटना केवल बीकानेरके ही नहीं वरन राजपूतानेके इतिहासमें विशेष प्रसिद्ध और चित्ताकर्षक है । वह यह है—

मुसलमानी समयमें दिल्लीके तख्तपर आलमगीर औरंगजेब जैसा विलक्षण बादशाह होगया है वह किसी इतिहासज्ञसे छिपा नहीं है। वह एक ओर तो धर्मप्रिय राजपूतोंके बलके भरोसे सारे हिंदुस्थानको अपने हाथमें किये बैठा था और दूसरी ओर राजपूत जातिके सर्वस्व हिन्दूधर्मका सर्वनाश करने पर उद्यत था । होते होते जब औरंगजेबके धर्मविरोधकी सीमा पराकाष्ठाको पहुँच गई और वह राजनीतिके क्षेत्रसे लेश मात्र भी संबंध न रखते हुए साक्षात् धर्म शत्रुके रूपमें परिणत हो गया तब राजपूत राजाओंने गुप्तरूप से उसके पंजेसे अलग होनेकी साजिश की । धार्मिक ओजने यहाँतक काम किया कि जिन राज्योंमें परस्पर सदासे घोर शत्रुता चली आती थी वे भी इस समय धार्मिक मर्यादाके ऐक्य सूत्रमें बँध गये । जब औरंगजेबको इस कूट चक्रका पता मिला तो उसने काबुलकी चढ़ाईके बहाने सब राजाओंको हिंदुस्थानसे बाहर ले जाकर जबर्दस्ती मुसलमान बना देने की ठानी ।

अतः सन १६५१–५२ में औरंगजेबने अपनी कुल मुसलमान और राजपूत सेना सहित काबुलकी तरफ कूंच किया। अटकके पड़ाव पर सय्यद जीवनशाह नामक एक फकीरने राजा करणसिंहजीको औरंगजेबकी कूट चालका मर्म कह सुनाया । करणसिंहजीने और सब राजाओंको भी सचेत कर दिया । निदान

(१) प्रसिद्ध है कि जीवनशाह राजा करणसिंहजीका बड़ा मित्र था। इस धर्मरक्षाके पुरस्कारमें राजाजीने उसे जागीर देना चाही थी पर उसने उसे अस्वीकार करके यह प्रार्थना की कि आपके राज्यभरमें मेरे वंशधरोंको घर पीछे एक पैसा और एक रोटी मिला करे वह अबतक मिलता है किन्तु इतना अवश्य है कि उसके वंशधर लोग जब भिक्षा वृत्तिके बहाने अधिक उत्पात करने लगे तो उन्हें जो रोटी और पैसा सर्व साधारणसे जबर्दस्ती दिलाया जाता था उसका नियम तोडकर देनेवालकी खुशीपर रक्खा गया है ।

सबकी यह सलाह पक्की हुई कि पहले मुसलमान सेना अटक पार हो जाय तब हम सब लोग यहींसे अपने अपने राज्यको लौट चलें । इसी अभिप्रायसे राजपूत सेनाको नदीपार करनेके बहाने किश्तियाँ लानेके लिये हरकारा भेजा गया किन्तु मुसलमानोंने इसमें अपना अपमान समझकर पहले आप नदी पार होनेकी जिद की और हरकारेको खाली वापिस कर दिया । फिर क्या था " जोई रोगी चाहै सोई वैद्य बतावै " मुसलमानी सेना नदीके उस पार हो गई इतनेमें जयपुरके महाराजकी माताके देवलोक होनेका समाचार आ पहुँचा इस कारण सूतक माननेके लिये सब राजालोग बारह दिनतक नदी पार करनेसे बाज रहे । इसके बाद सबमें यह सलाह ठहरी कि यदि हमलोग यहाँसे डेरा कूंच करके तीन तेरह होंगे तो सबल मुसलमान लशकर पीछेसे हम सबको एक एक करके पछाड़ डालेगा । यदि किश्तियां बेकाम कर डाली जायँ जिससे ये लोग नदीके इस पार न आसकें तो काम बने । सलाह तो ठीक हुई पर प्रश्न यह था कि बिल्लीके गलेमें घंटी कौन बाँधे इतनेमें बीकानेरका राजकवि बोला ।

छप्पय-

धरन लगाहि सुर धरन लगाहि सुर धरन सुरद्धर ।
तज नृप अनठ कठोर रिदय ठिकठौर रठ्ठवर ॥
कृतघन सुरन सुरट्ट भूप अच्छिय कवि मच्छिय ।
छपौ वंश छत्तीस देव इच्छा इमि इच्छिय ॥
छत लगाहि तोहि छत्रिय धरन धरम सफल जीवन मरन ।
नव कोटि लाज करवर लगे करवर कर लग्गें करन ॥

कविकी जबानसे यह उत्तेजक छप्पय सुनतेही साहसी राजा करणसिंहके हृदयमें धार्मिक ओजकी ज्वाला भड़क उठी । उन्होंने गद्गद स्वरसे कहा–शाही किश्तयोंके तोड़नेके लिये मैं अग्रसर होता हूं किंतु आप लोगोंकी तरफसे इस धार्मिक सेवाके लिये पुरस्कार क्या है ? सब राजाओंने कहा कि आप आज हमको बादशाहके हाथसे बचाते हैं इसलिये आपहीको हम सब मरुभूमिका बादशाह मानकर "जंगलध-

रशाह'' पदसे संबोधन करेंगे। किंवदन्ती है कि सब राजाओंने उसी समय राजा करणसिंहजीके सामने बादशाही नजरें पेश कीं और ताजीम दी। यह सब होचुकने पर सब राजा नदी किनारे गये और सबसे पहले राजा करणसिंहजीने अपने हाथसे एक किश्तीपर कुल्हाड़ा चलाया। इसके बाद राजपूत सिपाहियोंने एक एक करके सब किश्तियोंको तोड़ फोड़कर नदीमें डुबो दिया। उस समय पुनः कविने यह छन्द पढ़ा।

छप्पय.

तुहि कर वर कर करन काल कर वत्त सवाये।
तुहि कर वर कर करन खान सुलतान नवाये॥
तुहि कर वर कर करन भूप सब पांय लगाये।
तुहि कर वर कर करन खपत क्षत्रिय गत पाये॥
बिस्तरिय कीर्ति करवर करन करन कवन तक्कत सरन।
नव कोटि लाज कर वर लगे सो कर वर कर लग्गे करन॥

जब औरंगजेब वहांसे वापिस आया तो उसने राजा करणसिंहको ही इस मामलेमें मुखिया समझकर दरबारमें बुला भेजा। इस पर यहां बहुतेरे लोगोंने तो सलाह दी कि वहां जाना उचित नहीं है परन्तु वीरवर करणसिंहजीने औरंगजेबके प्रति अपने पूर्वकृत उपकारोंका स्मरण करके उसके सामने जाना ही श्रेयस्कर समझा। उधर औरंगजेबने दरबारमें ही कई आदमियोंको इस कामके लिये मुस्तैदकर रक्खा था कि वे उसका इशारा पाते ही करणसिंहका काम तमाम करदें। किन्तु जब आगे आगे राजाजी और उनके पीछे २ दोनों राजकुमार केसरीसिंह और पद्मसिंह दरबारमें पहुँचे तो औरंगजेबकी आँखें झिप गई और उपकारीके प्रति संमुख अपकार करनेका साहस न्यून होजानेसे उसने अपना सिर नीचे कर लिया। घातकोंको अपने उद्योगसे अलग होनेका इशारा करके उसने राजा करणसिंहजी तथा उनके दोनों वीर वेषधारी राजकुमारोंकी प्रशंसा करते हुए एक खिलत और औरंगाबादकी सूबेदारीका परवाना उन्हें बखशा।

राजा करणसिंहजी फिर औरंगाबादसे वापिस नहीं आये । उन्होंने वहां पर करनपुरा केसरीसिंहपुरा और पद्मपुरा ये तीन गांव बसाये थे जो अबतक आबाद हैं, ये तीनों गांव सन् १९०४ ई. तक बीकानेर राज्यकी अमलदारीमें रहे परन्तु इन्तजाममें असुविधा होनेके कारण वर्तमान महाराज सर गंगासिंहजी साहबने हिसार परगनेके दो गांव और २५००) नकदके बदलेमें वे गांव अंग्रेज सरकारको दे दिये हैं । करनपुरामें राजा करणसिंहजीने जो करणीजीका मन्दिर बनवाया था उसका ग्रन्थान अब भी इस रियासतसे दिया जाता है ।

महाराज अनूपसिंहजी ।

राजा करणसिंहजीके आठ कुमार थे—अनूपसिंह, केशरीसिंह, पद्मसिंह, मोहनसिंह, देवीसिंह, मदनसिंह, अजबसिंह और अमरसिंह । इसमेंसे ज्येष्ठ अनूपसिंहजी पिताके उत्तराधिकारी हुए । राजा करणसिंहजीकी मृत्युका संवत् ख्यातमें नहीं लिखा है परंतु मुंशी सोहनलालजीने अपनी तवारीखमें संवत् १७२६ (सन् १६५९) लिखा है ।

कर्नल टाडसाहब लिखते हैं कि महाराज अनूपसिंहजी संवत् १७३० मुताबिक सन् १६७४ ई. में बीकानेरकी गद्दी पर बैठे । जिस समय दक्षिणमें राजा करणसिंहजीका देहान्त हुआ उस समय अनूपसिंहजी बीकानेरमें थे । जब वह मरने लगे तब उन्होंने अनूपसिंहजी को अपना उत्तराधिकारी नियत करके कहला भेजा था कि बेईमान वनमालीदाससे बचे रहना और उसे उसके कुकर्मकी सजा भी देना ।

वनमालीदास राजा करणसिंहजीका खवासवाल बेटा था । अटकवाले मामले पर जब औरंगजेब राजा करणसिंहजीसे कुपित हो बैठा था तब इसने शाही दरबारमें जाकर दरख्वास्त की थी कि यदि बीकानेरकी जागीरका मनसब मुझे मिलजावे तो मैं दीन इसलामको खुशीसे कबूल करनेके लिये तैयार हूं । बादशाहके आज्ञा देनेपर वह

मुसलमान हो भी गया था। राजा करणसिंहके जीतेजी तो औरंगजेब वनमालीदासके लिये वरदान पूर्ण करनेका साहस न कर सका किन्तु जब उनका देहान्त होगया तब उसने वनमालीदासको बीकानेरकी गद्दीपर विठानेकी इच्छासे राजा अनूपसिंहजीका उत्तराधिकार स्वीकार न किया। इसकारण जबतक शाही दरबारसे अनूपसिंहजीको मनसब न मिला तबतक यह गद्दी पर भी न बैठे, केवल राज्यकार्य्य बदस्तूर चलाते रहे।

इनके दोनों छोटे भाई पद्मसिंह और केशरीसिंह जिन्होंने औरंगजेबके साथ आपत्तिके समय असीम उपकार किया था इस समय शाही दरबारमें मनसबदार सरदार थे। केशरीसिंहजी ढाई हजारी मनसब पर थे और पद्मसिंहजी दोहजारी मनसब पर इटावा और मैनपुरीके जागीरदार थे। वह एक बड़े ही बलवान् वीर, विद्वान्, दाता और उदार पुरुष प्रसिद्ध थे। साथ ही इसके साम्राज्यके सच्चे शुभचिंतक और औरंगजेबके पूर्ण कृपापात्र थे। पहले तो अनूपसिंहजीसे नहीं बनती थी किन्तु जब इन्होंने देखा कि राठौड़ वंश विभूषण वीरवर बीकाजीके

(१) राजा करणसिंहजीकी जीवित अवस्थाका जिकर है। जब बादशाह औरंगजेब मय अपने लशकरके दक्षिण औरंगाबादमें मौजूद था तो पद्मसिंहजीके भाई मोहनसिंहजीसे और कोतवाल शहर (जो कि मुसलमान था) से एक हिरनके बच्चे पर झगड़ा होगया। शाहीमहलके दरवाजे पर कोतवाल और मोहनसिंहमें बात बेढ़ते २ यहांतक हुआ कि मदान्ध कोतवालने मोहनसिंह पर तलवारका वार कर दिया जिसके आघातसे वह बेहोश होकर गिरपड़े। इतनेमें पद्मसिंहजी भी वहां पर आ पहुंचे। उन्होंने जो भाईकी ऐसी दशा देखी तो तुरन्तही कोतवालका पीछा किया और सरे दरबार उसको एकही वारमें मार डाला। कोतवालका साला भी इस वारदातमें शरीक था इसलिये पद्मसिंहजीने उसे भी मार डाला जिस वक्त यह वारदात हुई उस समय बादशाह दरबारसे उठगये थे। दूसरे दिन जब दरबारमें यह माजरा बादशाहके रूबरू पेश हुआ तो उसने पद्मसिंहजीसे तो कुछ न कहा उलटे कोतवालके घरको कुर्क कर लिया। इससे साफ जाहिर होता है कि धर्मवीर औरङ्गजेबकी पद्मसिंहजी पर विशेष कृपा थी और इनका उसे भरोसा भी था।

पवित्र सिंहासन पर एक दोगले और धर्मच्युत पुरुषका अधिकार हुआ चाहता है तब इन्होंने गुप्तरूपसे भाईका पक्ष अवलंबन किया । निदान जब अनूपसिंहजीने दिल्लीमें जाकर अपना पैतृक अधिकार पानेकी प्रार्थना की तो कुछ तो रिशवतके जोरसे और कुछ पद्मसिंहजीके दबा-वसे समस्त राज्यकर्मचारी अनूपसिंहजीके सहायक होगये, अन्तमें बादशाहने भी अनूपसिंहजीको बीकानेरका राजा स्वीकार करलिया ।

इस समय श्रीबीकानेर राज्यमें सिरसा, तोशाम, फतहाबाद, रतिया, भटनेर, भिवानी, अठखेड़ी, सोरा, गहम, आवा, मलोट. फलोदी, अगुहा, और भटिंडा ये चौदह परगने शामिल थे । (इन परगनोंका कुछ हाल सिरसा और हिसारके इम्पीरियल गजीटियरमें लिखा है ।)

राजा अनूपसिंहजी कोई साधारण पुरुष नहीं थे । व बड़े बुद्धि-मान् विद्वान् सभाचतुर और समयके पहिचाननेवाले पुरुष थे इन्होंने शाही दरबारमें सीक जाते ही मूसलके लिये जगह कर ली । बादशाह अनूपसिंहजी पर ऐसा प्रसन्न हुआ कि उसने इन्हें राजाके स्थानमें महाराजकी पदवी प्रदान की और तीन हजारी मनसब देकर दक्षिणकी मुहिम पर इनको भेजा । अनूपसिंहजीने दक्षिणमें पहुँचते ही सम्राट्से विमुख राजगढ़के सरदारको सपरि-वार ध्वंस करके उसकी भूमि सम्पत्ति पर अपना अधिकार कर लिया । इसी बीचमें सन् १६८७ ई० में गोल कुंडापर चढ़ाई हुई । राजा अनूपसिंहजी भी दिल्लीकी फौजमें शामिल हुए । इन्होंने इस लड़ाईमें बड़ा ही चातुर्य्य और वीर विक्रम दिखलाया जिससे बादशाह इन पर बहुत ही प्रसन्न हुआ और उसने राजगढ़से लगते हुए परगने सुजावलपुर नसरू और अहावत, इन्हींको जागी-रमे दे दिये । गोलकुण्डा फतह होजाने पर अनूपसिंहजी बीकानेरको आये और यहाँ पर इन्होंने दो विवाह किये ।

संवत् १७३९ में दक्षिणकी लड़ाईमें वीरवर पद्मसिंहजी जब मारे

(१) संवत १७३१ से लेकर ४० तक जो लड़ाइयां दक्षिणमें हुई उनमें दिलेरखां शाही सिपहसालार था । पद्मसिंहजी उसीके मातहत बारह हजार-

गये तब धर्म बदले हुए वनमालीदासने पुनः जोर पकड़ा। दीन भक्त औरंगजेब इस समय खुद भी अनूपसिंहजीकी सेवाओंसे दबा-हुआ था इसलिये वह वनमालीको प्रत्यक्षमें बीकानेरका सर्वाधिकारी तो न बना सका पर उसे आधे राज्यकी सनद कर दी और तीन हजार फौज सहित एक दरबारी नवाबको सहायताके लिये साथ देकर बीकानेर भेज दिया। वनमालीदासने जूनागढ़के पास डेरे डाले और अब वह अनूपसिंहजीको तथा राज्यके अन्य सब राठौड़ोंको उभाड़नेका यत्न करने लगा। एक तो उसने राज्यमें अपने हिस्सेके गांवके मुखियोंको ठीक जमाबंदी न बतलानेके जुर्मपर कैद कर-दिया दूसरे राज्यकुलपूज्य श्री भगवान् लक्ष्मीनारायणजीके मन्दिरके पास पशु हत्या होने लगी। नीति-निपुण अनूपसिंहजी उसकी इन सब चालोंको समझते थे वे जानते थे कि इस दुष्टसे जरासी छेड़छाड़ करने पर हमको सपरिवार शाही कोपाग्निका पतंगा होना पड़ेगा और यह राठौड़ोंके रक्तसे रँगी हुई भूमि सर्वथा मुसलमानोंके अधिकारमें

फौजके नेता होकर सब सेनाको फौजी सामान और रसद पहुंचाने तथा उसकी रक्षाके जिम्मेवार थे। संवत् १७३९ की जिस लड़ाईमें पद्मसिंहजी मारे गये उसमें अनूपसिंहजी भी शामिल थे परन्तु इनकी मृत्युके वक्त वह मौकेसे बहुत दूर दूसरे मोरचे पर थे। पद्मसिंहजी बडी वीरतासे काम आये थे। यह बात प्रायः मुसलमान इतिहासकारोंने भी लिखी है। इस लड़ाईके फरीक सतवंतराय और यादवराय दो मरहटे सरदार थे। पद्मसिंहजीके भालेकी चोटसे सतवंतराय जब मारा गया तो मरहटोंने इन्हें बुरी तरहसे घेर लिया। इनके साथ उस समय बहुत ही थोडे राजपूत थे। वे सबके सब मारे गये और इनकी सवारीका घोड़ा भी मारा गया तब इन्होंने पैदल कई घंटे तक अकेले हथियार चलाया। अन्तमें सर्वाङ्ग क्षतविक्षत होकर गिरपडे और खेत मरहटोंके हाथ रहा। विजयी यादवरायको जब मालूम हुआ कि उसके भाई सतवंतरायका घातक राठौड़ वीर अब भी जीता जागता खेतमें घायल पड़ा है तब उसने पद्मसिंहजीको अपने हाथसे मारनेकी इच्छासे मृतप्राय अवस्थामें आन प्रचारा। शत्रुकी ललकारकी झंकार कानमें पडतेही राठौड़ वीर पद्मसिंहने उछलकर यादवरायको घोडेसे गिरा-दिया और नीचे दबाकर उसीके खंजरसे जब उसका कलेजा बेध दिया तब आप सदाके लिये सुखकी नींद सोये।

चली जायगी। इस कारण उन्होंने प्रत्यक्षमें विरोधका कोई चिह्न न दिखाकर कूट नीतिका आश्रय लिया। कहावत है कि "शठं प्रति शाठ्यं कुर्य्यात्"

महाराज अनूपसिंहजीने एक विवाह लखमीदास सूंगरे नामक एक गरीब ठाकुरकी बेटीसे किया था इस गरीब राजपूतके घरमें ऐसा क्या था जिसे वह एक राजाको दहेजमें देता? इसलिये उसने बरात बिदा होते समय बड़ी दीनताके साथ अनूपसिंहजीसे प्रार्थना की कि दहेजमें मेरा यह शरीर हाजिर है जो चाहे इससे जब जैसी सेवा ले लीजियेगा। यह मौका पाकर अनूपसिंहजीने लखमीदासको बुलाया और उसे वनमालीदासका प्राण लेने पर नियुक्त किया। उदयराम अहीर और एक बीका राजपूत उसके साथ कर दिये गये ये तीनों प्रत्यक्षमें राजविद्रोही बनकर बीकानेरसे भागे और चँगोईमें वनमालीदासके पास जा पहुँचे। यद्यपि बीकानेरसे उनको आश्रय न देनेका परवाना भेजा गया पर वनमालीदासने उस पर ध्यान न दिया। कुछ दिनोंके बाद उक्त ठाकुरने अपनी लड़की बताकर एक गोलीको वनमालीदासके साथ व्याह दिया। उसने राजाकी शिक्षाके अनुसार सुहागरात्रिको ही शराबमें विष पिलाकर वनमाली-दासको शान्त कर दिया। यद्यपि वनमालीदासका सहायक नवाब इस बात पर बहुत बिगडा और उसने शाही दरबारमें सारा भेद खोलदेनेकी धमकी दी पर चांदीकी जूतीसे वह भी चुप कर दिया गया।

इस घटनाका औरंगजेब पर क्या प्रभाव पड़ा होगा सो तो भगवान् जाने पर फिर उसने मामलेको ठंढा रहने दिया और अनूपसिंहजीको दक्षिणप्रदेशमें अदौनीकी सूबेदारी पर भेजा। यह अदौनीमें ही थे कि राज्यकी सीमा पर बगावतका जोर बढ़ा। खारवाराके भाटी ठाकुर रायमलने सबसे पहले अपनी जागीरके सरहदी मामले पर सिर उठाया। उसको दमन करनेके लिये जो राज्यसे फौज गई तो उन्होंने सीमान्त निवासी जोइयोंसे मदद माँगी। जोइया और भाटियोंने मिलकर किला चूरिया पर (जो कि बीकानेरसे

१०० मील उत्तरमें है) अच्छा जमाव करलिया परन्तु राज्यके चतुर कर्मचारी मुकुन्दराय महाजनने भाटियोंको चकमा देकर उक्त किलेपर अधिकार कर लिया और उस किलेको नेस्तनाबूद करके उस स्थान पर महाराज अनूपसिंहजीके नामसे अनूपगढ़का किला बनवाया। अनूपगढ़में आज कल राज्यकी तहसीलका हेडकारटर है।

महाराज अनूपसिंहजी फिर दक्षिणसे वापिस नहीं आये। संवत् १७५५ में अधौनीमें ही उनका स्वर्गवास हुआ। अनूपसिंहजी जैसे एक नीतिचतुर साहसी और वीर पुरुष थे वैसे ही उदारहृदय और विद्वान् भी थे। इनकी विद्वत्ताका प्रत्यक्ष नमूना बीकानेर राज्यका पुस्तकालय है। पुस्तकालयकी कई एक पुस्तकें इस बातकी साक्षी हैं कि महाराज स्वयं संस्कृत और भाषाके कवि थे। किंवदन्ती है कि महाराज अनूपसिंहजी कुछ दिनों तक औरङ्गजेबके लड़कोंके अतालीक भी रह चुके थे और यह वह समय अनुमान किया जाता है जब बादशाह सपरिवार दक्षिणमें था और अनूपसिंहजी भी शाही लश्करमें निरन्तर साथ रहते थे।

महाराज सुजानसिंहजी।

महाराज अनूपसिंहजीके तीन पुत्र थे. सरूपसिंह, सुजानसिंह और अनन्दासिंह। इनमेंसे प्रथम तो सीसौदिनी रानीके औरससे थे और इनका जन्म ख्यातमें संवत् १७४६ लिखा है और शेष दो राजकुमार राजावत रानीके गर्भसे थे। जिस समय महाराज अनूपसिंहजीका स्वर्गवास हुआ उस समय उनके ज्येष्ठ राजकुमार सरूपसिंहजी उनके पास अधौनीमें ही थे। पिताकी मृत्युके पश्चात् सरूपसिंहजीका राजतिलक तो हो गया परन्तु शाही आज्ञानुसार इनको अधौनीमेंही रहना पड़ा। इधर इनकी माता स्वयं राज्यका कार्य करती थी।

सरूपसिंहजीकी माता सीसौदिनी माजी एक ललित नामक नाजिर पर विशेष कृपा रखती थी और ललित राज्यके कई एक राजपूत कर्मचारियों या मुसाहिबोंसे विरोध रखता था। किन्तु पट्टेदार या राजवी (भाई बेटे) राजपूत मुसाहबोंके सामने ललितका प्रताप मन्द रहता था इसलिये उसने रानी साहिबाको समझाया कि राजपूत समितिका मुखिया पृथ्वीराज आपको बीमारीकी अवस्थामें बिष देना चाहता है इसपर रानीजीने उक्त ठाकुरके मारडालनेकी आज्ञा दी और नाजिरने कई एक अन्य कर्मचारियोंकी सहायतासे यह जघन्य कार्य पूर्ण किया। जब महाराज तक यह समाचार पहुँचा और वहांसे मामलेकी सारी कैफियत तलब हुई तो यहां सब लोगोंने पृथ्वीराजकी हत्याका कुल भार ललितके सिर मढ़ दिया जिससे महाराजने अप्रसन्न होकर उसे माजी साहिबाके पाससे निकलवा दिया। तब ललित सुजानसिंहजीकी माता राजावत जी माजीके पास रहने लगा।

नपुंसक पुरुषोंका हृदय स्त्रियोंसे भी निर्बल होता है। पहले तो यही ललित राजावत रानीके दोनों कुमारोंको मरवाना चाहता था और अब इस पक्षका अवलंबन करके वही उन्हें राज्य दिलानेके लिये दिल्लीको रवाना हुआ। दोनों कुमार सुजानसिंह और अनन्दसिंह सहित ललितने कोई तीन पड़ाव ते किये थे कि इतनेमें अगौनोसे एक हरकारेने आकर समाचार दिया कि चेचक रोगसे महाराज सरूपसिंहजीका देहान्त होगया। निदान ललित फौरन दोनों राजकुमारों सहित बीकानेरको लौट आया। और यहां सब राज कर्मचारी तथा जागीरदार मुसाहिबोंने सुजानसिंहजीको बीकानेरकी गद्दीपर अभिषिक्त कर दिया। इनका जन्म संवत् १७४७ मुताबिक सन् १६९० ई० में हुआ था.

संवत् १७५७ मुताबिक सन् १७०० ई० में जिस समय महाराज सुजानसिंह सिंहासनासीन हुए थे। दिल्लीपति औरंगजेब सपरिवार

(१) कंचुकी या खोजा, क्या हिन्दू क्या मुसलमान राज्योंमें सदैवसे ऐसे पुरुष रनिवासकी सेवामें रहते आये हैं। जयपुर आदिमें अब भी हैं।

निर्वाणोन्मुख अवस्थामें था । एक तरफ तो उसके पूर्व कृत क्रूर कर्म उसकी वृद्ध अन्तरात्माको भीषण वेपसे ताड़ना देरहे थे और दूसरी तरफ जिस दक्षिण प्रान्तमें उसका सारा जन्म गुजरा था उस पर सर्व भौमाधिकार प्राप्त करनेकी लालसा उसे ललचा रही थी । इसी कारण उसे इस तरफके माजरोंकी देख भालका किंचित् अवकाश न था । अतएव जबतक महाराज सुजानसिंहजी युवावस्थाको प्राप्त हुए तबतक राज्यका कारबार पूर्वकी भाँति दोनों पक्षके मंत्री दल द्वारा होता रहा । सन १७०७ ई० में औरंगजेबका देहान्त होने पर जब बहादुरशाह दिल्लीका बादशाह हुआ तब उसने सूबेदारीका ओहदा देकर महाराज सुजानसिंहजीको दक्षिणकी तरफ भेजा। महाराज सुजानसिंहजीके समकालीन जोधपुरके राजा अजीतसिंहजी गुप्तरूपसे सम्राट्के पूरे शत्रु थे और उनका यह भी इरादा था कि इस गड़बड़में जहाँतक हो सके अपने राज्यका विस्तार या प्रभाव बढ़ालेना चाहिये अतः सुजानसिंहजीकी गैर हाजिरीमें उन्होंने उस राज्यके चंद बीदावत सरदारोंसे मिलकर राज्यके पक्षपाती और प्रबंधकर्ता करणसिंह ठाकुर गोपालपुरा और बिहारीदास ठाकुर बीदासरको कैद करलिया और कुछ फौज भेजकर बीकानेर पर अधिकार जमा लिया । लेकिन यहाँके रामजी नामक एक लुहारने जो मंडीमें रहता था बस्तीके लोगोंको जोड़ बटोरकर रात्रिके समय जोधपुरी फौजपर ऐसा छापा मारा कि सबके तीन तरह होजानेसे उनका बल टूटगया लुहार तो मारागया पर उसके साहसने राज्यके जागीरदार सरदारोंमें एक अजीब जोश पैदा करदिया जिससे पृथ्वीराज ठाकुर भूकरकाने जोधपुरकेवकीलसे बातचीतमें ही मामला तय करलिया दूसरे रसद भी बंदकर दी जिससे अन्नजल कष्टके कारण जोधपुरकी फौजको बीकानेरसे हट जाना पड़ा ।

सन् १७१९ ई० में जब महाराज सुजानसिंहजी दक्षिणसे वापिस आये तो उन्होंने भूकरकाके ठाकुरको उसकी उचित सेवाके पुरस्कारमें बांयी तरफ पगड़ी बाँधनेकी इज्जत बखशी और सारे राज्यका नये सिरेसे प्रबंध करके वह बड़े अमन चैनसे रहने लगे । यद्यपि

इस समय भी दिल्लीसे एक कासिद इन्हें बुलानेके लिये आया किन्तु इन्होंने आप राजधानी छोड़ना उचित न समझकर कुछ थोड़ीसी फौज भेज दी क्योंकि इधर तो जोधपुरवाले सदा इसी टोहमें रहते थे कि कब मौका हाथ लगे और बीकानेर पर दखल करें और उधर बादशाहत स्वयं इतनी कमजोर पड़गई थी कि वहांसे कोई सहायता पाना तो दूर रहा, उससे अपनी रक्षा आप नहीं होसकती थी। जोधपुरकी फौजके छोटे २ खुफिया झुंड इस ताक झोकमें भी बीकानेरके आसपास फिरा करते थे कि अवसर पावें तो सुजानसिंहजीको पकड ले जावें। एकबार शिकार खेलते समय महाराज बाल बाल बचे। जब सुजानसिंहजीको यह भेद मालूम होगया तो जोधपुरी दूतदलके मालिकने यह बहाना किया कि महाराज जोधपुरके राजकुमार जन्मे हैं उसकी खुश खबरी आपको सुनानेके लिये हमलोग आये थे।

कुछ दिनोंके बाद महाराज सुजानसिंहजी डूँगरपुरमें अपना व्याह करनेके लिये पधारे। वहांसे लौटते समय कुछ दिन उदयपुरमें राणाजीके मेहमान रहे। जब बीकानेरमें आये तो संवत् १७८७ में जोइया और भाटी लोगोंने बगावत मचा रक्खी थी, इसलिये महाराज खुद राठौड़ सेनाके साथ विद्रोहियोंको दमन करनेके लिये राज्यकी पश्चिमोत्तर सीमाकी तरफ पधारे। परिणाम यह हुआ कि जोइया लोग भयभीत होकर हिसारकी तरफ भाग गये आर भट्टी लोग भटनेरके किलेकी कुंजियां महाराजको सौंपकर राज्यकी सेवा करनेमें सहमत हुए। संवत् १७९० में जोधपुराधीश महाराज अभयसिंहके छोटे भाई बखतसिंहने जो नागौरके मालिक थे पंद्रह हजार फौजके साथ बीकानेरकी तरफ कूंच किया। उस समय सुजानसिंहजीके युवराज कुमार जोरावरसिंहजी बाईस हजार फौजके साथ नौहरमें नाका बाँधे पड़े हुए थे। बखतसिंहजीके चढ़ आनेका समाचार पाकर जोरावरसिंहजीने अपनी सेना सहित नौहरसे चलकर मुकाम ताजासर पर जोधपुरी फौजका मोरचा रोकलिया, दोनों फौजोंमें एक खड़ी लड़ाई हुई जिसमें बखतसिंहको हार मानकर पीछे हटना पड़ा।

परंतु अभयसिंहजी जोधपुरसे बराबर ताजी फौज मददके लिये भेजते जाते थे। इस कारण अन्न जलका कष्ट होने पर भी बखतसिंहजीने खेत न छोड़ा। कोई महीने भर तक छोटी छोटी लड़ाइयाँ होती रहीं, अन्तमें उदयपुरके राणाजीने दोनों पक्षमें सुलह करा दी जिससे बखतसिंहजी जोधपुरको वापिस चले गये।

इसी बीचमें एक घरघालन घटना संघटित हुई, वह यह कि महाराज सुजानसिंहजी नन्दराम नामक एक खवास पर विशेष कृपा रखते थे और युवराज जोरावरसिंहजी उससे यहाँ तक असंतुष्ट थे कि उसे कतल करवाना चाहते थे। इसी कारण बाप बेटेमें अनबन हो गई और जोरावरसिंहजी बीकानेरसे तरह देकर नौहरमें रहने लगे थे। अन्तमें मौका पाकर उन्होंने नन्दरामको कतल करवा डाला और तब खुद आकर पितासे मिले। सुजानसिंहजीने भी अपने योग्य पुत्रसे प्रसन्न होकर राजकार्यका सारा भार उन्हींको सौंप दिया। ख्यातमें यह बयान इसी सिलसिलेसे लिखा है परन्तु मालूम होता है कि जिस समय जोरावरसिंहजीने नौहरसे चलकर जोधपुरी फौजसे मुकाबला किया उस समय वे पिताके विरुद्ध ही थे पर राज्यकी रक्षा करनी उन्होंने अपना कर्तव्य जानकर बखतसिंहजीको मार भगाया, इसीसे सुजानसिंहजीने उनका विशेष आदर भाव किया और कुल राज्यका काम उन्हींको समर्पित कर दिया। इस बातका यह एक पक्का सबूत है कि उदयसिंह भाटी भी जो अबतक राज्यसे विरुद्ध रहता था राज्यकी लगाम जोरावरसिंहजीके हाथमें आते ही आपसे आप राज्यका ताबेदार होगया।

नागौरमें स्थित बखतसिंहजीने जब देखा कि संमुख आक्रमण करके बीकानेर पर फतह पाना कठिन है तब वह गुप्त चाल चलने लगे और नानाप्रकारके लालच देकर इस राज्यके किलेदार सांखला लोगोंको मिला लिया। नापा सांखलाका वंशधर दौलतसिंह बीकानेरका किलेदार था। इसके साथ साथ और भी कई लोग शत्रुपक्षमें मिल गये। एक बार जब युवराज जोरावरसिंहजी सेना सहित ऊदासरकी तरफ गये हुए थे और थोड़ीसी राठौड़ सेना सहित सुजानसिंहजी किलेमें थे तब यह सलाह पक्की हुई कि आजकी रात्रि सांखला लोग किलेका द्वार

खुला रक्खेंगे और जोधपुरी फौज किलेपर सरलतासे कब्जा करके राजाको पकड़ लेगी। किन्तु दौलतसिंहने शराबके नशेमें चूर होकर यह सब भेद अपने एक मित्रसे कहदिया और उसने उसी समय महाराज सुजानसिंहको उस रहस्यकी सूचना देदी। उसी समय देख भाल की गई तो मोरचे खाली और फाटक खुले हुए पाये गये। निदान फाटक बंद करवाकर किलेका प्रबंध किया गया और साँखला लोगोंको मरवा कर पड़िहार उनकी जगह पर किलेदार नियत किये गये। इसी वर्ष यानी संवत् १७९२ में पूस सुदी १३ को सुजानसिंहजीका स्वर्गवास हुआ।

महाराजा जोरावरसिंहजी।

कर्नल टाड साहबने महाराज जोरावरसिंहजीके विषयमें इसके सिवाय और कुछ नहीं लिखा कि वे संवत् १७९३ मुताबिक सन् १७३७ में गद्दी पर बैठे। उनके राज्यकालमें साधारण घरेलू झगड़ोंके सिवाय कोई चिरस्मरणीय घटना संघटित नहीं हुई। पर वे घरेलू झगड़े जो इन्हें निपट निःसार जान पड़े हमारे लिये बड़े मतलबके हैं।

जैसे निर्वाणोन्मुख दीपक एकबार दुगुने प्रकाशसे जगमगाकर तब शान्त होता है वैसेही इस समय राजपूत वंशकी स्वतंत्रताने गन्तव्य इति प्रकाश पाया था। एक तरफ तो लगातार अभ्यास बने रहनेके कारण राजपूती रक्त उन्हें मरने मारने और अपना प्रभुत्व बढ़ानेके लिये उत्तेजित करता था और दूसरी तरफ दोसौ वर्षसे परतन्त्र रहनेके कारन उनकी रीति नीति संकुचित हो गई थी। अतः वे दिल्लीके मुगल-साम्राज्यकी कमजोरीसे अनन्य लाभ उठानेके बजाय एक असाधारण हानिके शिकार बनगये थे। यानी राजपूत वंशकी उस अवस्थाका सिलसिला यहींसे शुरू होता है जिसमें वे संयुक्तबल मरहठे लुटेरोंके शिकार बनकर उन्हें बादशाहकी भाँति कर देनेके लिये विवश होगये थे।

स्मरण रहे कि महाराज जोरावरसिंहजीके कुँवरपनके समयसे ही जोधपुर और बीकानेरका झगड़ा चल रहा था। सुजानसिंहजीकी मृत्यु होनेपर

(१) ख्यातमें संवत् १७९३ और सन् १७३५ ई० लिखा है।

जब यह गद्दी पर बैठे और राजकाजका प्रबंध नये सिरेसे करने लगे तबतक जोधपुरी सवारोंने पुनः कुछ सीमावर्ती स्थानोंपर कब्जा कर लिया। किंतु अवकाश पाकर जोरावरसिंहजीने स्वयं एक धावेमें उन्हें मार हटाया। जोधपुरपति राजा अभयसिंहजी जोरावरसिंहजीकी बुद्धिमानी और रणकुशलतासे अवगत हो चुके थे इसलिये वह चुप थे। पर चुरूके ठाकुर संग्रामसिंहने जोरावरसिंहजीसे असंतुष्ट होकर जोधपुरमें आश्रय लिया और अभयसिंहजीको उभाड़ा कि आप मुझे सहायता दें तो मैं बीकानेर पर आपका कब्जा करा दूं। राजा अभयसिंहने उसकी बात मान ली।

चुरूके ठाकुरोंका पहलेसे इस राज्यमें फौजी जोड़तोड़ अच्छा रहा है। अस्तु संग्रामसिंहने तो चुरूमें आकर आप दश हजार आदमी इकट्ठे किये और उधरसे पंद्रह हजार जोधपुरी फौजके साथ अलोपका ठाकुर मुकाम फलोदीमें आ मिला।

यह बात तो जहांकी तहाँ रही, दूसरा क्या गुल खिला कि आपसकी हिस्सेदारीके मामले पर जोधपुरके राजा अभयसिंह और उनके भाई बखतसिंहसे परस्पर चलगई। तब बखतसिंहने बीकानेरसे मदद माँगी। यहांसे बखतावरसिंह महताकी मातहतीमें आठ हजार फौज बखतसिंहजीकी सहायताके लिये भेज दी गइ और बखतसिंह जोधपुर पर हमला करनेके लिये चले। बखतसिंह खुद बड़े बाँके सिपाही और सिपाहियोंके यार सरदार थे। जब अभयसिंहने घरकी लकड़ीसे आँख फूटनेकी संभावना देखी तो कुछ नकद और जमीन देकर उन्होंने अपने भाईको तो मिला लिया पर बीकानेरके ग्रास करनेका मामला ज्योंका त्यों जारी रक्खा।

नागौरवाले बखतसिंहजीकी जब भाईसे संधि होगई तो उन्होंने बीकानेरी फौजको सादर वापिस कर दिया। तबतक यहां एक और मामला होचुका था। वह यह कि भटनेर पर फिरसे जोइयोंका

(१) कर्नल टाड साहबने बखतसिंहकी बड़ी तारीफ लिखी है। उन्होंने लिखा है कि वह जैसे ताकतवर और वीर पुरुष थे वैसे ही सिपाहियोंके दोस्त थे और जोधपुर राज्यके सब ठाकुर उन्हें तनमनसे चाहते थे।

कब्जा होगया था। अस्तु महाजनके ठाकुर भीमसिंहने दरबार बीकानेरकी आज्ञा एवं सहायतासे छलपूर्वक जोइयोंको मार निकाला और किलेपर अपना कब्जा कर लिया। किलेमें चार लाख रुपया और कुछ स्वर्णमुद्रा नकद भीमसिंहके हाथ लग गई। उसने लालचमें आकर वह सब माल आप ही हड़प जाना चाहा। यह देखकर जब राज्यकी फौजने दावा किया तब वह किलेमें अपनी मोरचेबंदी करके लड़ने मारने पर उतारू हुआ। जब बीकानेरमें यह समाचार पहुँचा तो जोरावरसिंहजीने उस फौजको वापिस बुला लिया, क्योंकि इधर जोधपुरी फौज दिन दूने पड़ाव तोड़ती चली आरही थी, पर भट्टियोंके सरदार हसनखांको आज्ञा दी कि वह भटनेरको महाजनके ठाकुरसे छीन लेवे। राज्य कुछ हस्तक्षेप न करेगा, परंतु भट्टियोंके हमला करनेके पहले ही ठाकुर भीमसिंह स्वर्णमुद्रा साथ लेकर किलेसे निकल भागा और बीकानेर पर आती हुई जोधपुरी फौजके साथ जा मिला। भांद्रांका ठाकुर लालसिंह भी उसके साथ होगया था।

किमधिकम् जोधपुरके महाराज अभयसिंहने देशनोकमें करणीजीके दर्शन करते हुए बीकानेर पर हमला आ किया। पहले तो तीन पहर तक शहरको खूब लूटा जिसमें एक लाखसे कुछ ऊपर माल जोधपुरी फौजके हाथ लगा फिर सारी फौजके तीन मोरचे करके किलेको घेरलिया और गोले बरसाना शुरू किये। इधर किलेसे भी जबाबमें तोपें चलने लगीं। इसी तरह दोनों तरफसे अग्निवर्षा होते होते बहुत दिन बीतगये। जब किलेमें रसदकी कमीकी संभावना हुई तब पहले तो जोरावरसिंहजीने अपने राज्यके उन ठाकुरोंको मिलाना चाहा जो यहांसे फूटकर महाराज जोधपुरसे जा मिले थे पर जब यह उपाय कारगर न हुआ तब उन्होंने अनंदराम मेहताको बखतसिंहजीके पास सहायताके लिये भेजा।

सच्चे सिपाही प्रायः साफदिल होते हैं, वे एक तो नेकी करनेवालेके साथ कभी बदी नहीं करते, दूसरे किसीके एहसानमें भी दबे नहीं रहना चाहते। कहा जाचुका है कि बखतसिंह पूरे सिपाही थे। उनसे जब अनंदराम महताने महाराज बीकानेरका संदेसा सुनाया तो उन्होंने उत्तर दिया कि यदि आपसका संधिबंधन तोड़ कर मैं

भाईके विरुद्ध आपको सहायता भी दूं जैसा कि मुझे उचित है तो इससे आपका अभिप्राय सिद्ध न होगा इसलिये आप जयपुर जाइये, मैं अपना एक आदमी भी आपके साथ कर देता हूं। तदनुसार मेहता अनंदराम बखतसिंहके गुमाश्तेके साथ जयपुरको गया और उसने महाराज जयसिंहसे सारा वृत्तांत निवेदन किया। इसपर वहांके अन्य सब राजकर्मचारियोंने तो राजाको यही सलाह दी कि आपसके बखेड़ेमें पड़ना ठीक नहीं है पर शिवसिंह सीकरवालेने कहा कि यदि जोधपुरका कब्जा बीका-नेर पर होगया तो याद रखिये राठौड़ सबल होजायँगे और किसी दिन वे हमको भी धर दवावें तो आश्चर्य्य ही क्या ? यह बात जयसिंहजीके मनमें समागई और वे कई हजार फौज लेकर जोधपुरकी तरफ रवाना हुए। यह समाचार पाकर अभयसिंहजीने राणा उदयपुरके पास सहायताके लिये दूत भेजा। उत्तरमें उन्होंने खुद आपसके झगड़ेमें पड़नेसे तो इनकार करदिया पर परस्पर संधि करा देनेका वादा किया और तदनुसार एक पत्र भी महाराज जोरावरसिंहजीके पास भेजा परन्तु इन्होंने उसे नामंजूर करके कहला भेजा कि इसका उत्तर महाराज जयपुर देंगे।

राजा अभयसिंहजीके जब 'नमाजकी माफीके बदले उलटे रोजे गले पड़ गये' तब वह तीन महीने पांच दिनके बाद बीकानेरके मोरचे तोड़कर और सब फौजको रास्तेमें ही छोड़कर केवल दो हजार सवारों-के साथ महाराज जयसिंहके जोधपुर पहुँचनेके पहले ही उनसे जा मिले। जयसिंहजी जोधपुर पर चढ़कर आये थे इसलिये उन्होंने २१ लाख फौज खर्च लेकर जोधपुरका पिंड छोड़ा और महाराज जोरा-वरसिंहजीको मुकाम पाना (जो जोधपुरके इलाकेमें है) में बुलाकर दोनों स्ववंशी राजाओंका संधिबंधन करवा दिया। केवल इतना ही नहीं पूर्व समयमें राव जैतसीजीने जो राव सांगाको जयपुरकी गद्दी पर बिठाया था उस उपकारकी कृतज्ञतामें जयसिंहजीने राज्यके विरोधी ठाकुरोंको दमन करनेमें भी पूर्ण सहायता दी और बीकानेरमें संपूर्ण रूपसे शान्ति स्थापित कर दी। ठाकुर शार्दूलसिंहको महाराज जय-

सिंह कैद करके खुद जयपुर ले गये । चुरूके ठाकुर संग्रामसिंह मय अपने भाई भोपतसिंहके मुकाम सेऊके पड़ाव पर कतल कर दिये गये और अनंदरूप मेहताको "गई भूमिका भारू" का खिताब राज्यसे मिला । इसके बाद महाराज जोरावरसिंहजी स्वयं जयपुर गये और कई महीने तक महाराज जयसिंहके मेहमान रहे । ख्यातमें लिखा है कि जयसिंहजी चांदपोल दरवाजे तक जोरावरसिंहजीकी पेशवाईको आये थे ।

इस प्रकार कई वर्षोंके बाद घराऊ झगड़ोंसे अवकाश पाकर महाराज जोरावरसिंहजीने राज्यकी पश्चिमोत्तर सीमाकी ओर दृष्टि डाली। इस समय दिल्लीकी बादशाहतकी जो दशा थी उससे हमारे पाठक अवगत होंगे । बादशाहतका जोर शोर केवल दिल्ली शहरमें बाकी था और जो जहाँ था वह आप स्वतंत्र बन बैठा था । कुछ थोड़े बहुत मुसलमान सिपाही जो अब भी अपनेको शाही नमक हलाल कबूल करते थे आपत्तिके पंजेमें पड़े हुए थे । आस पासके दस पाँच भूमियाँ उन्हें सहज ही मार भगाते और वे खुद स्वतंत्र बन बैठते थे । यही सुअवसर पाकर सिवानेके गूजरमल जाटने अपनी अच्छी जमय्यत बढ़ा रक्खी थी । नीतिनिपुण जोरावरसिंहजीने उससे मित्रता कर ली । वह जिस समय हांसी पर हमला करनेकी तय्यारी कर रहा था उस समय जोरावरसिंहजी भी अपने राज्यकी सीमापर विराजमान थे । उसने इनसे कुछ फौजी मदद चाही और अपनी विजित भूमिमें इनको भाग देनेका वादा किया । इसलिये मेहता बखतावरसिंहकी मातहतीमें कुछ फौज तो उसके साथ हांसीकी तरफ रवाना की गई और कुछ फौजके साथ महाराजने स्वयं हिसार पर कब्जा कर लिया इस फतहके चार दिन बाद महाराजकी तबयित अलील हुई इस लिये यह बीकानेरकी तरफ रवाना हुए । पर वहाँ पहुँचनेके पहले मुकाम अनूप पुरामें महाराजका देवलोक होगया । ऐसा भी संदेह किया जाता है कि इनकी मृत्यु विषै प्रयोगसे हुई थी । दो रानियाँ

(१) जयपुरसे लौटते समय महाराजने अपने कामदार बखतावरसिंह मेहताको बरखास्त कर दिया था पर नजर नजराने देनेसे उसे फिर भी रख लिया

एक खवास ग्यारह पातरें और पाँच बाँदियाँ इनके साथ सती हुई।

महाराज गजसिंहजी।

(जन्मसंवत् १७८०)

छप्पय.

अंमर जालग अखी अखी सूरज ताराइन।
मेर अखी मेराण बीक अखी कीरत बंधन॥
अखी राज अवतार अखी लछमन मद आखे।
अखी वेद धन अच्छ साम वेदन जो भाखे॥
सुजस अखी अरु नरपती पातो पोल प्रहारौ।
ऐतले राज रैजौ अखी राजा गाजी साहरौ॥ १॥

महाराज जोरावरसिंहजी संतानहीन अवस्थामें पंचत्वको प्राप्त हुए थे। इसलिये महाराजके चचेरे भाई अनंदसिंहजीके पुत्र अमरसिंह और गजसिंह नागौरसे बुलाये गये। अमरसिंहजी बड़े थे और इन्हींको गद्दीपर बिठाये जानेकी चर्चा थी परंतु गजसिंहजी एक सर्व प्रिय राजकुमार थे और गद्दी पर बैठनेकी विशेष योग्यता भी रखते थे, इसालिये ठाकुर खुशहालसिंह और मेहता बखतावरसिंहने जो राज्यके प्रधान कर्मचारी थे गजसिंहजीको ही जोरावरसिंहजीका उत्तराधिकारी निश्चित करके असाढ़ बदी १४ संवत् १८०२ को बीकानेरकी गद्दी पर अभिषिक्त कर दिया। तब अमरसिंहजी राज्य पानेसे हताश हो ईर्ष्यावश जोधपुर चले गये।

था। इस जहर खुरानीके मामलेमें अगर ऐसे शख्सकी साजिश खयाल की जाय तो असंगत नहीं है।

(१) ख्यातमें लिखा है कि अमरसिंह और गजसिंह दोनों भाई बखतसिंहके मुकाबले पर गये थे। मेहता बखतावरसिंहने जब अंगूठीका निशान भेजकर बुलाया तब ये दोनों भाई सेना सहित मुकाम गढ़वालके डेरों पर थे। रात्रिको बखतावरसिंहने गजसिंहके पास एक गुप्त दूत भेजकर रातोंरात उन्हें बीकानेरमें बुला लिया और उनसे शालिग्रामकी शपथ लेकर यह शर्त-

अमरसिंहजीके जोधपुर पहुँचने पर बीकानेरके वे विद्रोही सामंत जो जोरावरसिंहजीके समयसे उपद्रव मचाते चले आते थे आप ही आप इनसे जा मिले । जोधपुरपति अभयसिंहजीको तो बीकानेरसे लड़ाई करनेका एक अमल सा पड़गया था पर राजा जयसिंहजीने आपसमें जो संधिबंधन करवादिया था उसीसे बद्ध होकर वह अब-तक चुप थे । यह मौका हाथ आते ही उन्होंने अमरसिंहजीको बड़े आदरभावसे लिया और रघुनाथ, व रूपसिंह चंपावत रतनचंद भंडारी और टीकमदास भंडारी इन तीन सरदारोंकी मातहतीमें कोई दस हजार फौज अमरसिंहजीके साथ करके उन्हें बीकानेर पर हमला करनेके लिये भेजा । अमरसिंहजी इस जोधपुरी फौजके साथ बीका-नेरमें किलेके मुकाबिले डेरा डालकर डटे रहे । कई महीने तक पर-स्पर छोटी छोटी लड़ाइयां होती रहीं, किन्तु सार कुछ भी न निकला । अन्तमें जब जोधपुरी सेनाके सिपाही तृषा और तापकी ताड़नासे संतप्त होकर व्याकुल हो उठे एवं अन्यान्य आवश्यक सामग्रीकी भी कमी हुई तो उनके अफसरोंने गजसिंहजीसे कहला भेजा कि दोनों भाई आपसमें भूमिका बटवारा करके झगड़ा निबटा लो तो अच्छा है।

--कराई कि हमसे अबके पीछेका कोई हिसाब खजाने पर राज्यके तोशाखानेका न लिया जावेगा । फिर अन्दर लेजाकर मङ्गल आरतीके वक्त उक्त तिथिको उन्हें गद्दी पर बिठाकर सलामीको तोपें दगवाई । तोपोंकी आवाज सुनकर जब अमरसिंहजी सचेत हुए और डेरेमें तलास करने पर उन्होंने गजसिंहजीको भी न पाया तब उन्हें सारा भेद मालूम हुआ और वह वहींसे जोधपुरको अभय-सिंहजीकी शरणमें चले आये ।

इसी सम्बन्धमें किंवदन्ती है कि एक समय अमरसिंहजी घोड़े पर सवार होकर शहरमें घूमनेके लिये निकले और जब वह मेहता बखतावरसिंहके मकानके पास पहुंचे तो मकानकी रौनक देखकर किसी साथवालेसे बोले कि यदि मैं राजा हुआ तो यह मकान खाली कराकर तुम्हें दिलादूंगा । यह बात मेहताकी माने सुन ली । जब अमरसिंहजीको गद्दी होनेकी बात चली तो मेह-ताकी माने अपने बेटेको यह बात याद दिला कर कहा कि अमरसिंहजीको नहीं गजसिंहको गद्दी बिठा लो और तदनुसार उक्त गुप्त कार्रवाई करके गजसिंहजी गद्दी बिठाये गये थे ।

यह संदेसा सुनते ही दूरदर्शी गजसिंहजी उनकी आन्तरिक निर्बलता-को ताड़ गये और उत्तरमें कहला भेजा कि इस तरह तो मैं सूईकी नोकभर भी भूमि न दूँगा किन्तु झगड़ेका निबटेरा सबेरे अवश्य ही कर दूँगा वे सावधान रहें। यह घटना संवत् १८०४ की है।

यह समाचार पाकर जोधपुरी फौजने सुजानसागर कुँवेंपर मोरचा जमाया। इधर प्रातःकाल होतेही महाराज गजसिंहजी अपनी फौजको पांच भागोंमें विभक्त करके शत्रुदल पर चढ़ गये। सूर्य्योदयसे मध्याह्न पर्य्यन्त दोनों सेनाओंका तुमुल युद्ध हुआ। उसमें जोधपुरकी तरफके कोई पांचसौ आदमी और तीस सरदार काम आये और अठारह सरदार बीकानेरके खेत रहे। अन्तमें फौजके सरगना रतनचंद भंडारी और अमरसिंहजीके मृतप्राय घायल होनेसे अन्य सब सरदार घबड़ा उठे और सिपाही खेत छोड़कर भागे। अपनी फौजके इस तरह विचल जानेका समाचार पाकर अभयसिंहजीने डीड्वानेसे कुछ नयी फौज मददके लिये भेजी किन्तु लाभ कुछ न हुआ। इस लड़ाईमें हार खाकर अमरसिंहजी तो जोधपुरको चले गये और इस राज्यके बाकी जागीरदार जो उनकी सहायता पर थे स्वयं गजसिंहजीकी सेवामें उपस्थित होकर क्षमा प्रार्थी हुए। नीतिनिपुण गजसिंहजीको जिन लोगोंकी तरफसे फिर भी दगा होनेका संदेह था उन्हें तो उन्होंने कतल करवा दिया और शेषको यथाविधि आजीविका देकर क्षमा कर दिया। महाराजकी इस क्षमाशीलताका क्या जागीरदार क्या साधारण प्रजा सब पर ऐसा असर पड़ा कि फिर किसीने नये सिरेसे राज्यके विरुद्ध सिर उठानेका साहस नहीं किया। यदि किसीने किया भी तो महाराजने साम दान दण्ड भेद जिस तरहसे हो सका उन्से शान्त करके पुनः अपना लिया। गरज यह कि घरके लोग फूटकर बाहरवालोंसे नहीं मिलने पाये।

इसी बीचमें अभयसिंह और बखतसिंहमें फिर अनबन होगई और बखतसिंहने राजा गजसिंहजीको सहायताके लिये बुलाया। यह भी पुराना वैर साधनेका अवसर जानकर सेना सहित नागौर जा पहुँचे परंतु जयपुरनरेश ईश्वरीसिंहजीने बीच बचाव कर दोनों भाइयोंमें परस्पर

संधिबंधन करा दिया इसलिये गजसिंहजी राजधानीको वापस चले आये। तब तक समाचार मिला कि राज्यकी दक्षिण पश्चिम सीमा पर भाटियोंने जोर पकड़ा है और बीकमपुरका ठाकुर जैसलमेरके रावलसे मिलगया है। अतः महाराजने स्वयं वहां जाकर उस ठाकुरको मारा और बीकमपुर पर दखल कर लिया। इतनेमें इनके पिता अनंद-सिंहजीकी मृत्युका शोक समाचार पहुंचा जिसे सुनते ही यह कुम्भक-रनभाटीको वहां पर अपना नायब नियत करके चले आये। अभी पिताके श्राद्ध कर्मसे निश्चिन्त भी न होने पाये थे कि जैसलमेरके रावलने बीकमपुरपर अपना कब्जा कर लिया। इस पर महाराज पुनः जैसलमेरके मुकाबलेमें पधारनेकी तय्यारी कर रहे थे कि नागौ-रसे बखतसिंहजीने समाचार भेजा कि अभयसिंहजीका देवलोक होगया और उनके पुत्र उत्तराधिकारी रामसिंहने मेरी अप्रतिष्ठा की है इसलिये मैं जोधपुर पर आक्रमण करना चाहता हूं। आप शीघ्रही सहायताके लिये पधारें। यह घटना संवत् १८०५ की है।

दूरदर्शी महाराज गजसिंहजीने जैसलमेरके बनिस्वत जोधपूरके मामलेको जबरदस्त और मुख्य समझकर तुरंतही सेना सहित नागौ-रकी तरफ कूंच किया। इस बार भी जयपुर नरेश सवाईसिंहजीने आपसमें सुलह करा दी परंतु संवत् १८०७में ईश्वरीसिंहजीका स्वर्ग-वास होने पर गजसिंहजीकी सहायतासे बखतसिंहने जोधपुरको जा घेरा और मेड़तेके पास दो लड़ाइयोंमें रामसिंहजीको शिकस्त देकर राज्य पर अपना कब्जा करलिया। इस तरह असाढ़ सुदी ९ संवत् १८०८ को बखतसिंहजीको जोधपुरकी गद्दी पर बिठाकर महाराज विवाह करनेके लिये जैसलमेर पधारे। इस बरातमें बखतसिंहजीके पुत्र विजयसिंहजी भी शामिल थे। इधर महाराजकी गैरहाजिरीमें राज्यके प्रबंधमें कुछ गड़बड़ होगयी थी, इसलिये इन्होंने जैसलमेरसे लौटते ही मेहता बखतावरसिंहको बरखास्त करके मूंदड़ोंको अपना दीवान मुकर्रर किया.

संवत् १८०९ में तहसील सुजानगढ़में बीदासरके पास एक तांबे-की खानका पता लगा था पर उससे विशेष लाभ न होनेके कारण

काम जारी नहीं रक्खा गया। इसी साल दिल्लीके बादशाह महम्मद-शाहने मसूरअलीको दमन करनेके लिये महाराज रायसिंहजीसे सहायता मांगी। महाराजने मेहता, बखतावरसिंहको एक सबल राठौड़ सेना सहित शाही सेवामें भेजकर साम्राज्यके गौरवकी रक्षा की। इसके पुरस्कारमें वहांसे मय एक खिलअतके सात हजारी मनसब, हिसार परगना जागीरमें "श्रीराजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराज शिरोमणि" का खिताब मिला। संवत् १८१० में महाराज गजसिंहजीको चांदीका सिक्का बनानेका अधिकार भी शाही दरबारसे दिया गया।

स्मरण रहे कि हिसार परगना इस समय शाही दखलमें नहीं था इसलिये शत्रुका कब्जा हटाकर महाराजको वहांकी नये सिरेसे व्यवस्था करनी पड़ी। अभी गजसिंहजी हिसारहीमें थे कि बखत-सिंहजीका देहान्त होने पर अधिकारच्युत रामसिंह मरहटा सरदार जय अप्पा सिंधेकी सहायता लेकर जोधपुरके नवयुवक महाराज विजय-सिंहपर चढ़ आये। विजयसिंहजीने गजसिंहजीके पास समाचार भेजा। महाराज अपने मित्रपुत्रकी सहायताके लिये नौ हजार राठौड़ सेना लेकर मेड़ताके मुकाम पर जा पहुंचे। इस वक्त रामसिंहका जोड़ तोड़ सबल था। मौजा गंगारूके पास जो पहली लड़ाई हुई उसमें तो रामसिंहको सात कोस पीछे हटना पड़ा परंतु दूसरी लड़ाईमें रामसिंह विजयी होकर जोधपुर पर काबिज होगये और विजयसिंहको नागौर-की तरफ भागना पड़ा। इस लड़ाईमें बीकानेरी फौजके १५ सरदार और कई सो सिपाही काम आये।

महाराष्ट्रोंका इस समय बड़ा जोर था किसी भी देशी राज्यको उनके विरुद्ध शस्त्र उठानेका साहस करना मानो अपने पैर पर आप कुल्हाड़ी मारना था। बुद्धिमान् गजसिंहजीने जब देखा कि अब हम बलसे विजयसिंहजीको जोधपुरकी गद्दीपर पुनरभिषिक्त नहीं कर सकते तो

(१) ध्यान रहे कि इस समय जयपुर जोधपुर आदि सब राज्य दिल्लीसे उदासीन रहते थे बरन यों समझिये कि इन्हें आपसी झगडोसे इतना अवकाश भी न था कि इस नाजुक वक्तमें शाहीदरबारसे कुछ लाभ उठाते।

उन्होंने कौशलका सहारा लिया।वे विजयसिंहजीको लेकर सीधे जयपुर पहुँचे। उस समय बूँदी और करौलीके राजाभी जयपुरमें पधारे हुए थे। चंदरोज सबकी आव भगतहोजाने पर जब उक्त राजा लोग बिदा होगये तब गजसिंहजीने जयपुरनरेश माधवसिंहजीसे विजयसिंहजीको सहायता देनेकी बात छेड़ी। इस पर माधवसिंह साफ मुकुरगये, उलटे उन्होंने गुप्तरूपसे इस बातका प्रबंध किया कि विजयसिंह यहीं मार-डाले जायँ। इस बातका पता जब गजसिंहजीको मिला तो उन्होंने एक तरफ तो अपने कई विश्वासपात्र मुसाहब सतत विजयसिंहजी-की रक्षा पर नियत कर दिये और दूसरी तरफ आपने माधवसिंह-जीको समझाया कि ऐसा करनेमें आपको अपयशके सिवाय और क्या हाथ आवेगा ? घर आये शत्रुपर भी हाथ डालना क्षत्रिय वंशके विरुद्ध है इतनेमें रामसिंहजीके सहसा स्वर्गवास होनेका समाचार मिला। इसलिये विजयसिंहजी तो जोधपुरको चले गये और जयपुरमें महाराज गजसिंहजीके व्याहकी बातचीत चली। उन्होंने जयपुरमें दो विवाह किये। अभी महाराज जयपुरमें ही थे कि राज्यमें घोर अकाल पड़नेका समाचार उनके पास पहुँचा। महाराज तो जयपुरमें ही रहे परंतु उन्होंने मेहता भीमराजको मय दो मातहत अफसरोंके अकाल पीड़ित प्रजाकी रक्षाके लिये बीकानेरको भेज दिया। उन्होंने महाराजकी आज्ञानुसार एक तो जगह २ सदाव्रत जारी किये जिसमें दीन दुखियोंका पेट पले और दूसरे बीकानेरकी शहरपनाह बनवानेका काम जारी किया, जिससे राज्यकी लाखों प्रजा अकालकी अकाल मृत्युसे बचगयी।

निरन्तर जोधपुरके झगड़ेमें फसे रहनेके कारण महाराज गजसिं-हके राजधानीमें न रहनेसे एक तो रावतसरके ठाकुरोंने सिर उठाया दूसरे उत्तरी सीमापर जोइया लोगभी उपद्रव मचाने लगे। पहले तो महाराजने भटनेरकी तरफ एक फौज भेजी। इस फौजने हसन-मुहम्मद भट्टीसे भटनेरका किला छीनकर जोइयोंके गरोह पर आक्र-मण किया और उनके दलको तितर बितर कर सरगना सरदारको गिरफ्तार कर लिया। उसका नाम कमरुद्दीन था। जब वह बीका-

नेरमें लाया गया तो महाराज उससे बड़ी खातिरसे पेश आये और कुछ दिन उसे अपने पास रक्खा और समझा बुझाकर सिरोपाव और इनाम देकर उसे सादर बिदा किया। उसी समयसे जोइयोंका गिरोह जाटोंकी भांति राज्यकी सेवा चाकरी करने लगा। संवत् १८१९ में महाराजने रावतसरके ठाकुरोंको क्षमा किया और संवत् १८२० में बखतावर सिंहको दीवानीसे बरखास्त करके शाह मूलचन्दको अपना दीवान बनाया। इन्हीं दिनों समाचार मिला कि दाउद पोतरोंने अनूपगढ़ पर कबजा करलिया है उसके उद्धारके लिये नये दीवानकी मातहतीमें एक फौज गई और उक्त कमरुद्दीन जोइयाकी सहायतासे अनूपगढ़ पर शीघ्रही राज्यका दखल होगया। इसके बाद संवत् १८२५ में महाराजको स्वयं एक राठौड़सेनाके साथ सिरसा और फतेहाबादकी तरफ जाना पड़ा। इस मुहिममें भी कमरुद्दीन जोइयानें राठौड़ सेनाको समुचित सहायता दी। इसके पुरस्कारमें महाराजने उसे नगाड़ा और निशान बखशा और उसके साथी सरदारोंको मामूली सिरोपाव दिये गये।

इसी वर्ष महाराज गजसिंहजीकी बेटीका विवाह जयपुरके महाराज पृथ्वीसिंहसे हुआ. जिसमें राज्यका चार लाख रुपया खर्च हुआ। इस शादीके बाद महाराज जोधपुरसे विजयसिंहजीको साथ लेकर नाथद्वारको पधारे। इनके आनेका समाचार पाकर राणा अड़सीजी भी उदयपुरसे वहां आ गये। इन तीनों सरदारोंमें परस्पर बड़ा मेलजोल रहा। वहांसे लौटकर महाराज बीकानेरमें आये। कुछ दिन तो अमनचैनसे कटे पर राव बखतावरसिंहने जिसे महाराजने दीवानीसे अलग कर दिया था, कुंवर राजसिंहजीको महाराजके विरुद्ध उभाड़ दिया। पिता पुत्रमें कुछ दिनों तक योंही मन मुटाव रहा सं. १८३८ में कुँवर राजसिंह भागकर जोधपुर चलेगये। जोधपुरपति विजयसिंहजीने इनको बड़े प्रेमसे लिया पर फिर समझ बुझाकर शीघ्रही बीकानेरको वापिस कर दिया। राजसिंहजीके बीकानेर पहुंचने पर महाराजने उन्हें तो नजर कैद करादिया और उनके सहायकोंको कतल करवा दिया।

यहाँ यह स्पष्ट कहना परम आवश्यक जान पड़ता है कि बीकानेरके महाराज गजसिंह राजपूतानेके इतिहासमें वही चिरस्मरणीय स्थान और गौरव पाने योग्य हैं, जो जयपुरके महाराज जयसिंहको और जोधपुरके महाराज यशवंतसिंहको प्राप्त हुआ है। साथ ही इसके यह कहना भी अत्युक्ति या व्यर्थ साहस न समझा जावेगा कि यदि उक्त तीनों सरदार समकालीन होते तो आज हिन्दुस्तानके सम्राट् क्षत्रिय होते चिर शत्रुओंको मित्र बनाकर उन्हींसे काम निकालना क्या सहज बात है ? क्या राजपूतानेके इतिहासमें ऐसा और कोई प्रमाण दिया जा सकता है कि जैसलमेर, जोधपुर, जयपुर, उदयपुर, बूँदी, कोटा, किशनगढ़, करौली आदि सब राज्योंके राजा कभी परस्पर मित्रभावसे मिलकर रहे हों ? नहीं। क्या इसमें कोई संदेह है कि इनके उत्तराधिकारी या अन्य सब राजा लोग इस साम्यनीतिका अवलम्बन करते तो राजपूतानेको लूटेरे मरहटोंके दलसे पदाक्रान्त न होना पड़ता ? किन्तु खेद है कि महाराज गजसिंह जैसे बुद्धिमान् पुरुषको जो अपने ज्ञाति भाइयोंके लिये सौभाग्यका रास्ता साफ कर रहा था, एवं अपने पीछे राजपूतके इतिहासमें साम्य नीतिकी स्थितिका एक आदर्श होगया है अपनी अन्तिम अवस्था बड़े शोकमें बितानी पड़ी। जिस पाटवी (ज्येष्ठ) पुत्रको वे हृदयसे चाहते थे वही बेइमानोंके कहनेमें आकर उनसे बिगड़ बैठा और जब किसी तरह राहमें आया तब निराश अवस्थामें व्याधिग्रस्त हो गया सबसे अधिक शोक गजसिंहजीको इस बातका था कि मैं तो सारे जमानेको मेलामिलायकी गैलें दिखाऊं और मेरे घरमें ही फूट पैर फैलाय। गजसिंहजीके पाटवी कुमार राजसिंहजी कैद होनेपर बीमार हो गये थे उनकी बीमारी यहाँतक बढ़ी कि हकीमोंने उन्हें लाइलाज बतला दिया था। फिर भी महाराज अपने अन्तिम समयमें उन्हीं राजसिंहजीको अपना उत्तराधिकारी नियत करके चैत सुदी ६ संवत् १८४४ को इस असार संसारसे चल बसे।

तीसरा खण्ड समाप्त।

श्रीः ।

बीकानेर राज्यका इतिहास ।

चौथा खंड.

महाराज सूरतसिंहजी ।

कर्नल टाड साहबने लिखा है कि पूर्वोक्त महाराज गजसिंहजीके ६१ बेटे थे जिनमेंसे छः दो पटरानियोंके गर्भसे राजकुमार थे और शेष ५५ भार्य्या पुत्र थे । उक्त छः राजकुमारोंके नाम ये हैं—राजसिंह, सुरतानसिंह, अजबसिंह, छत्रसिंह, सूरतसिंह और श्यामसिंह।

लिखा जा चुका है कि महाराज गजसिंहकी मृत्युके समय, उनके ज्येष्ठ यानी पाटवी कुमार राजसिंहजी असाध्य रोगसे पीड़ित थे पर फिर भी महाराज उन्हींको अपना उत्तराधिकार देकर स्वर्गवासी होगये थे । राजसिंहजी केवल तेरह दिन राज्य करके इस असार संसारसे चलबसे । संग्रामसिंह मंडलावत राजपूत भी—जिसपर राजसिंहजी विशेष कृपा रखते थे इनकी चितामें जीतेजी आहुति हो गया (१) राजसिंहजीके प्रतापसिंह नामक एक राजकुमार था जिसकी अवस्था उस समय केवल सात वर्षकी थी वह तो गद्दीका

(१) कर्नल टाडका मत है कि राजसिंहजीकी मृत्यु विषप्रयोगसे हुई और विष उनकी विमाता यानी राजा सूरतसिंहकी माताने दिया था पर ख्यातमें इसके विरुद्ध यह लेख है कि गजसिंहजीकी मृत्युके पश्चात् राजसिंहजीके भयसे उनके पांचों भाई जोधपुरको भाग गये थे और राजसिंहजीने मरते समय सूरतसिंहजीको स्वयं अपना उत्तराधिकारी नियत किया था किन्तु ख्यातकी बातके बनिस्बत टाड साहबका लेख माननीय हो सकता है, क्योंकि वे उस समय स्वयं राजपूतानेमें मौजूद थे और ख्यात बहुत पीछेकी लिखी है ।

मालिक निश्चित किया गया और राजसिंहजीने अपने विमातृ भाई सूरतसिंहजीको अपने इकलौते पुत्र प्रतापका संरक्षक नियत करके राजकाजका भार उनको सौंप दिया था ।

राज्यकी ख्यात लिखनेवाले चारण दयालदासजीने महाराज सूरतसिंहजीके गद्दीपर बैठनेका समय संवत् १८४४ आसोज बदी २ माना है और आगे लिखा है कि इनके गद्दीपर बैठनेके पश्चात् तीन वर्ष पर्यंत कोई विशेष घटना संघटित नहीं हुई किन्तु कर्नल टाडसाहब लिखते हैं कि राजसिंहजीकी मृत्युके पश्चात् सूरतसिंहजीने अपने अबोध भतीजे प्रतापसिंहजीके संरक्षक या प्रतिनिधि रूपसे अठारह महीने पर्य्यंत बड़े शान्त भावसे राजशासन किया और जब इस बीचमें राज्यके समस्त कर्मचारी या जागीरदार लोग उनके वशवर्ती या अनुगत हो गये तब उन्होंने स्वयं बीकानेरकी गद्दी पर बैठनेके लिये प्रयत्न करना आरंभ किया । महाजन और भाद्रांके सरदार सूरतसिंहजीके विशेष कृपापात्र तथा अनुगत थे । सूरतसिंहने सबसे पहले अपने इन्हीं दोनों मित्रों पर अपना आन्तरिक अभिप्राय प्रगट किया । पहले तो वे सूरतसिंहजीकी सहायता करनेसे हिचके पर जागीरकी तरक्की और राज्यमें विशेष अधिकार वा प्रभुत्व पानेकी लालसाने उन्हें सूरतसिंहजीकी आज्ञा पालन करने पर बाध्य कर दिया। किन्तु राज्यके प्रधान कर्मचारी बखतावरसिंहको जब यह भेद मालूम हुआ तो वह पूर्णरूपसे सूरतसिंहजीके विरुद्ध आचरण करने लगा । यह देखकर सूरतसिंहजीने बखतावरसिंहको तो कैद करवा दिया और आप अब खुल्लमखुल्ला गद्दी पर बैठनेके प्रयत्नमे दत्तचित्त हुए ।

सूरतसिंहजीने सबसे पहले भूकरकाके उस सामंत पर आक्रमण किया जो उनकी इच्छामें बाधा देनेवालोंमें प्रधान[1] था । इन्होंने मुकाम

(१) वस्तुतः विश्वासयोग्य एक किंवदन्ती है कि राजसिंहजीका देहान्त होनेके बाद जब उनके पुत्र प्रतापसिंहजीको राज्याभिषेक होने लगा और बालक महाराज गद्दी पर बैठकर समस्त राज्योचित नियम पालन करनेमें असमर्थ देखे गये तब भादरां और महाजनके ठाकुरोंने सूरतसिंहजीको सम्मति दी

नौहरमें जाकर भूकरकाके ठाकुरको मुलाकातीके तौर पर बुला भेजा और जब वह आकर हाजिर हुआ तो उसे उन्होंने नौहरके ही किलेमें कैद कर दिया। फिर अजितपुराको लूटते हुए सांखू पर आक्रमण किया। सांखूके ठाकुरने पहले तो मुकाबला किया पर जब राज्यकी फौजसे जय पाना असंभव समझा तब उसने आत्महत्या कर ली। सांखूके दुर्जनसिंहके पुत्रको सूरतसिंहजीने कैद करनेके बाद बारह हजार रुपया दंडमें लेकर तब उसे छोड़ा। इसके बाद इन्होंने चुरूको जा घेरा। छः महीने तक राज्यकी फौज घेरादिये पड़ी रही पर चुरूका ठाकुर हाथ न आया। तब सूरतसिंहजीने नगरको लूट कर कतल आम बोलनेका विचार किया, इतनेमें नौहरके किलेमें बंद भूकरकाके सामंतके यहाँसे समाचार पहुँचा कि वह राजाकी सेवा स्वीकार करनेके लिये सब तरहसे सन्नद्ध हैं। यह समाचार पाते ही महाराजने उसे बंधनमुक्त कर दिया। अन्यान्य विद्रोही ठाकुर लोग सब भूकरकाके ठाकुरके कहनेमें थे, उन्होंने भी प्रसन्नतापूर्वक सूरतसिंहजीकी अधीनता स्वीकार कर ली और दो लाख नगद नजरानेमें लेकर चुरू नगरके लूटनेका संकल्प भी सूरतसिंहजीने छोड़ दिया।

कि आप खुद महाराजको गोदमें लेकर गद्दी पर बैठ जाओ। तदनुसार किया भी गया। इस विषयमें और तो किसीने हस्तक्षेप न किया परन्तु भूकरकाके ठाकुरने भरे दरबारमें बिगड़कर सूरतसिंहजीको गद्दीसे उतर जाने पर बाध्य किया। चुरू अजितपुरा और सांखूके ठाकुरोंने भी भूकरकाके ठाकुरका साथ दिया और ये सब लोग दरबारसे सरोष उठकर डेरोंको चले गये। दूसरे दिन जब नियमानुसार लक्ष्मीनारायणजीके मंदिरको सवारी चली और फिर भी सूरतसिंहजी बालक महाराजको गोदमें लेकर हाथी पर सवार हुए तो उक्त दुर्बुद्धि ठाकुर लोग मरने मारने पर उतारू होकर रास्तेमें आड़े आगये और जब सूरतसिंहजीको सरे बाजार हाथी परसे उतार दिया तब मानो इस गहरे अपमानसे सूरतसिंहजीके हृदय पर ऐसी ठेस लगी कि अन्तमें उन्होंने अपने प्राणप्रिय भतीजेके भी प्राण लिये और उक्त ठाकुरोंका भी सर्वनाश करके उन्हें मिट्टीमें मिला दिया।

इस प्रकार अपने प्रबल शत्रुओंको दमन करनेके पश्चात् सूरतसिंह-जीने राजधानी बीकानेरमें आकर देखा कि यहाँके राजकर्मचारीगण बहुधा उनसे स्पर्धा रखते हैं और फिर भी यावत् रूपसे उनकी आज्ञा पालन करनेमें राजी नहीं हैं तब तो उन्होंने बालक महाराज प्रताप-सिंहजीको सदाके लिये इस संसारसे बिदा करके अपने सौभाग्य और प्रभुत्वका रास्ता साफ करना निश्चित किया। इसकेलिये उन्होंने गुप्त रूपसे अनेक यत्न किये पर इनकी ही छोटी बहिनके कारण एक भी उपाय कृतकार्य न हो सका। उस राजकुमारीको सूरतसिंहजीकी आन्तरिक लालसाका उसी दिनसे पता लगगया था जिस दिन वह ठाकुरोंसे अपमानित कियेगये थे। इसलिये वह बालक महाराज प्रतापसिंह-जीको सोते जागते एक क्षणके लिये भी अपनी आँखोंकी ओट न होने देती थी। निदान सूरतसिंहजीने उक्त राजकुमारीके बिवाहकी तैयारी कर दी। यद्यपि उसका बिवाह मेवाड़के महाराणा अड़सी-जीसे निश्चित हो चुका था किन्तु इस संबंधसे अपने स्वार्थमें विशेष बाधा पड़नेकी आशंका करके सूरतसिंहजीने नरवरके महा-राजके यहाँ संबंध करना निश्चित किया। वह राजकुमारी इस संबंधसे बहुत असंतुष्ट और अप्रसन्न थी, किन्तु हिंदू राजकुल—ल-लनाएँ प्राण जाने पर भी कुलकानकी आन नहीं उल्लंघन कर सकतीं। अन्तमें जब नरवरके महाराज उक्त राजकुमारीको बिवाह कर अपनी राजधानीको लेगये तो एक दिन अवकाश पाकर सूरतसिंहजीने स्वयं अपने हाथसे अबोध महाराज प्रतापसिंहका सिर धड़से जुदा कर-दिया। इस विसंवादका सर्व साधारणके हृदय पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि सब लोग सूरतसिंहजीको घृणा स्पर्धा और द्वेषकी दृष्टिसे देखने लगे यहाँतक कि वे सामंतलोग जो अब तक स्वयं इनके अनुगत थे इनसे मनमें द्वेष करने लगे किन्तु सूरतसिंहजी राजकर्मचारियों तथा राजधानीमें उपस्थित वैतनिक सेनाको पहले ही से अपने पक्षमें दृढ़

(१) कहा जाता है कि नरवरके महाराज यहाँ छः महीने तक पड़े रहे थे। उस समय उनको रुपयेकी बड़ी आवश्यकता थी अतएव सूरतसिंहजीने उन्हें दहेजमें दो लाख रुपये नगद दिये थे।

कर चुके थे इसलिये कोई भी प्रकाशमें उनसे विरोध करनेमें समर्थ न हो सका।

राज्यकी ख्यातमें महाराज सूरतसिंहजीका इतिहास यहींसे आरंभ होता है। उसमें लिखा है कि संवत् १८४८ में महाराजने रायमल वैद्यको अपना कामदार यानी रियासतका दीवान मुकर्रर किया और इसी साल जोधपुरके महाराज विजयसिंहजीने गद्दीनशीनीके उपहारमें महाराजको तुहफे भेजे। इसी वर्ष इनके पास जयपुरका वकील भी आया और यहाँका एक वकील जयपुरमें कुछ सरहदी झगड़ेको तय करनेके लिये गया। अस्तु यही संवत महाराज सूरतसिंहजीके गद्दी पर बैठनेका निश्चित समय माना जा सकता है।

कहा जा चुका है कि सूरतसिंहजी छः भाई थे। उनमेंसे राजसिंहजीकी मृत्युके पश्चात् श्यामसिंह और छत्रसिंह (जिनकी संतानसे बीकानेरके वर्त्तमान महाराज हैं) सूरतसिंहजीके अनुगत होकर राजधानीमें रहते थे परंतु सुरतानसिंह और अजबसिंह प्रतापसिंहके मारेजाने पर जयपुरको चले गये थे। महाराज जयपुरने उन्हें आश्रय तो दिया किन्तु सूरतसिंहजीसे युद्ध करनेके लिये सैनिक सहायता देनेसे इनकार करदिया। तब वे भटनेरमें जाकर जाबताखाँ भट्टीसे मिले। जाबताखाँ इनकी सहायताके लिये सहमत होकर आसपासके कुछ जोइया लोगोंको भी मददके लिये बुलालाया और सात हजार फौज इकट्ठी करके सूरतसिंहजीसे लोहा लेने पर सन्नद्ध हो गया। यह बात संवत् १८५६ की है। इसी वर्ष महाराज सूरतसिंहजीने राज्यके आन्तरिक शासन प्रबंधसे अवकाश पाकर सूरतगढ़की आबादीकी नीव डाली थी; उन्हें उक्त समाचार ज्ञात हुआ। तब सूरतसिंहजीने शीघ्र ही भट्टियोंको दमन करनेके लिये तय्यारी की। ठाकुरान रावतसर भूकरका और जैतपुराकी सामंतसेना तथा कुछ राज्यकी वैतनिक सेनासे भटनेर पर हमला किया गया। मुकाम

(१) इन दोनोंकी औलादके लोग अब भी जयपुर राज्यमें हैं और उनका बीकानेर राज्यसे कोई सम्बन्ध नहीं है।

डबलीके पास लड़ाई हुई जिसमें भट्टी परास्त हुए और राठौड़ सेना-ने विजय पाई। इसी लड़ाईके मैदानमें विजयस्तंभ स्वरूप फतेहाबाद नामका एक शहर सूरतसिंहजीने आबाद किया। जाबताखां इस लड़ाईमें हार कर ईस्ट इण्डिया कंपनीकी शरणमें गया जो उस समय सिरसा हिसार होते हुए मुलतान तक दबदबा जमाये बैठी थी। कंपनीकी तरफसे जार्ज टामसन साहबने भटनेरके किलेको आ घेरा और राज्यकी फौजको हटाकर उसे जाबताखांको दिलवा दिया किन्तु थोड़ेही दिनों बाद इस राज्यके पट्टेदार ठाकुर रावत बहादुर सिंहने भट्टियोंको भगाकर भटनेरके किलेको बीकानेर राज्यकी सीमामें मिलालिया। भटनेरके आस पास टीबी आदि स्थानोंमें भी राज्यकी फौजके थाने बैठ गये।

भटनेरके किलेको अपना लेनेके बाद भी महाराज सूरतसिंह-जीने शान्तभावसे राजधानी बीकानेरमें रहकर राजसुख भोगना उचित न समझा। वे भलीभाँति जानते थे कि यह सुख भोग शीघ्र ही हमारे संमुख दुःखभोगकी सामग्री उपस्थित करदेगा। हमारे राठौड़ वीर क्या सामंत क्या सिपाही जो सदासे मरने मारनेमें अभ्यस्त हैं. समय और अवकाश पाकर हमारा विरोध करनेके लिये संयुक्त बलसे उद्यत होजायँगे इसलिये इनको राज्यसीमाकी वृद्धिके लाल-चमें उलझाये रहना उचित है। दूसरे सीमा वृद्धिके लिये समय भी अनुकूल था। एक तो मरहठे, दूसरे अँगरेज, तीसरे पिंडारे और चौथे राजा रणजीतसिंहकी पंजाबी सेना—यह ४ बड़ी २ शक्तियां पर-स्पर खुलकर खेल रही थीं इनके सिवाय और जिसको जहाँ मौका हाथ लगता वह अपनी २ ढाई चावलकी खिचड़ी पकाता था। निदान सूरतसिंहजीने भूकरकाके ठाकुर अभयसिंहके नेतृत्वमें पूगल, रानेर, छतीसर, जसाना, इमनसर, जोगल और बितना आदिकी सामंत सेना तथा राज्यको वैतनिक सेना (जिसमें कुछ सिख पठान और यादव घुड़सवार भी थे) और तोपखाने सहित दिल्ली और

मुलतानके रास्तेके किलों पर आक्रमण किया। शायद सूरतसिंहजीकी यह इच्छा थी, कि मुलतान पर हमला करते हुए सिन्धके किनारे तक बीकानेर राज्यकी सीमा बढ़ा ली जावे। इस राज्यकी सेनाका पड़ाव अनूपगढ़में था कि इतनेमें राज्य भावलपुरका एक सबल सामन्त खुदाबख्श दाऊद पोतरा सूरतसिंहजीसे आ मिला। कारण यह कि वह भावलपुर राज्यान्तर्गत मौजगढ़का पट्टेदार था परंतु भावलपुरके हाकिम भावलखांने उसे किसी कारणवश पट्टा छीनकर राज्यसे निकाल दिया था। खुदाबख्श एक जोरदार आदमी था। उसके कई हजार ज्ञाति बांधव उसके कहनेमें थे। अस्तु जब महाराज सूरतसिंहजीने उसे १२ गांवका पट्टा देकर संतुष्ट कर लिया तब वह मय अपने भाईबेटोंके जीजानसे बीकानेर राज्यका शुभचिंतक सेवक हो गया और कई हजार दाऊद पोतरोंके दलके साथ आक्रमणोद्यत राठौड़ सेनासे जा मिला। यह बात संवत् १८५८ की है।

संवत १८५९ का आरंभ होते ही रियासतके दीवानका पुत्र जैतराव मेहता सब सेनाका अफसर मुकर्रर किया गया। इस पचीस हजार फौजके साथ जैतरावने अनोहागढ़ शिवगढ़ मौजगढ़ और कूलरा आदि किलों पर अधिकार करते हुए सतलज तक राठौड़ राज्यका आतंक जमा दिया। यहाँसे एकबएक भावलपुर पर हमला किया गया। भावलपुरके नवाबने छः महीने तक राठौड़ सेनाका मुकाबला किया किन्तु जब उसने देखा कि मैं लड़कर बच नहीं सकता तो उसने खुदाबख्शसे संधि कर ली और उसीकी मारफत

(१) बीकानेरकी घुड़चढ़ी फौजमें अब भी बहुतेरे सिख हैं। जो कुछ पंजाबी बीकानेरमें घरवार समेत बसेहुए हैं वे प्रायः सूरतसिंहजीके समयमें ही खासतौरसे बुलाये गये थे। यादव लोग लखनऊके नौकर थे, लखनऊ पर अँग्रेजी कब्जा हो जाने पर जब वहाँकी फौज भागी तो वहाँके कई सौ सवार सूरतसिंहजीने रख लिये। बीकानेरमें जो परदेशियोंका प्रभाव जमा हुआ है वह सूरतसिंहजीके ही समयसे है क्योंकि देशी लोग तो उनसे घृणा करते थे, सिर्फ विदेशी लोग उनके बल और प्राणरक्षाके आधार थे।

जैतरावको फौजका राह खर्च और हर्जाना देकर अपना पिंड छुड़ाया । इस प्रकार थोड़ेसे धनके लोभमें एक सुविस्तृत भूभागको हाथसे गवाँकर जब जैतराव बीकानेरमें आया तो महा-राजने उसे उस पदसे च्युत करदिया । वास्तवमें जैतरावसे बड़ी गलती हुई ।

महाराज सूरतसिंहजीका मन्तव्य सिंधकी सीमापर दखल जमानेका था अतएव उन्होंने अपना प्रण पूरा करनेके लिये अड़ौनीके ठाकुरोंके साथ केवल डेढ़सौ, राठौड़ सिपाही भेजकर किला खानगढ़को अपने कब्जेमें करलिया । इस बीचमें जाबताखाँ भट्टीने पुनः भटनेर पर अपना दखल जमा लिया था । उसे परास्त करके भटनेरके किलेका उद्धार करनेके लिये यहाँसे चार हजार राठौड़ सेना राना अमी-रचन्दकी मातहतीमें भेजीगई । अमीरचन्दने जातेही मगसर बदी २ को किलेके पासवाले तालाव पर कब्जा कर लिया और किलेके चारों तरफ मोरचे बाँधकर वह डट गया । कई महीने घिरे रहने पर जब किलेमें रसदकी कमीके कारण भट्टीलोग भूखों मरने लगे तो जाबताखांने स्वयं किलेको अमीरचंदके सुपुर्द करदिया और आप सपरिवार पंजाबकी तरफ चला गया । यह बात वैशाख बदी ४ संवत् १८६२ की है । उस दिन मंगलवार था इस लिये उक्त किलेका नाम हनूमानगढ़ रक्खा गया । कहा जाता है कि उस दिनसे आजतक भट्टी वंशका कोई पुतला भी उस किलेमें नहीं जाने पाता ।

इसी वर्ष जोधपुरके महाराज भीमसिंहजीका देहान्त होनेके पश्चा-त् उनके ज्येष्ठ पुत्र जोधपुरकी गद्दी पर बैठे परन्तु सवाईसिंह नामक एक चांपावत सरदारने भीमसिंहजीके द्वितीय पुत्र धोकलसिंहजीका पक्ष समर्थन करके मानसिंहजीको गद्दीसे उतारना चाहा; इसलिये उसने जयपुरके महाराजसे सहायता माँगी और सूरतसिंहजीसे भी यह शर्त हुई कि यदि धोकलसिंहको जोधपुरका राज्य मिलगया तो बीकानेरकी सरहद पर स्थित फलोदी और उसके आस पासके २०

गाँव जिन्हें अनीतसिंहजीने जीत लिया था वापिस दिये जायँगे । निदान २० हजार राठौड़ सेना सहित सूरतसिंहजी जयपुर जा पहुँचे । वहाँसे दो लाख कछवाही सेना सहित जगत्‌सिंहजीने इनके साथ होकर जोधपुर पर आक्रमण किया । कुचामनके पास मानसिंहजीसे और धोकलसिंहजीसे लड़ाई हुई जिसमें मानसिंहजी भागकर जोधपुरके किलेमें जा छिपे । इस फौजने जोधपुर नगरको लूटा और किलेको घेर लिया । कई महीने तक घेरा डाले रहनके पश्चात् अन्तमें दोनों पक्षोंमें संधि होगई और सूरतसिंहजी सेना सहित राजधानीको चले आये । इसके तीन वर्ष बाद संवत १८६५ में जोधपुरपति महाराज मानसिंहजीने बीकानेरके किलेको आ घेरा । जोधपुरी फौजने देशनोंक गजनेर आदि राजधानीके मुख्य २ स्थानोंपर चारों-ओरसे अपना दखल जमा लिया । कई महीने तक घेरा पड़ा रहनेके पश्चात् अन्तमें दोनों पक्षोंमें सन्धि होगई और सूरतसिंहजीने तीन लाख रुपया फौजखर्च देकर राज्यका बचाव किया । इसी समय मिस्टर एलफिन्स्टन साहब काबुलको जातेहुए बीकानेरसे गुजरे। महाराज सूरतसिंहजीने उनका बड़ा आदर भाव किया और उन्हें किलेकी कुंजियाँ सुपुर्द करके कहा कि यदि इस समय हमको सरकार कंपनी बहादुरसे समुचित सहायता मिले तो हमारा बड़ा उपकार हो। लेकिन उस वक्त किसी देशी शक्तिको सहायता देना अँग्रेजी सरकारकी प्रचलित राजनीतिके विरुद्ध था; इस कारण एलफिन्स्टन साहब सूरतसिंहजीकी इच्छा पूर्ण न करसके ।

महाराज सूरतसिंहजीके जोधपुरकी चढ़ाईसे लौटनेके थोड़े ही दिनों पश्चात् कर्नल टाड साहब विलायतको पधारे थे । वे बीकानेरके इतिहासको इस टिप्पणीके साथ समाप्त कर गये हैं कि राजा सूरतसिंहने जो जोधपुर पर चढ़ाई की थी उसमें राज्यका २४ लाख रुपया खर्च पड़ा था । खजानेकी इस कमीको पूरा करनेके लिये प्रजा पर नाना प्रकारके जुल्म किये थे, इसी अवसर पर महाराज बीमार पड़े और ऐसे असाध्य रोगसे ग्रस्त हुए कि वैद्योंने भी जवाब दे दिया; किन्तु सौभाग्य वशात् थोड़े ही दिनोंमें वह आरोग्य हो गये । इस

समय रियासतके दीवान अमीरचंदने क्या खालसेकी प्रजा, क्या जागीरदार सबको तहसनहस करदिया, कारण एक तो पहलेहीसे राज्यपर कर्ज हो रहा था दूसरे फौजका खर्च चलाना। उसकी इस जुल्म ज्यादतीसे जाट तथा अन्य किसान लोग तो राज्य छोड़कर हिसार और हरियानेके जिलोंमें कंपनी गवर्नमेन्टकी छायामें जा बसे और जागीरदारोंने राज्यके विरुद्ध बगावत होने दी। संवत् १८६६से लेकर संवत् १८७२ तक समस्त राज्यमें एक प्रकारसे अराजकता फैलगई थी। दीवान अमीरचंद जिस किसी पट्टेदारसे रुपया माँगता और वह देनेसे इनकार करता उसीपर विदेशी सेनाके बलसे चढ़ाई करके उसकी सब धन संपत्ति हरण करलेता। यही हाल होते २ राज्यके छोटे बड़े सब ठाकुर लोग बागी होगये और चारों ओर लूट मार होने लगी। अमरचंदकी जोर जबरदस्तीसे खजानेमें रुपयेकी आमदनी देखकर सूरतसिंहजी उस पर प्रसन्न तो हुए और उसे रावका खिताब और सिरोपाव भी दिया. किन्तु जब उन्होंने देखा कि इसकी क्रूर करतूतके कारण बाप दादों के कमाये हुए राज्यसे भी हाथ धो बैठना पड़ेगा तब उन्होंने उसे पिंडारोंसे मेलरखनक अपराधमें कतल करवा दिया।

अब हम समयरूपी रंगशालाकी उस रंगभूमिमें प्रवेश करतेहैं जिसमें वर्तमान राजनैतिक अभिनयका मंगलाचरण हो रहा था। इस समय सुविस्तृत भारतवर्षमें इतनी सैनिक शक्तियां विद्यमान थीं—मुसलमान, मरहठे, गोरखे, पंजाबी, राजपूत और पिंडारे। किन्तु कुछ कालके लिये उदासीन नीतिका अवलंबन करने मात्रसे इन सबकी चोटी सरकार अँग्रेज बहादुरके हाथमें होगई थी; कारण यह कि कभी एकका और कभी दूसरेका पक्ष अवलम्बन कर जब बलवान शक्तियोंमें परस्पर फूटका बीज बोकर कम्पनी सरकारने एकदम अपना हाथ खींच लिया, तब इधर तो ये लोग आपसमें मरते कटते हुए इतने कमजोर होगये कि, इन्हें अब अपने पैरों खड़ा होना दुश्वार होगया और उधर सरकारने घराऊ (योरपमें) झगड़ोंसे निबटकर सीमावर्ती टापुओं तथा कालोनियों पर अपना पूर्ण अधिकार जमा लेनेके बाद अपनेको इस

योग्य बना लिया कि उसकी सहपाठिनी कोई अन्य योरोपीय शक्ति उसका मुकाबला न कर सके। फिर सरकारने सन् १८१५ई० में दिल्ली के बादशाह शाहआलमको आश्रय देकर साम्राज्य पर अधिकार करना उचित समझा।

इस समय हमारे देशी राज्य बड़ी ही दुरवस्थामें थे। गर्मीके दिनोंमें रेगिस्तानको पार करते हुए किसी लूके मारे मुसाफिरकी जो अवस्था होती है ठीक वही अवस्था हमारे राजपूत राज्योंकी थी, इन्हें बाहरी शत्रु मरहठे और पिंडारोंसे जो कष्ट था वह तो अलग, पर घरके ही वे जागीरदार ठाकुर जिन पर सदैवसे राज्यका-भार चला आता है इस समय स्वार्थवश होकर राज्योंके नष्ट करदेने पर उद्यत थे। वे इस समय राज्योंको निर्बल पाकर अपना २ विस्तार और वैभव बढ़ानेमें दत्तचित्त थे, पर उन्हें इस बातका स्वप्नमें भी ध्यान न था कि इस हमारे किञ्चित् विस्तारमें हमारी जातीयता एवं हमारी सन्तानके सर्वनाशका विषबीज छुपा हुआ है और सचमुच यदि उस समय इन राज्योंको अँग्रेज सरकारका आश्रय न मिलता और महाराष्ट्र या कोई दूसरी शक्ति बलवती होकर साम्राज्य सिंहासन पर अधिकार करलेती तो राजपूतोंकी अवस्था इस समय यहाँके जाटोंकी दशासे भी कहीं दीन हीन होती।

अतएव उक्त अमरचंदके मारेजाने पर वे जागीरदार ठाकुर या राज कर्मचारी जो केवल उसीके आतंक और अन्यायसे असंतुष्ट होकर राज्यके विरोधी होरहे थे फिरसे महाराज सूरतसिंहजीके अधीन होगये परन्तु चुरू भादरा और रावतसर आदिके कांधलोत और बीदावटीके बीदावत लोग, जो सदासे यह दावा रखते थे कि हमसे राज्यसे परस्परका सम्बन्ध है, न कि स्वामी सेवकका और तिसपर भी सूरतसिंहजीके बरबश राज्याधिकार लेनेके कारण वे उनसे और भी असन्तुष्ट थे, राज्यके विशेष विरोधी होगये। इन लोगोंने शेखावाटीके शेखावतोंसे मिलकर ऐसा जोर पकड़ा कि केवल राज्यकी वैतनिक सेनाके द्वारा उनका शान्त करना असंभव होगया। दूसरी तरफ भट्टी और जोइयोंने भी सिर उठाया। तब तो सूरतसिंहजीका माथा ठनका

उन्हें चारों तरफ अन्धेरा सूझने लगा। उन्हें अपने हाथसे राज्य चले जानेका इतना सोच न था, जितना सोच इस बातका था कि कहीं ऐसा न हो कि इस उलट पलटमें बड़े बूढ़ोंकी कमाईका सर्वथा सर्वनाश हो जाय। अन्तमें उन्होंने कोई अन्य उपाय न देखकर संवत् १८७४ में काशीनाथ ओझाको अपने प्रतिनिधि स्वरूप अँग्रेजी रेजीडेण्ट सर चार्लस मेटकाफके पास दिल्लीको भेजा। उसने उक्त साहब बहादुरसे राज्यका सम्पूर्ण विवरण निवेदन करके समुचित सहायताके लिये प्रार्थना की। साहब बहादुरने गवर्नर बहादुरकी आज्ञानुसार राज्यसे एक संधिपत्र[1] लिखवाकर उसीके अनुसार बीकानेरको एक बलवान सेना भेज दी। इस अँग्रेजी सेनाने यद्यपि राज्यकी केवल उत्तरी सीमाका उद्धार किया और फिर यह हिसारको लौट गई परंतु अँग्रेज सरकारके बलसे राज्यकी सेनाने विद्रोही ठाकुरोंके दबानेमें बड़ी हस्तलाघवता दिखाई। उधर वे लोग भयभीत होकर स्वयं शान्तिका अवलंबन करने लगे। ख्यातमें लिखा है कि अँग्रेजी फौजने १२ किले फतह करके राज्यको दिये थे और महाराज सूरतसिंहजीने उक्त संधिपत्रकी ७ वीं धाराके अनुसार (७५५२५) फौज खर्चके सरकारको दिये थे।

इसके तीन वर्ष बाद संवत् १८७७, में महाराजने अपने ज्येष्ठ पुत्रका विवाह जैसलमेरमें किया और उनसे छोटे मोतीसिंहजी[2] उदयपुरमें ब्याहे गये।

उक्त बगावतकी गड़बड़के समय टीबी जोकि इस समय एक तहसील है अँग्रेजी सीमामें मिल गया था। इसकी बाबत बहुत कुछ लिखा पढ़ी हुई परंतु सरकारने उसे उस वक्त वापिस नहीं दिया।

महाराज सूरतसिंहजी बड़े ही धर्मात्मा और विचारवान पुरुष थे। वे साधु ब्राह्मणोंको बहुत मानते थे। प्रसिद्ध है कि उनके राजकालमें कोई ब्राह्मण दरिद्री न था। उनसे जो राज्यलोभ या इर्षा वश

(१) सन्धिपत्रका भाषान्तर परिशिष्टमें देखो।

(२) मोतीसिंहजीकी रानी बीकानेरके राजकुलमें अंतिम सती हुई थीं इनका विवरण परिशिष्टमें देखो।

एक जघन्य कर्म बन पड़ा था उसके लिये वे स्वयं पश्चात्ताप करते थे इसी कारण फिर इन्होंने अपनी अन्तिम अवस्था दान पुण्य करते हुए केवल हरिभजनमें बिताई। उन्होंने करणीजीकी पूजाके दिन भी नियत किये। यानी प्रत्येक चतुर्दशीको दो छोटी पूजा होती हैं और आसोज तथा चैत्र सुदी १४ को बड़ी पूजा होती है। इन्होंने कई एक मन्दिर भी बनवाये और किलेके सामने वाला ताल भी खुदवाया जो उन्हींके नाम (सूरतसागर) से प्रसिद्ध है। यह महाराज संवत् १८८५ चैत्र सुदी ९ मीको स्वर्गवासी हुए। इनके युवराज कुमार रतनसिंहजीने मृतक क्रिया की।

महाराज रतनसिंहजी।

कुंडली चक्रके अनुसार महाराज रतनसिंहजीका जन्म संवत् १८४७ पौष बदी ९ को हुआ था। यह ३८ वर्षकी अवस्थामें संवत् १८८५ वैशाख बदी ५ को अपने पिताके उत्तराधिकारी होकर बीकानेरकी गद्दी पर बैठे। इनके सिंहासनासीन होनेके समय, महाजन रावतसर, बीदासर, भूकरका, जसाना, बाय, गोपालपुरा आदि रियासतके पट्टेदार ठाकुरोंने यथा नियम इनका तिलक किया, इनको नजराने दिये और इन्हें अपना प्रभु स्वीकार किया। मानो यह सब लोग महाराज सूरतसिंहजीके समयकी सब बातोंको भूलकर अब शान्तिसुखका आलिंगन करनेके अभिलाषी थे।

यह एक साधारण नियम है कि जब किसी राज्यमें प्रधान शासक या राज्याधिकारीका परिवर्तन होता है तब पार्श्ववर्ती अन्य राजा राज्यप्रबंधके हेरफेरके कारण राज्यमें एक प्रकारकी कमजोरी लक्ष करके अपने पैर पसारनेकी चेष्टा किये बिना नहीं रहते। अतः महाराज रतनसिंहजीके गद्दी पर बैठते ही जैसलमेरके ठाकुर लोग तथा प्रजावर्ग बीकानेर–राज्यकी सीमामें उपद्रव मचाने लगे। यहाँ तक कि वे राज्यके दो सौ ऊँट चुरा ले गये। यह समाचार पाकर महाराजने कुछ राठौड़सेना सहित जैसलमेरकी सीमा पर आक्रमण किया तब वहाँसे भाटी भी दलबल सहित चढ़ दौड़े।

इतना ही नहीं, इन दोनों पक्षोंने अपने २ मित्र अन्यान्य राज्योंको सहायताके लिये भी बुला भेजा और करीब था कि एक कलियुगी महाभारत हो जाय किन्तु न्यायवान् बृटिश गवर्नमेण्टने हस्तक्षेप करके दोनों राज्योंको (उन्हींके संधिबंधनकी धाराओंके अनुसार) शान्त करदिया । इसके दूसरे वर्ष सन १८२९ में बीकानेर, जयपुर, जोधपुर आदि तीनों राज्योंमें परस्पर सीमासंबंधी विवाद उपस्थित हुआ । इसे भी बृटिश गवर्नमेण्टने शीघ्र ही तय कर दिया । सरकारकी ओरसे सर जार्ज क्लार्क एक राजकर्मचारी नियत हुआ । एक एक प्रतिनिधि अन्यान्य सब राज्योंसे आये । इसी प्रकार इस राज्यकी ओरसे हिन्दूमल महाजन भेजा गया था । इस हिन्दूमलने राज्यके वकीलकी भाँति राज्यके बड़े २ काम किये जो आगे यथा समय लिखे जावेंगे ।

इन तीनों राज्योंकी हदबंदीके समय सरहदों परके ऐसे किले मिसमार (जमीदोज) करदिये गये थे जिनमें प्रायः बागी ठाकुरलोग आश्रय लेकर राज्योंके विरुद्ध खड़े होजाते थे या एक राज्यकी सीमामें लूटमार करके दूसरे राज्यमें जा छिपते थे और इसीसे परस्पर राज्योंमें झगड़े भी उत्पन्न होजाते थे । उन किलोंके टूटते ही ठाकुरोंमें खलबली पड़गई और राज्यमें फिर अशान्ति एवं राज्यविद्रोहने दर्शन दिये । एक तरफ महाजनके ठाकुर बैरीसालने राज्यके विरुद्ध जैसलमेरके भाटियों और जोइयोंसे मिलत शुरू की; दूसरी तरफ बनीरोत, साळावत और बीदावत लोग शेखावतोंसे मिलकर लूटमार करने लगे । अतः महाराज रतनसिंहजीने ठाकुर महाजनको सबल समझ कर उसी पर पहला आक्रमण किया । राज्यकी फौजसे डरकर ठाकुर बैरीसाल तो टीबीकी तरफ भाग गया और उसके पुत्र अमरसिंहने महाराजको आत्मसमर्पण करदिया । नीतिचतुर रतनसिंहजीने बैरीसालको भी क्षमा कर दिया पर इस शर्त पर कि वह ६० हजार रुपया जुरमाना राज्यमें दाखिल करे और उन लोगोंको कोई हानि न पहुँचावे, जिन्होंने उसके भागजाने पर राज्यको किला समर्पण कर दिया था । बैरीसालने इन दोमेंसे एक

भी प्रतिज्ञाका पालन न किया तब महाराज रतनसिंहजीने पुनः महाजनपर फौज भेजी, इस बार महाजनका ठाकुर पूगलको भाग गया और वहाँ पर राज्यसे लड़नेके लिये सामान सजने लगा। यह समाचार पाकर बीकानेर-राज्यकी सहायताके लिये नसीराबाद-की छावनीसे कुछ फौज आई। यह फौज रास्ते ही में थी कि महाराजने केवल अपनी राठौड़ सेनाके बाहुबलसे विद्रोहियोंको दमन करादिया। विद्रोही परास्त होकर भाग निकले और पूगलकी जागीरका पट्टा और किला रत्नसिंहजीने सार्दूलसिंह भाटीको दिया, जिसकी संतानमें यह किला अबतक है। इसी समय प्रताप-सिंह भादरावालेने भी राज्यके एक किलेपर आक्रनण किया परंतु उसका आक्रमण व्यर्थ हुआ।

संवत् १८८८ तदनुसार सन् १८३१ ई० में दिल्लीके नामधारी बादशाह अकबरशाह दूसरेने महाराज रतनसिंहजीको एक राजसी खिलतके साथ "नरेन्द्र[1]शिरोमणि" का खिताब अता फरमाया। इसी वर्ष बीदासरके महाजन और चांडवासके बागी ठाकुरोंने महाराजकी शरणमें आकर राज्यकी सेवा स्वीकार कर ली और प्रतापसिंह भाद-रावाला जो कि हिसारके किलेमें कैद था छोड़दिया गया।

सर्पको दूध पिलाना अच्छा किन्तु कृतघ्नको क्षमा करना अच्छा नहीं। उक्त भादरावाले प्रतापसिंहने स्वतंत्रता पाते ही राज्यमें फिरसे विद्रोहानल प्रज्वलित कर दिया। जोधपुर, जयपुर और जैसल-मेरके इलाकेके कई ठाकुरोंने प्रतापसिंहका साथ दिया। वे लोग बीकानेर राज्यकी सीमामें उपद्रव करके फिर अपने २ ठिकानोंको चले जाते थे। महाराज रतनसिंहजीने इन लोगोंको दबाने या शान्त करनेका अपने वशभर पूर्ण प्रयत्न किया। वैतनिक सेनाकी संख्या बढ़ाकर उन्होंने दो वर्षतक बागी ठाकुरों पर हमले किये किन्तु परिणाम कुछ न हुआ। तब महाराज संवत् १८९१ यानी सन् १८३४ में अँग्रेज सरकारके प्रान्तीय राज्य प्रतिनिधि कर्नल एलूर

(१) मुन्शी सोहनलालजीने "नरेन्द्र सवाई" लिखा है।

साहबसे रतनगढ़में खुद मिले और इस अशान्तिको शान्तिमें परिवर्तन किये जानेकी उनसे प्रार्थना की। नीतिवान् एल्लूर साहबने अपनी नीतिचातुरीसे विद्रोहियोंको समझा बुझाकर सब ओर शान्ति स्थापित कर दी। विशेष शांति भङ्गके कारण इस राज्यमें बीदावत और जयपुरके शेखावत लोग थे इसलिये यह भी निश्चित हुआ कि सरकारकी मातहतीमें एक ऐसी सेना रक्खी जाय जिसमें शेखावत और बीदावतोंकी ही भरती हो। यह सेना झुँझुनूमें रहकर चारोंओर शांति रक्षाकी जिम्मेवारी अपने ऊपर रक्खे और २२०००) सालाना बीकानेर राज्यसे भी इस फौजके खर्चका दिया जाय। बीकानेर और जैसलमेरका सरहदी झगड़ा अभी शांत नहीं हुआ था इस लिये सरकारकी तरफसे मिस्टर ट्रिपोलियन साहबने दोनों राज्योंकी सीमाकी हदबंदी करके सीमावर्ती झगड़ेको शांत कर दिया और महाराज रतनसिंहजीकी रावल जैसलमेरके साथ मुलाकात करवाकर दोनोंमें परस्पर मित्रभाव स्थापित करा दिया।

महामान्या कम्पनी सरकारकी सहानुभूति कृपा उदारता एवं सहायतासे जब महाराज रतनसिंहजी राज्यमें शांति स्थापित कर चुके तब उन्होंने अपने पितृ पुरुषोंके ऋणसे उऋण होनेके लिये छः हजार परिवारके साथ गयाजीकी यात्रा की। पिंडदानादि श्राद्ध कर्मोंसे निश्चिंत होनेके पश्चात् महाराजने सब राजपूतोंसे इस बातकी सौगन्ध ली कि वह धनी गरीब कोई हों आजसे प्रसूता कन्याका वध नहीं करेंगे। गयाजीसे लौटते समय

---

(१) बडे ठिकानेवाले राजपूत लोग इस कारण प्रसूता कन्याओंको मार डालते थे कि जिससे उन्हे किसीके पैर न पूजने पडें और न किसीको माथा नवाना पडे और गरीब इस गरजसे कन्याको मारडालते थे कि उसके विवाहमें भात देनेको धन कहाँ से आवेगा ? किन्तु सरकारी राज्य कालमें अब यह जघन्य रीति बिलकुल बंद है। स्मरण रहे कि यह रीति केवल राजपूतानेमें ही न थी किन्तु राजपूतोंमें सर्वत्र इस कुरीतिका प्रचार था। सरकारसे इस जुर्मके लिये खास कानून पास होनेके पश्चात् अब यह कुरीति अन्तर्धान होगई है।--

महाराजने रीआँमें आकर वहाँ युवराज कुमार सरदारसिंहजीका बिवाह किया। संवत् १८९६ में महाराजने पुष्करजीकी यात्रा की और फिर वे बड़े धूमधामके साथ बरात सजकर सरदारसिंहजीका दूसरा बिवाह करनेके लिये उदयपुरको पधारे। दूसरे वर्ष सन् १८४० ई० में उदयपुरके महाराणा सरदारसिंहजीका बिवाह रतनसिंहजीकी बेटीसे हुआ।

इस समय राजपूतानेके समस्त राज्योंमें परस्परके वैर विरोधकी विस्मृति होकर एकताका प्रसार आरम्भ होगया था। अशांतिके स्थानमें शांति देवीका आविर्भाव होरहा था। किसीको बाहरी एवं सीमावर्ती झगड़ोंका लेशमात्र भी खटका नहीं था। अतएव राजा लोगोंका जो समय एक दूसरेसे लड़ने भिड़ने या रक्त प्रवाहमें व्यतीत होता था वह अब शासनसुधार और प्रजा पालनमें व्यय होने लगा था। महाराज रतनसिंहजीने सन् १८४२में दिल्ली जाकर कम्पनी गवर्नमेण्टके गवर्नर जनरलसे मुलाकात की और काबुलके लड़ाईके लिये २०० ऊँट सहायता स्वरूप नजर किये जिसके लिये गवर्नर-जनरल साहबने सरकारकी तरफसे अनेक धन्यवाद दिये। दिल्लीसे आकर महाराजने अपने राजशासनमें गवर्नमेण्टकी सलाहसे निम्न-लिखित सुधार किये:—

(१) भावलपुर और हिसारके बीचवाले रास्तेमें बीकानेर राज्यकी सीमामें व्यापारकी आमदरफ्तनी पर जो जकात परम्परासे लगती थी उसमें कमी की गई। फी ऊंटके बोझ पर ॥) कम किया गया, गाड़ी बैल खच्चर आदिके बोझ पर फी सैकड़ा एक रुपयेके हिसाबसे जकात रक्खी गयी, और बे बोझके खाली जानवरों परसे बिलकुल माफी कर दी गई।

(२) संवत् १९०१ मुताबिक सन् १८४४ में राज्यभरमें बालहत्या (कन्यावध) की सख्त मनाही की गई और उसीके साथ

—जब किसीके लडकी जन्मती तो लडकीका पिता या तो उसे उसी समय चारपाईके पायेके नीचे डालकर दबा देता था या तमाखू और गुडकी गोली खिलाकर प्रसूता कन्याके प्राण लेता था। अनुमान है कि विशेषतः इस रीतिने मुसलमानी राज्यके समयसे प्रचार पाया होगा।

शादी या गमीके फुजूल इखराजातमें कमी करने यानी बहस्ब हैसियत आमदनीके खर्च करनेकी ताकीद की गई ।

(३) राज्यके चारणलोगोंको इस बातकी ताकीद की गई कि वे इधर उधर जाकर लोगोंको ब्याह बरातोंमें तकलीफ न दिया करें ।

(४) जागीरदार या पट्टेदारों पर फौजी हाजिरीके बदले रेख (नगद खिराज) लगाई गई ।

महाराज रतनसिंहजीने कंपनी सरकारको सिखोंकी पहिली लड़ाईमें बहुत कुछ सहायता दी थी जिसके लिये सरकारकी ओरसे इनको सिख सेनाकी विजित दो तोपें दी गई थीं, फिर दूसरी लड़ाई में भी महाराजने यथेष्ठ सहायता दी । इसी बीचमें स० १८४४ से लेकर संवत् १८४९ तक जैसलमेर जयपुर जोधपुर आदि सीमावर्ती राज्योंसे कईबार सीमा संबंधी झगड़े उठे पर उन्हें सरकारने एक एक करके निवटा दिया और नाप तौलसे पत्थर गड़वा कर मुनारे कायम करवा दिये जिससे फिर कोई झगड़ा बाकी न रहा । सरकारकी यह न्यायपरायणता देखकर महाराजने एक बार फिरसे अपने उन गांवोंका दावा सरकारमें पेश किया जो असलमें भादरा और टीबीकी सरहदके थे पर सरकारने दबाकर सिरसाके जिलेमें मिला लिये थे।महाराजके आग्रहसे इस बात पर वादविवाद तो हुआ, पर उनका कार्य्य सिद्ध न हुआ ।

महाराज रतनसिंहजीके शासन कालके अंतिम समयमें एक ऐसी चिरस्मरणीय घटना होगई है जिसके लिये उनका नाम और यश सारे मारवाड़में प्रसिद्ध है, अपिच हम इस घटनाको कटक परकी महाराज करणसिंहजीवाली घटनासे कदापि न्यून महत्त्वप्रद नहीं कह सकते । वह यह है कि इस हलचलके समय शेखावाटीके डूँगजी और जवाहिरजी नामक दो सेखावत राजपूत बगावत किया करते थे, वे मय अपने साथियोंके कंपनी सरकारसे पकड़े जाकर आगरेके किले में कैद किये गये, किन्तु वे दोनों किसी प्रकार वहांसे निकल भागे । उनमेंसे डूँगजी तो जोधपुर राज्यकी शरणमें गया और जवाहिरजी

महाराज रतनसिंहजीके पास गया । जब सरकारको यह समाचार ज्ञात हुआ तब सदरलेण्ड साहब कुछ अंग्रेजी और कुछ जयपुर राज्यकी सेना सहित जोधपुरको गये। जोधपुरके महाराज मानसिंहने तो डूंगजीको उक्त साहब बहादुरके सुपुर्द करदिया, पर जब उक्त साहब बहादुर बीकानेरमें आये और साधारण शिष्टाचारके बाद उन्होंने जवाहिरसिंहको मांगा तो महाराज रतनसिंहजीने उत्तर दिया कि यदि आप उसे अपना अपराधी समझ कर कैद रखना चाहते हैं और मुझे अपना मित्र समझते हैं तो वह मेरे यहाँ कैद है। यदि आप मेरे यहांसे जबरदस्ती उसे ले जाना चाहते हैं तो उसके बदले "सरदार-सिंह" (युवराज कुमार) हाजिर हैं इन्हें ले जाइये । किन्तु मैं शरणागतको त्यागकर अपने कुलको कलंकित नहीं किया चाहता ।

(१) मारवाड़भरमें भोरो लोग 'डूँगजी जवाहिरजी' के गीतको उसी आनवानसे गाते हैं जैसे बाबूजी गोगाजी और मल्लीनाथजीके गीत गाये जाते हैं। गीतके अनुसार संक्षिप्त कथा यों है कि डूँहजी और जवाहिरजी दोनों सहोदर भाई थे वे बड़ेही ताकतवर और बहादुर सेखावत सरदार थे। राज्य जयपुरके विरुद्ध होकर जबरदस्त मालदारोंको लूटते और गरीबोंकी परवरिश किया करते थे। उन्होंने जब नसीराबादके सरकारी खजानेको लूटा तो वे गिरफ्तार करके आगरेके किलेमें कैद किये गये। जब यह समाचार मारवाड़में पहुँचा तो उनके सम्बंधी कई ठाकुरलोग दल बांधकर आगरेको गये और ठीक ताजियोंकी कतल की रातको उन्होंने किले पर हमला करके डूँगजी जवाहिरजीको मय साथियोंके छुड़ा लिया। इन ठाकुरोंमें बीकानेर राज्यके हरीसिंह बीदावत और हटीसिंह कांधलोत भी थे। जब डूंगजी' जोधपुरको गया तो जवाहिरजीको महाराज रतनसिंहने अपने पास बांह देकर बुला लिया और कहा कि अब तुम यह लूट मार छोड दो तो हम तुमको बचा लेंगे। उस सच्चे राजपूतने उसी दिनसे वचनबद्ध होकर फिर किसी पर हाथ नहीं उठाया। सं० १८५८ तक जवाहिरजी बीकानेरमें ही रहा। फिर महाराज सरदारसिंहजीने उसे अपनी तरफसे एक गाँव देकर बड़े मानके साथ शेखावाटीमें भेज दिया और महाराज जयपुरने भी उसका कुसूर माफकर उसे उसकी पैतृक जागीर दी। इस गीतमें शरणागत धर्मको न पालन करनेके लिये जोधपुरको हजो और बीकानेरकी तारीफ है। यहां यह भी स्मरण रहे कि उक्त हटीसिंह बीदावत और हटीसिंह कांधलोतको महाराजने आगरे पर हमला करनेके कसूरमें सख्त कैदकी सजा दी थी। यह दोनों भी बड़े बलवान् और वीर पुरुष थे।

संवत् १९०८ में महाराज रतनसिंहजीका शरीर कुछ अस्वस्थ हुआ और करीब दस दिनकी बीमारीके पश्चात् वे श्रावण सुदी ११ को स्वर्गवासी हुए ।

महाराज सरदारसिंहजी ।

महाराज सरदारसिंहजीका जन्म संवत् १८७५ मुताबिक सन् १८१९ में हुआ था । वह सन् १८५२ में अपने पिताके उत्तराधिकारी होकर बीकानेरकी गद्दी पर बैठे । अव्वल तो ३३ सालकी अवस्था होनेके कारण महाराज स्वयं पूर्ण बालिग और राज्यकार्य्यमें दक्ष थे, दूसरे उस समय कंपनी सरकार राज्योंके भीतरी मामलोंमें या गद्दी नशीनीकी बाबत कुछ हस्तक्षेप भी नहीं करती थी ।

महाराज सरदारसिंहजीके गद्दी पर बैठनेके समय राज्य पर साढ़े आठ लाखका कर्ज था; इसका कारण यह था कि इनके पिता महाराज रतनसिंहजीके राज्यकालमें समयानुकूल वर्षा न होनेसे एक तरफ तो आमदनीमें कमी पड़ी और दूसरी तरफ विद्रोही ठाकुरोंको शान्तकर शासनके सुधारमें व्यय ज्यादा हुआ । अतः महाराज सरदारसिंहजीने गद्दी पर बैठते ही समयानुसार शासनसुधार किया और ध्यान देकर सबसे पहले राज्यको ऋणमुक्त कर कोषको द्रव्यसे पूर्ण करनेकी इच्छा की, किन्तु खेद है कि कोई उत्तम कर्मचारी न होनेसे वे अपने उद्देशमें सफल मनोरथ न हो सके । उन्होंने अपने राज्य कालमें वीस वर्षके भीतर कोई १८ दीवानोंका अदल बदल किया, परंतु प्रत्येक दो दो चार चार महीनेसे अधिक नहीं ठहरे । कारण इसका यह था, कि जो पुरुष राज्यके प्रधान पद पर नियत होकर महाराजके उद्देशको समझता वह उस उद्देशके पालनसे विमुख होकर आप अपनी जेब गरम करनेमें लगजाता था, वही मसल थी कि " लड़का सीखे नाईका और मूँड़ कटे गँवारका "

रामलाल द्वारकानी नामक सिर्फ एक पुरुष था जिसने सरदारसिंहजीके समयमें आठ वर्षतक राज्यका काम किया, इसके समयमें राजा प्रजा दोनों संतुष्ट और सुखी थे । इसीके समयमें सन् १८५७

का बलवा हुआ। कानपूर और देहलीकी फौजके बिगड़ते पर हांसी और हिसारकी फौज भी अंग्रजोंसे बिगड़ खड़ी हुई। उस फौजसे किले छीननेमें महाराज सरदारसिंहजीने अंग्रेज सरकारको पूर्ण सहायता दी। इसके सिवाय आस पासके जो अंग्रेज लोग बीकानेनेरकी सीमामें आगये उन्हें महाराजने बड़ी खातिरसे रक्खा और शांति स्थापित होजाने पर उन्हें सरकारके सुपुर्द करादिया। इस उत्कृष्ट सेवाके पुरस्कारमें सरकारने महाराज सरदारसिंहजीको टीबीके मुताल्लिकके ४१ गांव दिये और महाराजको बड़ा धन्यवाद दिया; किन्तु खेद है कि रामलाल जैसा कार्य्यकुशल और प्रजाप्रिय पुरुष भी अधिक दिन न ठहर सका। धनलोलुप पुरुषोंने उसकी झूठी शिकायतें कर करके महाराजका मन उसकी ओरसे खट्टा करादिया, तब वह आप भी इज्जत और प्राणोंके भयसे राज्यसे भाग गया। रामलालके बाद सन् १८६४ से ६८ तक चार वर्षके भीतर कोई ग्यारह दीवानोंकी बदली हुई। इनमेंसे कोई २ तो आठ ही दिनके अन्दर निकाल बाहर किये गये।

उक्त सिपाही विद्रोहके शान्त होने पर जब कंपनी गवर्नमेण्टके बदले बृटिश गवर्नमेंट हुई तब महामान्या महाराणी विक्टोरियाके प्रतिनिधि शासक (Viceroy) लार्ड कैनिंगके हस्ताक्षर युक्त दो सनदपत्र (खरीते) सरकारकी ओरसे महाराज सरदारसिंहजीको मिले उनमेंसे एक तो वही था जिसमें इस देशके सब देशी राज्योंको गोद लेनेके अधिकार प्रदान होनेका उल्लेख है और दूसरेमें जो उक्त ४१ गांव महाराजको दिये गये थे उनका उल्लेख है। सरकारकी ओरसे किसी देशी राज्यकी भूमि या गांव पुरस्कारमें दिया जाना इस देशके इतिहासमें एक प्रधान घटना है। अतः हम यहां पर इस दूसरे सनद पत्रका सारांश उद्धृत करना उचित समझते हैं—

बीकानेरके महाराज सरदारसिंहजीको ग्राम दिये जानेका सनदपत्र।

हर्षका विषय है कि राजपूतानेके गवर्नर जनरलकी रिपोर्ट द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि बीकानेरके महाराज सरदारसिंहजीने सिपाही

बिद्रोहके समय अंग्रेज गवर्नमेण्टकी समुचित सेवा करके सरकारके प्रति अपनी गाढ़ राजभक्ति और अनुरक्तिको प्रमाणित किया है। वे सेना सहित स्वयं कार्य्य क्षेत्रमें उपस्थित रहे हैं। उन्होंने धन खर्च करके अगणित अंग्रेजोंके मान और प्राणोंकी रक्षा की है और सरकारके साथ इस आपात्तिके समय और भी अनेक उपकार किये हैं। महाराजका यह उदार व्यवहार बृटिश गवर्नमेण्टके पक्षमें अत्यंत संतोषजनक माना गया है। इसलिये बृटिश गवर्नमेन्टकी ओरसे महाराजको धन्यवाद-सूचक यह सनदपत्र मय उन इकतालीस गांवोंकी सूचीके दिया जाता है जो कि सिरसाके जिलेसे उनको सदाके लिये सरकारने इस बड़ी सेवाके पुरस्कार स्वरूप दिये हैं। यह १४२९२ रुपयेकी आयवाले गांव उनके राज्यके अन्तर्गत किये गये और उनके राज्यके साथ जो नियम प्रचलित थे इनके संबंधमें भी वही नियम प्रचलित किये गये। सन् १८६१ के पहले महीनेकी पहिली तारीखसे यह सनद मानी जायगी। ११ अप्रैल सन् १९६१ ई०।

उक्त रामलाल द्वारकानीके कामसे अलग होने पर जब फिरसे स्वार्थपर लोगोंका प्रभाव राज्यमें बढ़ने लगा तब चारोंओर प्रजामें हाहाकार मच गया, इस सिलसिलेमें उन गाँवों पर भी सख्ती होने-लगी जो हालमें सरकारकी तर्फसे राज्यको दियें गये थे। भला वे लोग जो कुछ दिन बृटिश गवर्नमेण्टकी नियमबद्ध शासनप्रणालीका सुख भोग चुके थे, राज्यका अंधाधुंध अत्याचार सहनेमें क्यों कर समर्थ हो सकते थे? अस्तु उन्होंने सरकारी गवर्नर जनरलके एजन्टके पास अपना दु:ख रोया। उसी समय शेखावत और बीदावतोंने लूट-मारका सिलसिला बड़े जोरसे जारी कर दिया। प्राय: वे लोग सरकारी अमलदारीमें ही लूटमार करके घर आ बैठते थे इसलिये गवर्नमेण्टके लिये बीकानेर राज्यके सुप्रबंधकी ओर ध्यान देना आवश्यक हुआ और गवर्नरजनरलके पोलिटिकल एजेण्ट मिस्टर ब्राडफोर्ड साहब खुद सुजानगढ़में आकर कुछ दिन रहे। इन्होंने वहां डकैतीको भी येन केन प्रकारेण शान्त किया और बीकानेरकी प्रजाकी पुकार पर भी

विशेष रूपसे ध्यान देकर कुप्रबंधकी असालयतको जांचा। साहब बहादुरने समझ लिया कि राज्यमें एक ईमानदार कार्य्यदक्ष उत्तम प्रबंधकर्त्ताकी आवश्यकता है, इसलिये उन्होंने अपने मीर मुंशी पंडित मनफूल, C. I. E. को महाराज सरदारसिंहजीके हवाले किया। इसी बीचमें गवर्नमेण्टसे बीकानेरके संबंधमें एक पृथक् पोलिटिकल एजण्टकी मुकर्ररीकी मंजूरी आगई और तदनुसार मिस्टर पालट साहब बीकानेरके प्रथम पोलिटिकल एजण्ट नियत हुए।

ज्योंही राज्यके सुप्रबंध एवं संरक्षणकी ओर गवर्नमेण्टने ध्यान दिया त्योंही राज्यके पट्टेदार ठाकुर लोग भी कप्तान पालट साहबकी सेवामें जा उपस्थित हुए। इनमें महाजनके ठाकुर मुखिया थे। ठाकुरोंने अपनी तरफसे तीन शिकायते पेश कीं—

(१) दरबारने चंद गांव उनके पट्टेके जब्त करलिये हैं।

(२) नजरानेके नामसे वक्तन फवक्तन बेजा रुपया लिया जाता है।

(३) मालगुजारी उनके पट्टेके देहातासें भिन्न २ सीगोंमें वसूल की जाती है।

निदान इस मामलेका फैसला इस तरहसे हुआ कि महाराज सरदार-सिंहजीकी गद्दी नशीनीके समय जिसके पट्टेमें जितने गांव थे बदस्तूर बहाल रहे। दूसरे राज्यकी हाजिरी जाब्तामें फी घोड़ेके हिसाबसे २००) सालाना नगद रेखं हर पट्टेदारसे मुकर्रर हुई। इससे वह रकम अलहदा है जो गद्दीनशीनीके समय नजरके तौरपर हर एक पट्टेदारसे रियासतमें जमा होती है। इससे जागीरदारोंकी शिकायत तो एक तरहसे रफा होगई पर खालसेकी प्रजाको कुछ भी आराम न मिला। क्योंकि उक्त पंडित मनफूल अपनी तजवीजसे या सरकारकी रायसे बहुत कुछ नियमबद्ध सुप्रबंध करके

(१) यह रेख केवल दस वर्षके लिये नियत हुई थी, आगे महाराजको इसके घटाने बढानेका पूर्ण अधिकार था। किन्तु साहब बहादुरकी राय थी, कि अब यह रेख न बढे तो अच्छा।

अपनी कारवाई दिखलाना चाहते थे परन्तु महाराजके पार्श्ववर्ती उन धनलोलुप मनुष्योंके मारे उनकी एक नहीं चलने पाती थी जो महाराजके नामसे एक एकके चार चार वसूल करते और प्रजाको लूटकर अपना घर भरते थे । अन्तमें ऐसे लोगोंने उक्त पंडितकी तरफसे महाराजको नाराज भी करदिया । पंडितजीने फिर गवर्नमेण्टको सब समाचार लिख भेजा । इस समय कप्तान पालट साहबकी जगह पर कप्तान ब्रिटन साहब काम करते थे । उन्होंने स्वयं बीकानेरमें आकर महाराजकी संमत्यनुसार राज्यके सुप्रबंधकी व्यवस्थाके लिये एक कौन्सिल नियत की जिसमें उक्त पं॰ डित सीनियर मेम्बरके पद पर थे और श्री दरबार उसके प्रेसीडेण्ट थे । उसी समय राज्यमें दीवानी फौजदारी और तहसीलातके महकमों की भी सृष्टि हुई ।

किन्तु उस समय इन सब सुप्रबंधोंका होना न होना बराबर था । महाराज सरदारसिंहजी एक उदारहृदय और दानी सरदार थे उन्हें सवेरेसे संध्या पर्य्यंत अपने हुक्मकी तामीलीसे प्रयोजन था, आय व्ययके हिसाबसे कोई संबंध न था । इस दशामें कौन्सिल और कार्यकर्त्ता क्या करते ? पासवानोंकी तूती बोलती थी । नतीजा यह हुआ कि कुछ दिनोंके बाद कौन्सिलका एक मेम्बर मानमल राखैचा कैद करदिया गया और पंडित मनफूल बरखास्त कर दिये गये, सिर्फ महकमा जात बजाबते कायम रहे ।

महाराज सरदारसिंहजी बड़ेही हृष्ट पुष्ट बलवान और उद्दंड स्वभावके सरदार थे । वे वल्लभाचार्य्य संप्रदायके उपासक थे । उन्होंने श्री रतनविहारीजीका मंदिर अपने पिताके नाम पर बनवाया और जागीर देकर इसे जयपुरके वल्लभाचार्य गोस्वामियोंके सुपुर्द किया था । यह मंदिर अब भी है । इन महाराजका १६ मई सन् १८७२ ई० को स्वर्गवास हुआ ।

महाराज डूँगरसिंहजी.

महाराज सरदारसिंहजीके एक खवासवाल पुत्रके सिवाय कोई पाटवी कुमार न था, इसलिये उन्होंने अपनी मृत्युसे कई वर्ष पहिले

सूरतसिंहजीके लघु भ्राता छत्रसिंहजीकी संतानमेंसे लालसिंहजीके पुत्र डूँगरसिंहजीको अपने पास रखलिया था। वे अपने अन्तिम समयमें डूंगरसिंहजीको ही अपना उत्तराधिकारी निश्चित कर गये और अपने हाथोंसे उनके नाम एक वसीयतनामा भी लिख गये थे। उसी वसीयतनामेके अनुसार महाराजकी पटरानी भटियाणीजीने डूँगरसिंहजीको गोद लेकर अंग्रेज गवर्नमेण्टमें भी इनके नामसे मंजूरी मिलनेकी दरख्वास्त पेश की। नियमानुसार साहब पोलिटिकल एजेन्ट बहादुरने पट्टेदार ठाकुरों, राजकर्मचारियों और उक्त महारानी साहिबाकी दस्तखती मंजूरी लेकर गवर्नमेन्टमें रिपोर्ट की। वहांसे मंजूरी आजाने पर ता० १ जुलाई सन् १८७२ ई० को महाराज डूंगरसिंहजीका राज्याभिषेक हुआ।

राज्याभिषेकके समय महाराज डूँगरसिंहजीकी अवस्था सत्रह वर्षकी थी, इसलिये इनको राज्य शासनके पूर्ण अधिकार प्राप्त न होसके और उक्त अस्तप्राय राजकौन्सिलका रेजीडेन्सी कौन्सिलके स्वरूपमें पुनरुद्धार या कायाकल्प होना आवश्यक हुआ। यहांके पोलिटिकल एजेण्ट कप्तान ब्रिटेन साहब उक्त कौन्सिलके प्रेसीडेन्ट होकर स्वयं राज्यकार्य्यका निरीक्षण करते थे। इस वर्षके अन्तमें कप्तान ब्रेडफोर्ड साहब बहादुर बीकानेरमें तशरीफ लाये और उन्होंने महाराज डूँगरसिंहजीकी योग्यताके विषयमें गवर्नमेन्टमें रिपोर्ट की इस पर वहांसे महाराजको राज्यशासनके पूर्ण अधिकार मिलनेका हुक्म आगया। तदनुसार जनवरी सन् १८७३ में आठरह वर्षकी अवस्था होनेपर राजपूतानेके एजेन्ट गवर्नर जनरल कर्नल ब्रुक साहबने महाराज डूँगरसिंहजीको मामूली खिलतके साथ राज्यका पूर्ण शासनाधिकार दिया।

राज्य शासनके अधिकार प्राप्त होने पर महाराज डूँगरसिंहजीने अपने पिता लालसिंहजीको महाराजकी पदवीसे विभूषित करके राज्य कौन्सिलका सभापति नियत किया और उन्हींकी सलाह एवं आज्ञानुसार आप राज्यकार्य करने लगे। इसी वर्ष महाराज डूँगरसिंहजीने हरिद्वार तीर्थकी यात्रा की। वहांसे लौटते समय आप आगरेके

दरबारमें सम्मिलित होकर प्रिन्स आव वेल्स बहादुर (वर्त्तमान सम्राट) से मिले । प्रिन्स आव वेल्स बहादुरने महाराजको गवर्नमेन्टके शुभचिंतक राजाका उत्तराधिकारी जानकर इनका विशेष आदर संमान किया । आगरेसे आकर महाराज डूँगरसिंहजीने किलेकी मरम्मत करवाई, जो स्थान पुराने होनेके कारण बहुत जर्जर होरहे थे उनका जीर्णोद्धार कराकर उन्हें पुष्ट करवाया और बहुतसे नवीन मकान भी बनवाये । राजमहलोंका वह ऊपरी भाग जो कोटसे ऊंचा है प्रायः सब महाराज डूंगरसिंहजीके समयका बना हुआ है । मुंशी सोहनलालजीने लिखा है कि इस किलेकी मरम्मत या नये मकानोंकी तामीरके वास्ते सब प्रजा पर बाछ यानी चंदा लगाया गयाथा। इन महाराजको मकानोंका बड़ा शौक था और इनके हृदयमें धार्मिक ओज भी अधिक था । इन्होंने काशी हरिद्वार कौलायत वगैरह कई तीर्थ स्थानों पर अच्छे अच्छे मन्दिर बनवाये और पुण्यार्थ बंधान लगवाये जो अबतक चले आते हैं ।

स्मरण रहे कि महाराज रतनसिंहजी राज्य पर साढ़े आठ लाखका कर्ज छोड़कर मरे थे । महाराज सरदारसिंहजीके समयमें उसका कम होना तो दूर रहा वरन् और भी कर्ज बढ़ गया । अब महाराज डूंगरसिंहजीको एक तो इस कर्जके चुकानेकी फिकर थी, दूसरे राज्यके मामूली खर्च भी चलाना जरूरी था, इस लिये प्रजाके ऊपर जमीजोत या साधारण करोंमें कुछ बढ़ती की गई और उसकी वसूलीमें भी ताकीद और सख्तीकी तरफ ध्यान दिया गया इससे सब साधारण प्रजाको कष्ट तो अवश्य हुआ किन्तु कोई दुर्घटना उपस्थित न हुई । यह करने पर भी महाराज अपेक्षित आयकी चरम सीमाको न पहुँच सके । अतएव संवत् १९३९ में जब पट्टेदारोंकी रेखकी दस वर्षकी अवधि समाप्त हुई तो महाराज डूँगरसिंहजीने पट्टेदार ठाकुरों पर रेखकी रकम बढ़ानेका प्रश्न उठाया । यद्यपि कौन्सिलके कई मेम्बरोंने महाराजके इस प्रस्तावका विरोध किया किन्तु इसका पुष्टिकर्ता दल प्रबल था, इसलिये कौन्सिलको भी यह कार्य्य करना पड़ा । तदनुसार कुँवर रामसिंह पट्टेदार महाजन ठाकुर मेघासिंह पट्टेदार जसाना । रावत

रँजीतसिंह पट्टेदार रावतसर और ठाकुर बहादुरसिंह पट्टेदार बीदासर, ये पांच ठाकुर, ईजादी रेख, कमेटीके मेम्बर निश्चित हुए और रेखकी ईजादीका प्रश्न इसी कमेटीके ऊपर छोड़दिया गया।

इस कमेटीने राज्यके छोटे बड़े सब पट्टेदार ठाकुरोंको बुलाकर राज्यकी आज्ञा सुनाई और उन्हें ईजाद रेखकी फर्दपर मंजूरीके दस्तखत करनेको कहा। बड़े बड़े पट्टेदारोंने तो कमेटीकी आज्ञा सरलतासे स्वीकार कर ली पर छोटे पट्टेदारोंने आपत्ति की और कहा कि हम पूर्व्व नियमित रकमसे कुछ भी अधिक नहीं दे सकते। किन्तु अन्तमें कुछ तो समझाने बुझानेसे और कुछ राज्यके दबावमें आकर सबने कमेटीकी आज्ञा शिरोधार्य करके फर्द पर दस्तखत करादिये और सब लोग अपने २ ठिकानोंको चले गये। दूसरे साल संवत् १९४० में सालाना रकमकी वसूलीके वक्त सबने पूर्व्व नियमित रकमके सिवाय एक पैसा भी अधिक न दिया। इस पर जब राज्यकी ओरसे बहुत सख्ती हुई तब उन लोगोंने सुजानगढ़में स्थित पोलिटिकल एजण्टके पास पुकार मचाई। पोलिटिकल एजेण्ट बहादुर खुद बीकानेरमें आये तो राज्यकी ओरसे वह सरदारोंके दस्तखतवाली ईजाद रेखकी फर्द उनके सामने पेश करदी गई। उन्होंने जब पट्टेदारोंसे पूछा कि जो बात तुम खुद मंजूर करचुके उससे अब क्यों फिरते हो? तो पट्टेदारोंने उत्तर दिया कि ये दस्तखत हमसे जबरन करवाये गये हैं। साहब बहादुरने ठाकुरोंके उज्रको फजूल समझकर उस पर कुछ ध्यान न दिया और वह अपने ठिकानेको चले गये।

साहब बहादुरके पीठ फेरते ही सरदारोंने एकमत होकर राज्यके विरुद्ध सलाह की आश्चर्य तो यह है कि जो पट्टेदार ठाकुर ईजाद-रेख कमेटीके मेम्बर थे वह भी विद्रोहियोंके पक्षमें सहमत होगये। इन लोगोंने बीकानेरसे चलकर देशनोकमें डेरे डाले। महाराज डूँगरसिंहजीने इन लोगोंको समझाकर शान्त करनेका जितना ही प्रयत्न किया उतना ही वे लोग उत्तेजित होते गये और राज्यके विरुद्ध अर्जियाँ भेज भेज कर अंग्रेज सरकारके यहाँ फरियाद करते

रहे । अन्तमें कप्तान टालवट साहब सरकारकी ओरसे इस मामलेका विचार करनेके लिये बीकानेरमें पधारे । उन्होंने सरदारोंको उनके पहले हस्ताक्षर दिखाकर जब समझाना शुरू किया और दबाया तो ठाकुरलोग साहबसे भी बिगड़ पड़े । साहबकी इच्छा थी कि वे लोग इसीदम गिरफ्तार करलिये जावें परन्तु राज्यमें उस समय ऐसी नियमबद्ध कवायद दां फौज न थी कि इशारा होते ही मौके पर हाजिर हो सके अतः ठाकुरलोग तो अपने २ डेरोंको चले गये और साहब बहादुर और महाराज साहबमें उपस्थित घटना पर वादविवाद होता रहा । शाम होते २ ठाकुर लोग देशनोकको चले गये और वहाँसे अपने २ ठिकानों पर जाकर राज्यसे लड़ाई करनेका सामान करने लगे ।

बुद्धिके योगसे थोड़ा ही बल बहुत फल देता है परन्तु बुद्धिहीन बल बलवानसे भी बलवानके स्वयं नाशका कारण होता है । जिस दुर्बुद्धिके कारण क्षत्रियोंका सर्वनाश होगया उसने अब भी इस जातिका पीछा न छोड़ा था । ठाकुरोंको इस बातका लेशमात्र भी ध्यान न रहा कि पहाड़से सिर मारनेसे पहाड़ नहीं शिर ही फूटेगा न उन्होंने यही विचारा कि कम जोरका गुस्सा मार खानेकी निशानी है । वे पूर्ववत् ओजमें आकर राज्यसे विद्रोह करके अपने स्वत्वोंको बचानेके लिये उद्यत होगये । राज्यके कुल पट्टेदार ठाकुर दो हिस्सोंमें विभाजित हुए, एक तरफ तो पांच हजारकी जमैयतसे महाजनके किलेकी मोरचेबंदी की गई और दूसरी तरफ बीदासरमें जमाव होनेलगा । कुँवर रामसिंह महाजन कई लोगोंको लेकर शिमले बड़े लाट साहबके पास भी गये पर वहां कुछ भी सुनाई न हुई । इधर राज्यकी तरफसे पांचसौ सवार एक हजार पैदल और दो तोपें ठाकुर हुक्मसिंह और मेहता छत्तरसिंहकी मातहतीमें महाजनके किले पर भेजी गयीं । इन लोगोंने मोरचेबंदी की थी कि उक्त रामसिंह महाजनके सरदारकी चिट्ठी आनेसे उनके भाइयोंने किला खाली करदिया और उस किले पर राज्यका दखल होगया । यहाँसे जो लोग निकले वे फिर बीदासरके

किलेमें इकट्ठे होगये । बिदासरके किलेमें ठाकुरोंका जमाव अधिक था; इस कारण राज्यको अंग्रेजीसेनाकी सहायता आवश्यक हुई । अतः पोलिटिकल एजेण्ट बहादुरके लिखनेसे जनरल जिलप्सीकी अधीनतामें १८०० सेना मय सवार और तोपखानेके बीदासर पर गई और राज्यकी ओरसे कुमेदान दीनदयालजी और जियाउद्दीनखां दो कम्पनियोंके साथ रावतसर पर भेजे गये; राज्यकी और अंग्रेजी दोनों फौजें बराबर दो महीनेतक बीदासरके किलेको घेरे रहीं, सामऔर भेद जब दोनोंमें एक भी नीति ठाकुरोंको शान्त करनेमें फलीभूत न हो सकी तब दंड देना प्रयोजनीय समझकर इधरसे श्रीदरबार कुछ राज्यकी फौज लेकर और सुजानगढ़से साहब बहादुर एजेण्ट गवर्नर जनरल कुछ गोरी सेना लेकर बीदासरको रवाना हुए । जब ठाकुर लोगोंने देखा कि अब सर्वनाश होनेमें विलंब नहीं है तो वे रास्तेमें एक बार फिरसे श्रीदरबारकी सेवामें हाजिर होकर प्रार्थी हुए पर उस पर कुछ ध्यान न दिया गया । जब ठाकुरोंने एजेण्ट गवर्नर साहबकी अवाईका समाचार सुना तो, ठाकुर बहादुरसिंह पट्टेदार बीदासर कुँवर रामसिंह महाजन, ठाकुर मेघसिंह, ठाकुर रंजीतसिंह और ठाकुर हरिसिंह सुजानगढ़ पहुँचे । वहां साहबके पास ज्योंही इनके आनेकी इत्तला हुई कि फौरन सब लोग गिरफ्तार करलिये गये । ठाकुर बीदासरसे किला खाली करवानेके वास्ते कहा गया तो उन्होंने आज्ञा स्वीकार करके अपने प्रधानोंको किला खाली करनेके लिये लिख भेजा । बीदासरका किला खाली होनेपर सुजनगढ़से सफरमैनाकी पल्टनने जाकर किलेको तोड़ फोड़कर मिट्टीमें मिला दिया । बन्दी ठाकुरोंमेंसे ठाकुर हरिसिंह पट्टेदार सँड़वा और रावत रंजीतसिंहको श्री दरबारने उसी समय बंधनमुक्त कराकर अपने पास रखलिया क्योंकि वे लोग विद्रोही दलमें होने पर भी सदैव राज्यका पक्ष अवलंबन करते थे । शेष सब लोग पांच वर्ष देवलीकी छावनीमें नजरकैद रक्खे जानेके लिये भेज दिये गये और उनके उत्तराधिकारी औरस अथवा दत्तक पुत्रोंके नाम जागीरके पट्टे करादिये गये ।

इस प्रकार उपस्थित विद्रोहकी शान्ति होनेके पश्चात् साहब एजेन्ट गवर्नर जनरल बहादुरने ईजाद रेख रकमके फैसले और शासन सुधारकी ओर ध्यान दिया। साहब बहादुरने श्रीदरबारकी सब इच्छा पूर्ण तो न की पर प्रत्येक पट्टेदार पर उसकी आय व्ययके हिसाबमें सवाई या डेवढ़ी रकम कायम करके सबको राज्यसे सनदी रुक्के दिलवाये कि फिर यह झगड़ा कभी न उठे। दूसरी तरफ पुराने ढर्रेके स्वार्थपर कर्मचारियोंके कारण जो गरीब प्रजा कष्ट पा रही थी उसके आराम और अमनके लिये अर्वाचीन प्रणालीके अनुसार राज्यका प्रबंध करना अत्यावश्यक समझा गया इस हेतु सरकारकी ओरसे उक्त साहब पोलिटिकल एजेन्टबहादुर विशेष रूपसे बीकानेरके निरीक्षक निश्चित हुए और वे बीकानेरमें ही रहने लगे। साहब बहादुरकी संमतिके अनुसार श्रीदरबार साहबने गवर्नमेन्टसे अमीर महम्मद नामक एक सभ्य और कार्य्यदक्ष पुरुषको लेकर अपना दीवान बनाया। उसे प्राचीन शासन प्रणालीको तोड़कर नये सिरेसे सब प्रबंध करनेके पूर्ण अधिकार दिये गये। तदनुसार अन्यान्य स्थानोंसे और भी पठित और सभ्य पुरुष बुला बुला कर योग्यतानुसार उचित वेतन पर हरएक महकमेके अफसर नियत किये गये और उन्हें अपने २ पदके अनुसार न्याय और शासनके अधिकार दिये गये। अबतक फौजदारी या दीवानीके फैसले पूर्व नियमित तहसीलोंकी मार्फत ही होते थे, अबसे राज्यमें पृथक् २ चार न्यायालय (निजामतें) भी स्थापित करदिये गये। इसके सिवाय भिन्न २ विभागोंके स्वरूपमें जो सुव्यवस्था और राज्यकी उन्नति इस समय देखी जाती है उन सबका बीज उसी समय आरोपित हुआ था। शासनमें जो सुधार हुए उनकी संक्षेप व्यवस्था आगे लिखी जाती है—

(१) गिराई यानी ठगी डकैती रोकनेका महकमा स्थापित हुआ। नियमानुसार पुलिस रक्खी गई। हरएक थानेमें पढ़े लिखे थानेदार नियत हुए और उनकी कार्रवाईकी निगरानीके लिये हलके वार गिर्दावर मुकर्रर हुए।

(२) प्रजाके सुख और शान्तिवृद्धिके लिये शिक्षा विभाग—राजधानीका दरबार हाईस्कूल और देहाती मदरसे स्थापित हुए,

जहाँ तहाँ शफाखाने और महकमे तामीरातकी नियमबद्ध स्थापना हुई। सरकारी तौर पर जल बना और जेलमें कायदेसे सजा और सुधारका प्रबंध हुआ।

(३) संवत् १९४१ में जकात यानी चुंगीके महकमेका सुधार हुआ। आमदनी और रफतनीके मालकी बाबत खास २ नियम मुकर्रर हुए, फुजूल कायदे सब तोड़ दिये गये जिनसे सौदागरोंको कष्ट होता था और यारोंकी जेब गरम होती थी।

(४) संवत् १९४२ में खालसेके गांवोंकी पैमाइश होकर चौधरियों पर लगान जमींजोतकी रकमें निश्चित की गईं। जो भिन्न कर पहले लगते थे उनको तोड़कर सर्वकी नगद रकमें किसानों वा चौधरियों पर लगाई गई।

(५) रकमकी वसूलीके लिये जो लोग राज्यसे नियत होते वे प्राय: प्रजासे खुराक रोजाना लिया करते थे वह बंद की गई और उस खुराकका थोडा सा हिस्सा रकम जमाबंदीके साथ किसानों पर बांधदिया गया।

(६) राज्यमें बहुतेरे लोग ऐसे थे जो राज्यकी सेवाके पुरस्कारमें पेटिया और नगदी तनख्वाह दोनों पाते थे। पेटियाका रिवाज कतई बन्दकर दिया गया केवल नगदी या पेटियाके बजाय नगदी मुकर्रर की गई। इसके सिवाय और भी जो खर्च फुजूल समझे गये सब बन्द कर दिये गये और जो खर्च उचित समझे गये उनमें तरक्की की गई।

(७) संवत् १९४३ में चौथीना कुएँके ऊपर पंप लगवाया गया और किले भरमें बिजलीकी रोशनीका प्रबंध हुआ।

(८) जनाना पट्टे तथा अन्य पट्टेदारोंको जो दीवानी फौजदारीके अधिकार प्राप्त थे, वे निकाल लिये गये और हरएक पट्टेके गांव आसपासवाली निजामतोंके मातहत कर दिये गये।

(९) बहुतेरे पट्टेदारोंको अपनी जागीरके गांव राज्यमें निकल जाने या परस्पर सीमा संबंधी झगड़ोंका अब भी उज्र था, इसके लिये एक खास कमेटी मुकर्रर हुई जिसके प्रेसीडेण्ट साहब पोलिटि-

कल एजेन्ट बहादुर थे। कमेटीने कई महीनेके घोर परिश्रमसे इस झगड़ेको भी तय करदिया। १५५ दावोंमेंसे ११९ राज्यके पक्षमें हुए और ३६ ठाकुरोंके पक्षमें।

शासन सुधारकी सृष्टि होनेसे यद्यपि प्रजाके कष्ट कुछ कम हो गये और आय व्ययका व्योरा भी ठीक मिलने लगा तथा राज्य वा महाराज साहबके निजके खर्च बखूबी चलने लगे परंतु पिछला देना अब भी अधिक था। महाराज डूँगरसिंहजीको विशेषत: इसीके चुकानेकी फिकर थी। उन्होंने साहब पुलिटिकल एजेण्ट बहादुरकी शिक्षानुसार इस फैसलेके लिये भी एक विशेष कमेटी नियत करके एक मियादी इश्तहार जारी करदिया कि राज्य पर जिसका जो लेना हो वह उक्त कमेटीमें अपना दावा मय सबूतके पेश करे। निदान २९६३९८७) का दावा पेश हुआ, परंतु यह रकम व्याज पर व्याजकी बढ़ती की थी अत: कमेटीने सपरिश्रम खूब जांच करके जिसका जो मूल धन था वह ठीक रक्खा और उसकी वसूलीके लिये किस्तबंदी कर दी गई।

महाराज डूँगरसिंहजी शिवाजीके बड़े भक्त थे तथा साधु ब्राह्मणोंको बहुत मानते थे। उनकी दानाईके गीत अब तक जहाँ तहाँ गाये जाते हैं। महाराज डूँगरसिंहजी १५ वर्ष बीकानेर राज्यका शासन करके संवत् १९४४ भादों वदी अमावस्याको स्वर्गवासी हुए।

श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीराजराजेश्वर नरेन्द्र शिरोमणिलेफ्टिनेण्ट कर्नल जी. सी. आई. ई, के. सी. एस. आई. एडीकाङ्गटु हिज एम्परर मजेस्टी दी किंग श्री सर गंगासिंहजी बहादुर।

भूतपूर्व महाराज डूँगरसिंहजी निस्सन्तान पंचत्वको प्राप्त हुए थे देहान्त होनेके कुछकाल पहले ही अपने विमातृ भाई गंगासिंहजीको गोद लेकर अपना उत्तराधिकारी निश्चित कर चुके थे। तदनुसार मृत महाराजके अशौचादि कर्मसे निवृत्त होने पर ता० ३१ अगस्त सन् १८८७ ई० वर्तमान महाराज गंगासिंहजीका राज्याभिषेक हुआ। उस समय आपकी अवस्था

केवल ७ वर्षकी थी, इसलिये राज्य शासनका समस्त भार कौन्सिलके सिर पड़ा। यह कौन्सिल जो अबतक राज-कौन्सिल कहलाती थी अबसे रेजेन्सी कौन्सिल कहलाने लगी और बीकानेरके पोलिटिकल एजेण्ट इसके प्रेसीडेण्ट होकर अंग्रेज गवर्नमेण्टकी आज्ञा एवं इच्छानुसार बीकानेरका राज्यप्रबन्ध एवं शासन सुधार करने लगे। उस समयके पोलिटिकल एजेण्ट कप्तान आई. पी. थार्स्टन साहबने कौन्सिलका बोझ हलका करने और प्रबन्धकी सरलताके लिये एक अपील कोर्टकी सृष्टि की और दो सुयोग्य जज उसमें नियत किये कि वे उक्त चार निजामतोंके फैसलोंकी अपील सुना करें। उक्त साहब बहादुरके विलायत चले जाने पर लेफ्टिनेण्ट कर्नल बी. आई. लॉकसाहब बीकानेरके पोलिटिकल एजेण्ट नियत हुए। इन्होंने राज्यकार्य्यका चार्ज लेते ही सबसे पहले मृत महाराज डूंगरसिंहजीके खास[2] खजानेको सम्हाला और उन्हींकी हस्तलिखित वसीयतके अनुसार उसे जहाँ तहाँ (रावलेमें और हजूरियोंमें) बटवा दिया। इसके बाद पुश्त दरपुश्ततोंसे किलेमें रहनेवाले रजलग या पासवान लोगोंको मैदानमें मकान बनाकर रहनेकी आज्ञा दी गई। इन लोगोंको जमीन और मकानोंकी लागत वगैरह राज्यसे दी गयी थी। सूरसागरके उसपार लालगढ़ तक जो नये मकान देखनेमें आते हैं वे सब इन्हीं लोगोंके[3] हैं—

(१) यह साहब राज्यके बड़े शुभचिंतक और महाराज डूंगरसिंहजीके मित्र थे।

(२) खास खजानेसे उस बड़े कारखानेका मतलब नहीं है जहाँ कि दसहरेकी नजर और २ भी महाराजकी निजकी आयकी रकम जमा होती हैं तथा महाराजके ही इच्छानुसार खर्च होती है। यह दूसरा गुप्त खजाना था। कहते हैं कि इसमें बहुतसा रुपया निकला था और फिर वह गवर्नमेण्टमें जमा होकर प्रामेसरी रकममें दाखिल होगया था।

(३) इन लोगोंको अब भी राज्यकी तरफसे पानी मिलता है। इनमें चार किस्मके लोग थे, पुरोहित, हुजूरी, दायजबाल गोले और नाई वगैरह।

इसके सिवाय राज्यकार्य्यमें या राजसी प्रथाओंमें बहुत कुछ उलटफेर किया गया । तात्पर्य्य यह कि पुराने ढर्रेकी जो बातें थीं उनमेंसे कुछ आवश्यक और प्रयोजनीय समझकर समयानुसार सांचेमें ढाल दी गयीं और बहुतेरी बातें बिलकुल उठादी गयीं । विशेष उल्लेख योग्य बात यह है कि भूतपूर्व्व महाराजके समय तक नित्यप्रति तख्तका मुजरा होता था वह इस कारण बन्द

(१) पहले यहाँ गद्दीनशीनकी दिनचर्य्या नियमबद्ध थी और प्रत्येक राजा महाराजको प्रातःसे सायंपर्यंत उन्हीं निश्चित नियमोंके अनुसार सारा कृत्य करना आवश्यक था । वे नियम पाठकोंके मनोरञ्जनके लिये हम यहाँ लिख देते हैं । यथा--प्रातःकाल निद्राभङ्ग होने पर अपने इष्टदेव और कुलदेवका ध्यान करके महाराज पलङ्ग पर कमलासनसे बैठ जाते, तब पुरोहित और आचार्य्य (पण्डित) अन्न दान और छाया दान कराते थे । यह दान हो चुकनेपर महाराज पृथ्वी पर पैर देते थे तत्पश्चात् शौचादि नित्यक्रियासे निश्चित होकर कुछ काल संध्यावन्दन करते फिर ठाकुरदेवालयमें दर्शन करने और चरणामृत लेने जाते थे । वहाँसे आकर बडी (दरबारी) पोशाक पहिन कर दरबार आममें जाकर तखत पर बैठ जाते, तब अपनी २ मिसलसे सब लोग मुजरा करते । मुजरेके वक्त महाराजको इस नियमसे खडा होना पड़ता कि बायां हाँथ तलवारकी मूठ पर रहे और दायाँ हाथ कटारके पास कमर पर रक्खा हो । पहले दरजेके पट्टेदारोंके मुजरेके वक्त दाहने हाथके पंजेको सीधा करते, दूसरे दरजेवालोंके मुजरेके समय अंगूठेको चाप कर सिर्फ चार अंगुलीसे उनका अभिवादन लेते । इसी प्रकार निकृष्ट श्रेणीके सरदार या अन्य जातीय कर्मचारियोंका मुजरा सिर्फ अनामिकासे लिया जता । मुजरे हो चुकनेके पश्चात् भोजन होते और भोजनोंके बाद हुजूरी राजवी या अन्य पार्श्ववर्ती लोगोंका मुजरा होता था । मुजरेमें महाराज किसीको सिर नहीं नवाते, सिर्फ राजवी लोगोंके मुजरेके वक्त अपने दोनों हाथ हृदय पर रखलेते मानो महाराज उनको हृदयसे चाहते हैं । इसके बाद कुछ समय आराम करके महाराज पुनः पोशाक पहिनकर बैठते और प्रजाके लोगोंकी नालिश फरयाद सुनते । राज्यके कामदार लोग उसी समय जरूरी कागजात पेश करते, उन पर हुक्म या दस्तखत होते, यह काम एक प्रहर रात्रि जाने तक होता रहता, तदनन्तर फिर शयन होता ।

आजकल सिर्फ दसहरा दिवाली सालगिरह इत्यादि खास २ त्योहारों पर उक्त रीतिसे तख्तका मुजरा होता है ।

करदिया गया कि एक तो वर्तमान महाराज नाबालिग थे दूसरे उस नियम पर दिनचर्य्याका निर्वाह होनेसे महाराजकी शिक्षा दीक्षामें बाधा उपस्थित होती थी। राज्याभिषेक होनेके थोड़े ही काल पश्चात् पण्डित रामचन्द्र दुबे महाराजको पढ़ानेके लिये पांडे यानी अध्यापक नियत किये गये। इसके अगले वर्ष सन् १८८८ ई. में महाराज गङ्गासिंहजी आबूको गये और वहां कुछ दिन जोधपुरके महाराज कुमार (वर्तमान राजा) सरदारसिंहजीके साथ बड़े स्नेह और भ्रातृभावसे रहे। आबूमें रहते समय महाराजका शरीर कुछ अस्वस्थ होगया था किन्तु चतुर अंग्रेज डाक्टरोंकी औषधिसे महाराज शीघ्र ही पूर्णरूपसे स्वस्थ होगये। इस अवसर पर उक्त पंडित रामचन्द्रजीने महाराजको बड़ी सेवा शुश्रूषा की थी इस लिये आबूसे आकर सन् १८८९ ई० में जब महाराज अजमेरको मेओ कालेजमें पढ़नेके लिये भेजे गये तब उक्त पण्डितका बेतन बढ़ाया गया और वे महाराजके मध्यम निरीक्षक भी नियत किये गये। सन् १८९१ ई. के अक्तूबर मासमें महाराज गङ्गासिंहजी कुछ दिनोंके लिये जोधपुरको पधारे थे परन्तु उसी वर्ष फरवरी मासमें जब उक्त महाराज कुमारके बिवाहोत्सवका निमंत्रण आया तब महाराज फिर जोधपुरको गये। इसके दूसरे वर्ष जोधपुर-नरेश महाराज यशवंतसिंहजी बीकानेरमें पधारे। इसी वर्ष सन् १८९२ में महाराज कोटाको पधारे। वहां आपके सहपाठी कोटाके महाराजने आपका यथोचित आतिथ्य सत्कार किया और शिकार भी खिलाया। महाराज गङ्गासिंहजीने सन् १८९० के प्रारंभसे सन् १८९४ तक दत्तचित्त होकर राजभाषा (अंग्रेजी) एवं राजनीतिका अध्ययन किया। इस अवसरमें वे सिर्फ होली और दशहरेकी छुट्टियोंमें कुछ दिनके लिये बीकानेर आते थे। अजमेरकी पढ़ाई समाप्त होनेपर महाराज बीकानेरहीमें रहने लगे और प्रायः राजप्रबन्धकारिणी समिति (कौन्सिल) के उपसभापति यानी दीवानकी सहायतासे राज्यकार्य्यकी शिक्षा प्राप्त करने लगे।

इस बीचमें ११ वर्षके भीतर पोलिटिकल ऐजेन्टकी निगरानीमें रेजेन्सी कौन्सिलने राज्यकी शासन--प्रणालीका पूर्णरूपसे परिशोधन

कर डाला । यहां पर उन सुधारोंकी संक्षिप्त तालिका मात्र देते हैं जो रेजेन्सी कौन्सिलकृत माने जा सकते हैं ।

(१) जोधपुरसे बीकानेर तक रेलकी सड़क बनी और रेलगाड़ी चली । (१८८९–९१)

(२) भारत गवर्नमेंण्टकी रक्षा एवं सैनिक सेवाके लिये गङ्गा रिसालेके नामसे एक ऊंटोंका रिसाला खड़ा किया गया (१८८९-९३)

(३) महकमा तामीरातका नियमानुसार नवीन कायाकल्प हुआ ।

(४) अकालका महकमा अलग स्थापित हुआ ।

(५) राज्यकी टकसाल तोड़ दी गई और राज्य तथा महाजनीमें सर्वत्र सरकारी सिक्केका चलन जारी किया गया ।

(६) महकमा बन्दोबस्त कायम होकर सब भूमि नापी गई और तदनुसार लगान जमीजोत या मालगुजारीकी रकम किसानों या जमींदारों पर लगाई गई ।

(७) सन् १८९६ में पलानाके पास कोयलेकी खानका पता लगा और उससे कोयला निकालना शुरू हुआ ।

(८) घग्घर नदीसे नहरें काटी गईं (१८९६–९७)

(९) राज्यकोषका उत्तम रीतिसे प्रबन्ध किया गया जिसके परिणाममें कोई तीस लाख रुपया अंग्रेज गवर्नमेंटके खजानेमें अमानत जमा हुआ (सन् १८९८) इत्यादि ।

सम्पूर्ण प्रकारकी राजोचित शिक्षामें उत्तीर्ण हो चुकने पर सन् १८९८ ई में महाराज गङ्गासिंहजीको बीकानेर राज्यका शासनाधिकार प्राप्त हुआ । इन महाराजके राज्यशासनकी बाग हाथमें लेते ही संवत् १९५६ के देशव्यापी घोर अकालने दर्शन दिये । इसमें कोई सन्देह नहीं कि अकाल साक्षात् दुर्दैवका प्रकोप या देशविशेषके दुष्कर्मोंका प्रतिफल है किन्तु स्मरण रहे कि यह देशके नरेशकी योग्यता कार्य्यक्षमता और प्रजाप्रियताकी एक उत्तम कसौटी भी है। अन्नकष्टके साथ ही जलकष्ट होनेसे इस देशपर अकालका और भी दुर्धर्ष प्रभाव पड़ता है । युवा महाराज गङ्गासिंहजीने

बड़ी ही दानवीरतासे अकालका मुकाबला किया । अपना अधिकांश समय अकाल विभागके निरीक्षणमें लगाकर अपनी प्रजाकी रक्षा की । जो लोग चलते फिरते काम करने योग्य थे उनके लिये बाल बच्चेसे बूढ़ेतकके लिये सपरिश्रम आजीविकाका प्रबंध किया गया और जो लोग इस योग्य नहीं थे उनके लिये पुण्यहेतु प्रति मनुष्य एकसेर अनाज दिया जाता था इसी अवसरमें राजधानीके शहरपनाहका कुछ नवीन हिस्सा बढ़ाकर बनवाया गया । हरएक तहसीलकी मार्फत गांव गांव इसी प्रकार प्रजापालनका कुछ न कुछ प्रबंध किया गया था । इस कार्य्यमें नगरके महाजनोंने महाराजको विशेष सहायता दी थी. उनमें सेठ कस्तूरचंदजी मुख्य हैं । इसके लिये महाराजकी मारफत उनको सरकारसे राय बहादुरकी पदवी मिली । गवर्नमेण्टने युवा महाराजकी कार्य्यपटुता एवं प्रजापालकतासे प्रसन्न होकर इन्हें भी पहले दर्जेके केसर हिन्दका तमगा प्रदान किया । जून सन् १९०० ई० में महाराज गंगासिंहजीको सरकारी सेनाके आनरेरी मेजरका पद प्राप्त हुआ । अकालके समयमें महाराजने राज्यका उपजा हुआ अन्न सीमाके बाहर जाना बंद कर दिया था ।

एक दूर देशकी घटना होने पर भी गत चीन युद्धका हिन्दुस्तानके इतिहाससे घनिष्ठ संबंध है । इस विशाल युद्धका मूल कारण उन्नति

(१) अगस्त सन् १८९९ से अक्तूबर सन् १९०० तक अकालका काम जारी था । इस बीचमें राजधानीके शहर पनाहका उत्तरीय भाग नये सिरेसे बढ़ाकर बनाया गया, गजनेरका तालाब खुदवाया गया तथा और भी कई काम जारी थे जिनमें ९,३४८७१५ मनुष्य काम करनेवाले थे । इनको प्रति पुरुष १४ छटांक, प्रति स्त्री १२ छटांक, प्रति बालक ८॥ छटांक और दुधमुहे बच्चोंको ३॥ छटांक अन्न रोजाना दिया जाता था । अनाथ बालकोंको ६ छटांक अन्न प्रति इकाई दिया जाता था । अकाल पीड़ितोंमें प्रति सैकड़ा ८० आदमी काम करनेवाले और बीस अनाथ थे । इन लोगोंकी औषधि आदिके प्रबन्धके लिये डाक्टर भी मुकर्रर थे । इस अकालके महकमेमें राज्यका सनोसर ७३७२०।≥) रोजाना खर्च पडता था ।

शील जापान था, उसके उभाड़नेसे संसारभरकी सबल राज-शक्तियाँ चीन पर चढ़ दौड़ी थीं यह बात सन् १९०० ई० की है। उस समय नीतिविशारद पुरुषोंके दिमागमें उसके सम्बन्धके समाचारोंकी सड़क पर रात दिन बड़े २ विचारोंके घोड़े दौड़ा करते थे। हमारे होनहार नवयुवक महाराज गंगासिंहजीने उक्त घटनाको अपने अभ्युदयका एक सुअवसर समझकर ब्रिटिश गवर्नमेण्टकी सेवामें एक प्रार्थना पत्र भेजा कि मैं स्वयं अपनी इम्पीरियल सरविस उटनाल सेना (गंगारिसाला) सहित भारत गवर्नमेण्टकी औरसे चीन युद्धमें सम्मिलित होनेका आकांक्षी हूं। सौभाग्यवशात् भारतेश्वरी महाराणी विक्टोरियाके यहाँ महाराजकी प्रार्थना सादर स्वीकृत हुई। इस वीर प्रार्थनाकी मंजूरीका समाचार १० अगस्त सन् १९०० को बीकानेरके रेजीडेण्टकी मारफत रियासतके दीवानके पास आया। सच है क्षत्रियोंके लिये युद्धमें जुटनेके समाचारसे बढ़कर और क्या शुभ हो सकता है? फौरन चीन यात्राकी तैयारी होने लगी। इस तैयारीमें श्रीदरबारके अनन्य मित्र वर्तमान अलवर नरेश श्रीमान् जयसिंहजीने बहुत सहायता दी थी अर्थात् यात्राके लिये आवश्यक बहुतसा सामान अपने यहाँसे दिया था। महाराज गंगासिंहजी अपने प्राईवेट सेक्रेटरी मिस्टर R. D कूपर (पारशी) कप्तान (अब मेजर) कुँवर पृथ्वीराजासिंह और धाभाई सालिगराम इन तीन प्रधानों तथा रणोन्मत्त जंगी राठौड़ सेना सहित चीन गये।

चीनमें अपनी राठौड़ सेनाके प्रधान सेनापति स्वयं श्रीदरबार साहब ही थे, पर यह सेना अंग्रेज सेनानायक लेफटिनेण्ट जनरल सर एलफर्ड चौथी बिग्रेड़में सम्मिलित होकर काम देती थी। सहज वीर राठौड़ सेनाने श्रीदरबार साहबकी उपस्थितिमें पिट्राङ्गके किलेकी विजयमें और पोर्टिङ्गफूकी चढ़ाईमें अमेरिकन सेनाके साथ बड़ी वीरतासे युद्ध किया था। परस्पर संधिबंधन होजानेसे मूलविवाद शान्त होने पर महाराज साहब तो सन् १९०० के दिसम्बरमें राज-

(१) इस गङ्गा रिसालेमें ज्यादातर राठौड़ राजपूत ही भरती किये जाते हैं, सिख वा मुसलमान एक चौथाईसे भी कम हैं, और कौमोंकी भरती बन्द है।

धानीको लौट आये पर बीकानेरी रजमट उक्त अंग्रेजीसेना नायककी मातहतीमें बराबर काम करती रही । विशेषकर वीर जापानी और अमेरिकन लोगोंके साथ साथ दस महीने तक पूर्व्वचीनमें मौके २ से कई लड़ाइयाँ करके इस राठौड़ सेनाने पूर्णतया प्रमाणित कर दिखाया कि वंशपरम्परासे कट्टर राठौड़ वीर कैसे धीर वीर सहनशील और दयालु हृदय होते हैं । एक समय पर हमारे राठौड़ वीरोंने अपने साथवाले अमेरिकन लोगोंके खेमे अपने हाथसे लगाये, अपने पाससे उनको खाना दिया और अपने कम्मल भी उनको दिये। रायल टूर इन इंडियाके लेखकने ललित भाषामें उक्त घटनाका उल्लेख करते हुए अंतमें लिखा है Kindness which was never forgetton. राठौड़सेनाकी यह उदारता चिरस्मरणीय है ।

श्री दरबार साहब २४ दिसम्बर सन् १९०० को चीनसे लौटकर बीकानेरमें पधारे थे । आपके सकुशल रणक्षेत्रसे लौट आने पर प्रजाके लोगोंने बड़ा आनन्दोत्सव मनाया । सर्व साधारणकी ओरसे एक बधाई—सूचक अभिनन्दनपत्र श्री दरबारकी सेवामें समर्पित किया गया था । श्री दरबार साहबने उसके उत्तरमें प्रजाके अपने प्रति अनन्य स्नेह पर असीम आनन्द प्रगट किया । जो प्रधान लोग उक्त युद्ध यात्रामें श्री दरबारके साथ गये थे उन सबको समुचित पुरस्कार दिया गया । जब गंगारिसाला चीनसे लौटकर आया तो महाराजने एक खास दरबार करके सबके प्रति अपना असीम स्नेह अपनी ओजभरी वक्तृतामें प्रगट किया और अफसर सिपाही सबको एक बृहत् भोज दिया । क्या यहां पर उक्त घटनाके उपसंहारमें इतना अपनी तरफसे जोड़ना अत्युक्ति होगी कि श्री दरबार गंगासिंहजीका चीनके युद्धमें सम्मिलित होना भारतवर्षके महाभारतके परिणामके उत्क्रमकी सूचना देता है? यदि नहीं तो विचारिये कि महाराज अशोकके बाद हिंदुस्तानका कौनसा राजा सेना सहित काबुलकी सीमाके उस पार जानेमें समर्थ हुआ है ?

चीनकी युद्ध यात्रासे वापिस आने पर महामान्या महारानीकी तरफसे महाराज गंगासिंह बहादुरको के० सी० आई० ई० (K.C.

IE.) का खिताब दिया गया। फिर कोई एक साल तक दरबार साहब बीकानेरमें ही रहे और पूर्व्वव्यवस्थित रीतिसे निश्चिन्तता पूर्वक राज्यका निरीक्षणावेक्षण करते रहे। सन् १९०२ के मई मासमें आप बूंदीसे शेरोंका शिकार खेलकर आये ही थे कि एक सप्ताह बाद आबूको पधारे। वहां आप हिन्दुस्थानके उन आठ देशी राजाओंमें सम्मिलित किये गये जो भूतपूर्व सम्राट् सप्तम एड्वर्ड महोदयके राज्याभिषेकके उत्सवमें विलायत जानेके लिये भारत सरकारकी ओरसे निमंत्रित हुए थे। समय बहुत ही संकीर्ण था इसलिये श्री दरबार साहब आबूसे सीधे बम्बईको पधार गये और ३१ मईको जहाज पर सवार होकर १५ जूनको लंदनमें जा पहुँचे। अभी राज्याभिषेकके महोत्सवकी तिथिके १० दिन बाकी थे। इस बीचमें आप सम्राट्के प्रधान २ कर्मचारी और सुयोग्य विद्वानोंसे मिले। युवराज (वर्त्तमान सम्राट) प्रिंस आव वेल्स महोदयने श्रीदरबार साहबको अपने सैनिक मुसाहब (ए. डी. सी) की पदवी प्रदान की। २६ दिसम्बरको श्रीमान् बादशाह एडवर्ड सप्तम महोदयने निज करकमलोंसे महाराजको राज्याभिषेकका तमगा दिया। पुनः प्रिंस आव वेल्स महोदयने निज पिताके प्रतिनिधि स्वरूप चीन युद्धका एक स्वर्ण पदक परेड पर महाराज साहबको अर्पित किया— उस दिन सम्राट् महोदयका शरीर कुछ अस्वस्थ था। महाराज गङ्गासिंहजी साहब १७ अगस्तको विलायतसे अपने देशको लौटे और ३१ सितम्बरको सकुशल निज राजधानी श्रीबीकानेरमें आ पहुँचे।

श्री दरबार गंगासिंहजीके विलायतसे आनेके एक सप्ताह पश्चात् ता. ७ सितम्बर सन् १९०२ को युवराज कुमार श्री शार्दूलसिंहजीका जन्म हुआ। आगामी जनवरीमें दिल्लीमें ताजपोशीका दरबार होनेवाला था, उसीके उपलक्ष्यमें एक मास पहले भारतके वाइसराय लार्ड कर्जन महोदयने मुख्य २ देशी रियासतोंमें एक दौरा किया था। नवम्बर मासकी २४ तारीखको वाइसराय बहादुर बीकानेरमें पधारे थे। वे दो दिनतक राज्यके मेहमान रहे और उस अवसर पर निम्नलिखित कार्य्य हुए—कर्जन बाग और

विक्टोरिया ममोरियल क्लब खोले गये । लेडी कर्जन अस्पतालकी नीवका पत्थर लेडी कर्जन महोदयाने अपने हाथसे स्थापित किया. एक बृहत् भोजके समय श्रीदरबार साहबकी वक्तृताके उत्तरमें लार्ड कर्जन महोदयने जो व्याख्यान दिया था, उसकी नीचे लिखी बातोंसे पता लगता है कि सुचतुर लार्ड कर्जनकी दृष्टिमें महाराज गङ्गासिंह बहादुर कैसे पुरुष थे । यह कहकर मैं अपना कोई गुप्त आशय प्रगट नहीं करता हूं कि जबसे मैं हिन्दुस्थानमें वाइसराय होकर आया हूं मुझे किसी भी देशी राजाकी व्यक्तिगत रीतिनीति एवं जीवनचर्य्यासे इतना विशेष मनोरंजन नहीं हुआ जितना महाराज (गंगासिंहजी) से हुआ है, क्योंकि ऐसी तीव्र योग्यता, अतुलनीय कार्यक्षमता और

"I am revealing no secret, when I say that the personality and career of no Ruling Chief in India have excited in me a warmer interest since I have been out here as Viceroy than those of His Highness, for he possesses such keen capabilities, such excellent chances, so splendid an opening. In England where we are, on the whole, a long-lived people, an eldest son or heir very frequently does not succeed to his rank or estate until he is in the middle of his life and has lost some thing of the zest and spring of youth. In India on the other hand, I have in my tours over & over again come across the spectacle of a State in the hands of a young chief in the fresh morning of manhood with all life before him, and the world, so to speak at his feet. Just think of the oportunities that await such a man ! if he has had the advantage of the best English education as His Highness has had he can introduce all manner of reforms and enlightment, into the administration of his State. If he is at the same time a true Indian, by which I mean a man devoted to the interests of his own creed and caste and country then he can obtain an almost an unemeasured influence over his subjects. Thus he can combine the merits of the East and the West in a single hand and can be at the same time a liberal and a conservative each in the best sense of the terms. Above all he can see the work of hands frutify around him in his life time and can read his own epitaph before he dies in the affection and gratitude of his people. These are the opportunities and this is the sort of future that I fondly hope for His Highness and which it rests conclusively with him to shape for good or for ill.

सुविस्तृत सौभाग्यके पूर्ण लक्षण आपहीमें पाये जाते हैं । यहां क्या इंग्लैंडमें भी किसी बड़ बूढ़ तजरबेकार रईसका लड़का भी अपने बापकी संपूर्ण पद मर्यादाको तब तक नहीं पहुँच सकता जब तक कि अवस्थाॅ पकनेके चिह्न कुछ झुर्रियां उसके चहरे पर दिखाई न देने लगें इत्यादि । सन् १९०३ के प्रारंभमें महाराज ताजपोशीके दरबार-में सम्मिलित हुए थे ।

सन् १९०५ के जून मासमें श्री दरबार गंगासिंहजी आबूको पधारे थे । वहां बादशाह सप्तम एडवर्ड बहादुरकी वर्षगांठके उपलक्षमें एक आम दरबार था । इस दरबारमें राजपूतानेके एजेन्ट गवर्नर जनरल बहादुरने आपको गवर्नमेन्टकी ओरसे के. सी. एस. आई. (नाइट कमाण्डर आफ दी. मोस्ट एक्सीलेण्ड आरडर आफ दी स्टार आफ इंडिया) की पदवी प्रदान की । इसी वर्ष मैसूर, अलवर, किशनगढ़ और छोटे उदयपुरके महाराज भी बीकानेरमें बारी बारीसे राज्यके मेहमान होकर पधारे थे इस वर्ष फिर पट्टेदारोंने कुछ अशान्तिका सूत्रपात किया था । लेकिन श्री दरबार साहबको शीघ्र ही इसकी सूचना मिलगई । जब राज्यकी ओरसे जांच होने लगी तब उन्होंने अपनी कोई ३६ उज्रदारियोंसे भरी हुई एक अर्जी पेश की परंतु वास्तवमें इस अशान्तिकारक मंडलीके नेताओंकी भीतरी इच्छा कुछ और ही थी जिससे राज्यके प्रबन्धमें गड़बड़ और सर्व साधारण प्रजामें विशेष अशान्ति फैलनेकी संभावना थी । अतः और सब लोगोंका अपराध तो दयालु महाराजने सहज ही क्षमा कर दिया परंतु उक्त नेताओं (ठाकुर हुक्मसिंह बीदासर ठाकुर भैरूंसिंह अजितपुरा और ठाकुर रामसिंह गोपालपुरा) को न्याय होनेके लिये एक ऐसी कमेटीके सुपुर्द करदिया जिसमें पहले दरजेके दो जागीर-दार ठाकुर हरीसिंहजी महाजन और ठाकुर कान्हसिंह भूकरका और

(१) अवस्था पकती है ४० वर्षके ऊपर । स्मरण रहे कि लार्ड कर्जन भी ३७ वर्षकी अवस्थामें यहां वाइसराय होकर आये थे इतना नौजवान वाइसराय और कोई नहीं हुआ ।

दो राजकर्मचारी पंच थे महाराज भैरवसिंह राजवी सरदार सरपंच थे इस कमेटीने उक्त विद्रोही पट्टेदारोंको दोषी और दंडनीय ठहराया इसलिये वे तीनों ठाकुर भीनासर[1]में नजर कैद कर दिये गये ।

सन् १९०५–६ ई० में जब श्रीमान् प्रिंस आव वेल्स महोदय (वर्तमान सम्राट) भारतवर्षका भ्रमण करनेके लिये पधारे थे तब उदयपुर और जयपुर होते हुए वे सपत्नीक बीकानेरमें भी गये थे । बीकानेरमें उनका शुभागमन ता० २४ नवम्बर १९०५ को हुआ था । श्रीदरबार साहब अपने समस्त राजसी परिकर और सेना सहित बड़े समारोहसे श्रीमान् प्रिंस और श्रीमती प्रिंसेजको लेनेके लिये स्टेशन पर गये थे । उस दिन साधारण शिष्टाचार और नियमित अवाई जवाईका व्यवहार होजानेके बाद श्रीमान् प्रिंस महोदय सपत्नीक श्रीदरबारके साथ गजनेरको पधारे । वहां दो दिनतक तालमें मुर्गाबी चिड़ियोंका शिकार होता रहा । इस शिकारमें कुल २८४१ मुर्गाबियोंका बध हुआ था जिनमेंसे २०७मुर्गाबी श्री प्रिंस महोदयके करकमलोंसे निहत हुए थे और १०९श्रीदरबार साहब द्वारा । एक दिन गजनेरके रमनेमें भी सुअरका शिकार हुआ था । वहां श्री कर्नल सर प्रतापसिंहजी ईडरनरेशने एक बड़े भारी सूअरको भालेसे मारा था, उनकी फुर्ती और हस्त लाघवताकी अंग्रेज लेखकोंने बड़ी प्रशंसा की है । ता० २७ को गजनेरसे वापिस आने पर श्रीदरबार साहब और श्रीमान् प्रिंस महोदयकी सवारी श्रीलक्ष्मीनारायणजीके मंदिरको शहरमें होकर गई । लालगढ़से जूनागढ़ तक दोनों तरफ राज्यके जंगी सिपाहियोंकी कतारें खड़ी थीं । सवारी बग्घी पर थी ।

शहरमें घर द्वार खूब सजावट हुई थी । वहांसे आकर लालगढ़के महलोंमें श्री प्रिंस महोदयने गंगारिसालेके नौ अफसरोंको सुमालीलेण्डकी लड़ाईके तमगे अपने करकमलोंसे समर्पित किये । सुमा-

(१) किलेके अन्दर एक मकान है । पहलेसे ही उसमें ऐसे ठाकुर लोग कैद किये जाते थे पर उन लोगोंको हथकडी बेडी तौक आदि डाले जाते थे । इनको इस प्रकारका कठिन दंड श्री दरबारने नहीं दिया सिर्फ नजर कैद किया ।

लीलेण्डमें इस राठौड़ सेनाने बड़ी वीरतासे काम किया था । जद्बलीकी लड़ाईमें ८ सैनिक मरे और तेरह घायल हुए थे । यह तमगे जद्बलीकी ही लड़ाईके नाम से थे । विदाईके समयके बृहत् भोजमें श्री दरबार साहबने श्रीप्रिन्स महोदयकी स्वास्थ्य रक्षाके लिये परमात्मासे प्रार्थना करते हुए श्रीप्रिंस महोदयके प्रति निवेदन किया था कि मैं श्रीमान और श्रीमती प्रिंसेज महोदयाके शुभागमनके स्मारकमें एक नवीन भवन निर्माण करवाना चाहता हूं जिसमें राज्यका सिलाखाना और संस्कृत पुस्तकालय प्रदर्शनीकी भाँति स्थापित होंगे, दूसरे अपने राज्यकी निज सेनामेंसे अर्द्धभाग गंगारिसाले (Imperial Service troop) में सम्मिलित करना चाहता हूं । उत्तरमें श्रीमान प्रिन्स आव वेलस महोदयने श्रीदरबार साहबके प्रस्तावों पर प्रसन्नता और सम्मति प्रकट करते हुए कहा कि मैं आपके आतिथ्य सत्कारसे अतीव आह्लादित हुआ हूं । वास्तवमें यह कहना अत्युक्ति नहीं है कि आपके महलोंमें रहते हुए मेरे मार्गका श्रम समूल निर्मूल होगया।सचमुच मैं गंगारिसालेके शानदार राठौड़ सिपाहियोंको देख कर अतीव प्रसन्न हुआ हूं । इनके ऊँटोंकी अच्छी स्थिति मुझे पसंद है । विश्वास रखिये मैं आपकी उन्नत अभिलाषाओंका सारांश अवश्य ही सम्राटके कानों तक पहुंचाऊँगा ।

सन् १९०७ के फरवरी मासमें भारतके बड़े लार्ड मिंटो महोदयने श्री दरबार साहबको आगरेमें बुलाया और उसी वर्षके नौ रोज (न्यूइयर्सडे) के उपलक्षमें सम्राटकी ओरसे जी० सी० आई०ई (नाइट ग्राण्ड कमाण्डर आफ दी मोस्ट एमीनेण्ट आर्डर आफ दी इंडियन एम्पायर) की पदवी प्रदान की । ३१ मार्चको दरबार साहब धौलपुरको पधारे और वहांके बालक महाराणासे मिले । इसी वर्ष श्रीमान लार्ड मिंटो महोदय राज्यके मेहमान होकर ता० १९ नवम्बरको हनुमानगढ़में पधारे । एक दिन वहां शिकार खेलकर ता० २१ को बीकानेरमें पधारे । यहां पूरे राजसी ठाटबाटसे लार्ड महोदयकी पेशवाई की गई । परस्पर नियमित अवाई जवाई और शिष्टाचार हुआ । लार्ड महोदयने महाराजकी योग्यता

नीतिचातुरी और कार्यपटुता तथा गंगारिसालेकी वीरताका बखान करते हुए कहा कि मैं आशा करता हूं कि इस राठौड़ राज्यने जिस उद्योग परिश्रम और योग्यतासे अंग्रेज सरकारके कृपापात्र एवं विश्वास पात्र होनेका सौभाग्य प्राप्त किया है उसे वह अपने हाथसे कदापि न खोवेगा ।

चीनयुद्धसे लौटकर आनेके पश्चात् श्रीदरबार गंगासिंहजीने जिस प्रकार लगातार कठिन परिश्रमसे कार्य्य संपादन किया वह पिछले पृष्ठोंसे स्वतः स्पष्ट है । इसी कारण स्वास्थ्यमें किंचित् क्षति पड़नेके कारण आपको जलवायु बदलना परम आवश्यक हुआ।अतः आप मई मासमें बालक युवराज कुमार सहित इंगलेण्डको पधारे इंग्लण्डमें जाने पर श्रीदरबार साहबको श्रीमान् सम्राट और महामान्या महारानीसे साक्षात् करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ । वहां पर डेनमार्कके बादशाहकी मुलाकातके उपलक्ष्यमें जो बृहत् भोज राजमहलमें हुआ था उसमें भी श्री दरबार साहब निमंत्रित किये गये थे और विंडसोरकी गार्डन पार्टीमें भी आप सम्मिलित हुए थे जिसमें बादशाह सलामतके वंशजोंके अतिरिक्त अन्य साधारण पुरुष पैठ ही नहीं सकता । इसके सिवाय श्रीदरबार साहबने प्रिंस आव वेल्स महोदय और भारतके स्टेट सेक्रेटरी लार्ड मोर्ले आदिसे भी समय २ पर साक्षात् किया । वहां-से दरबार साहब जर्मनीमें अपने पूर्व्व परिचित एवं अतिथि ड्यूक आव हेससे मिलनेके बाद ता० ११ अक्तूबर सन् १९०० को सकुशल निज राजधानीमें आन पधारे । सन् १९०८ के प्रारंभमें श्री दरबार साहबने अपने पूर्व्व पुरुषोंको पिंडदान करनेके लिये श्री गयाजीकी यात्रा की थी जिसमें कोई दो सप्ताहका समय व्यतीत हुआ था; इस समय महाराज बहादुर सानन्द प्रजापालन कर-रहे हैं । यहां हम श्री महाराज भैरवसिंहजीके नामको कदापि नहीं भूल सकते जो श्री दरबार साहबके पितृव्य (चचेरेभाई) हैं । आप स्टेट कौन्सिलके सीनियर मेम्बर और पोलिटिकल सेक्रेटरी हैं । श्रीदरबार साहबके राजधानीसे बाहर पधारने पर यही दरबारके प्रतिनिधि स्वरूपसे राज्यकार्य्य संपादन करते हैं।आपको जनवरी सन्

१९०९ में गवर्नमेण्टसे सी० एस० आई० की पदवी मिली है हम समझते हैं पाठकोंको यह जानकर और भी प्रसन्नता होगी कि बीकानेर राज्यकी स्टेट इनफेंट्री भी इम्पीरियल सर्विसमें शामिल होगई। उन्हें वही सब सामान मिला है जो सरकारी फौजको मिलता है।

जुबिली महोत्सव।

मिती भादों सुदी १२ संवत् १९६९ (तारीख २४ सितम्बर सन् १९१२ ईस्वी) को महाराज सर गङ्गासिंहजी बहादुरको राजगद्दी पर बैठे २५ वर्ष होगये। २५ वर्ष निर्विघ्न प्रजा पालन करनेके उपलक्षमें बीकानेरमें इस अवसर पर जुबिली महोत्सव हुआ। एक सप्ताह तक बीकानेरमें बड़ी धूम रही। राज दरबार और प्रजामें तरह २ से आनन्द मनाया गया। महाराजने प्रजाकी उन्नतिके लिये कई अच्छे अच्छे कार्योंकी घोषणा की। बीकानेरके इस आनन्दोत्सवका संक्षिप्त समाचार यहां पर देना हम आवश्यक समझते हैं।

२० सितम्बरको उत्सव आरम्भ हुआ। उस दिन लालगढ़में उद्यान सम्मिलन (गार्डनपार्टी) हुआ। इस भोजमें राज्यके अंगरेज रेसीडेण्ट, मुल्की और फौजी अफसर और बड़े बड़े सरदार तथा रईस लोग शामिल थे। २१ सितम्बरको सेनाकी ओरसे चौगान खेला गया और जंगी अफसरोंने एक भोज दिया। उसमें महाराज बहादुर युवराज सहित पधारे थे। २२ सितम्बरको महाराज बहादुर धूमधामके साथ श्रीलक्ष्मीनारायणजीके मन्दिरमें पधारे। इस जुलूसमें सबसे आगे पुलिसके इंसपेक्टर जनरल थे। उनके पीछे हाथियोंपर राजचिह्न (माहे मरत्तब) और महारानी विक्टोरियाका सन् १८७७ ईस्वीका दियाहुआ झंडा फहराता जाता था। इसके बाद क्रमसे राज्यके पेंशन पानेवाले सैनिकोंका दल, गंगारिसाला और सार्दूल पैदल सेना जाती थी। उसके पीछे १० वर्षकी अवस्थाके युवराज एक घोड़े पर सवार थे। उनके पीछे महाराज बहादुर जंगीपोशाक पहने एक अरबी घोड़े पर चढ़े हुए थे। उनकी अगलबगल उनका स्टाफ और राज्यके मुख्य मुख्य सरदार थे। उनके पीछे राज्यके दूसरे सरदार और रईस घोड़ों पर सवार थे, जुलूसके अन्तमें महा-

राजके शरीररक्षक और घुड़सवार थे। उस दिन नगर ध्वजा पताका बन्दनवार और तरह तरहकी मेहरावों तथा राजभक्ति-सूचक शब्दोंसे एक अनुपम शोभा पारहा था। स्थानस्थान पर स्त्रियां मङ्गल गीत गाती हुई देखी जाती थीं। चारों ओर महाराजकी जय मनायी जा रही थी। २२ सितम्बरको विक्टोरिया क्लबमें गार्डनपार्टी हुई जिसमें महाराज युवराज और बृटिश रेसीडेण्ट उपस्थित थे। २३ तारीखको महाराज मोटर पर सवार होकर कोड़मदेसरको पधारे थे। (इस स्थानकी पवित्रताका वर्णन परिशिष्टमें कियागया है।)

२४ सितम्बर उत्सवका मुख्य दिन था। उस दिन प्रातःकाल बीकानेरमें एक बड़ा दरबार हुआ। दरबारमें बृटिश रेसीडेण्ट कर्नल बिंढमने महाराजको २५ वर्ष राज्य करनेके लिये बधाई दी। महाराज गङ्गासिंहजीने एक वक्तृतामें रेसडिण्ट साहबको धन्यवाद देकर अपने शासन कालकी घटनाओंका सिंहावलोकन किया महाराजने अपनी वक्तृताके अन्तमें बृटिश सिंहासनके प्रति अपनी अविचल राजभक्ति प्रगट की और फिर उन सुधारोंकी घोषणा की जिन्हें श्रीमानने इस आनन्ददायक अवसर पर प्रजाकी भलाईके लिये किया है। उसका विवरण हमने राजकीय भाषामें ही इसके अन्तमें उद्धृत कर दिया है। इसके पश्चात् उन लोगोंकी नामावली पढ़ी गयी जिन्हें महाराज बहादुरने जुबिलीकी खुशीमें पदवी, इज्जत और इनाम दिये। दरबार समाप्त होने पर गरीबों और अपाहिजोंको भोजन कराया गया। तीसरे पहर नजर लेनेका दरबार हुआ। उसमें सरदारों और राजकर्म्मचारियों तथा अन्यान्य लोगोंने महाराजको पृथक् पृथक् अभिनन्दन पत्र दिये। सन्ध्याको नगरमें खूब रोशनी हुई। रातको ताजीमी सरदारोंका एक बृहत् भोज हुआ। २५ सितम्बरको सबेरे महाराज एक स्पेशल ट्रेन द्वारा देशनोकमें श्रीकरणीजीके दर्शन करने गये और दोपहर तक वापस आये। सन्ध्याको महाराजने डूंगर मेमोरियल कालेजका भवन खोला। कालेज खोलनेसे पहले महाराजने एक वक्तृतामें भूतपूर्व महाराज डूँगरसिंहजीकी विद्याप्रचारनीतिकी प्रशंसा करते हुए कहा

कि स्वर्गीय महाराजने अपनी प्रजाको अंगरेजीकी शिक्षा देनेके लिये कालिज पहले पहल यह राज्यमें खोला था । पीछे मकान खोला गया । कालिजका मकान १। लाख रुपयेसे बना है । विद्यार्थियोंको पुरस्कार देनेके बाद यह जलसा समाप्त हुआ । रातको एक भोज हुआ जिसमें रेसीडेण्ट साहब, सरदार लोग तथा बहुतसे अंगरेज और हिन्दुस्थानी अफसर शामिल थे । २६ सितम्बरको शिकारका आनन्द मनाया गया । फिर व्यायाम और नाचगान हुआ । इस प्रकार बीकानेर नरेशका जुबिली महोत्सव समाप्त हुआ । इसके उपलक्षमें एक बहुत बडा उत्सव आगामी नवम्बर मासके अन्तमें होनेवाला है । हम भगवानसे यह प्रार्थना करके लेखनीको विश्राम देते हैं कि महाराज गङ्गासिंहजी बहादुर दीर्घायु होकर अपने सुशासनसे प्रजाको उत्तरोत्तर लाभ पहुँचावें ।

नोटीफिकेशन मजरिये होम डिपार्टमेन्ट राज श्री बीकानेर-मुवर्रख' गढ़ बीकानेर, २४ सितम्बर सन् १९१२ ईसवी.

सर्व शक्तिमान् जगदीश्वरकी कृपासे श्रीजी साहबको राजासिंहासन पर विराजे आज पच्चीस वर्ष पूरे हुए हैं और इस आनन्ददायक और मुबारिक मौके पर श्रीजी साहबने मेहरबानी फरमा कर नीचे लिखी बखशिशें और रियायतें अपनी सब श्रेणियोंकी प्रजाको प्रदान की हैं, इस बात पर पूरी निगाह रक्खी गई है कि इन बखशिशोंका असर जहांतक मुमकिन हो हर दर्जेके लोगों पर पहुँचे और श्रीजी साहब भरोसेके साथ उम्मेद करते हैं कि इन बखशिशोंसे रियायाकी बेहबूदी और खुशहालीमें तरक्की होगी ।

पीपुलस रेप्रेजेन्टेटिव असेम्बली यानी प्रजाप्रतिनिधि सभा.

श्रीजी साहबको यह पूरा यकीन है कि राजा व प्रजाका रियासतकी बेहतरीमें एकसा सम्बन्ध है और यहांकी प्रजा जिस कद्र अपने आपको योग्य साबित करती जाय उसी कद्र रियासतके इन्तजाममें उसकी सम्मति और भागकी वृद्धि होनी चाहिये, श्रीजी साहबने मेहरबानी फरमा कर प्रजा प्रतिनिधि सभाका नियम करना मंजूर फरमाया है । इस सभाको इख्तियार दिया जायगा कि कानूनी माम-

लों और बजट पर बहस करे और बिल यानी कानूनके मसौदे पेश करे और आम लोगोंकी भलाईके मामिलोंके मुताल्लिक और प्रस्ताव प्रश्न पेश करने (इंटर-प्लेशन) पूछनेके हकको काममें ला सके, इस सभामें कुछ तो ओहदेदारान और नामजद किये हुए मेम्बर होंगे और कुछ ऐसे मेम्बर होंगे जिनको उन आदमियोंने चुना होगा जिनको चन्द शरायतके साथ मेम्बर चुननेका इख्तियार दिया जायगा।

इस गर्ज से कि लोगोंमें अपने मामलोंका आप इन्तजाम करनेका खयाल ज्यादा तरक्की पावे म्युनिसिपल बोर्डोंको अपने मुकामी कामोंके इन्तिजाममें ज्यादा इख्तियार दिये जावेंगे–और श्रीजी साहबका यह इरादा है कि चन्द चुने हुए गांवोंमें पंचाइतें मुकर्रर की जायँ, जिनको यह इख्तियार दिया जाय कि खफीफ* दीवानी मुकद्दमातमें फैसला पञ्चायती करें और उन तमाम मामिलात पर जो उनके हुदूदमें हों रिपोर्ट करें।

अदालतोंमें हिन्दीका जारी किया जाना–चूंकि हिन्दी ही रियासतमें सबकी मातृभाषा है जिसमें श्रीजी साहबकी प्रजाका बड़ा हिस्सा अपने कारोबारको करता है और जो कवायद व नोटीफिकेशन जारी किये जाते हैं उनको और अदालतों और सरकारी दफ्तरोंकी कार्रवाइयोंको वह लोग केवल इसी भाषामें समझ सकते हैं श्रीजी साहबने मेहरबानी फरमाकर हुक्म दिया है कि सब महकमे जातकी काररवाई ज्याद:से ज्याद: पहिली अक्टूबर सन् १९१३ ई०से हिन्दीमें होगी और अदालतों और पुलिसके महकमोंकी काररवाई जहां तक कि कागजात और मिसलोंका तअल्लुक अदालतोंसे है–ज्याद:से ज्याद: पहिली अक्तूबर सन् १९१४ से हिन्दीमें हुआ करेगा–जो चन्द मुलाजिमान हिन्दसे इस वक्त नावाकिफ हैं उनकी सहूलियतका लिहाज करके यह तारीखें मुकर्ररी की गई हैं।

शरहनामा जकात:–अगरचे धान पर पैसार व नैसारकी जकात बहुत वर्षोंसे ली जाती है और मौजूदा शरहनामा रीजेन्सी कौन्सिलके वक्तमें संवत् १८९८ ई० में जारी हुआ था और ज्याद:से ज्याद:

कुल आमदनी पैसार किसी एक सालके अन्दर १०७५०३) हुई है और नैसारसे १२४०३५) हुई और दोनोंका औसत पिछले तीन बरसमें १०६८८०) होता है लेकिन श्रीजी साहबने इस बातका ख्याल फरमाकर कि जिन वर्षोंमें जमाना होता है इस जकातसे व्यौपारमें रुकावटें होती हैं और जिन वर्षोंमें कि मेह नहीं बरसता है इससे लोगोंको ज्यादा तकलीफ होती हैं, मेहरबानी फरमाकर यह हुक्म दिया है कि पहिली अक्टूबर सन् १९१२ से धान पर सब तरहकी जकात नैसार पैसार वो बहतीबान बिलकुल उठा दी जाय।

इसके सिवाय आम लोगोंकी और खास कर साहूकार लोगोंकी आसानीके लिये श्रीजी साहबने मेहरबानी फरमा कर शरहनामा जकातमें नीचे लिखी तबदीलियोंका हुक्म फरमाया है—

(क) जवाहरात चाहे बिक्रीके लिये लाये जावें चाहे घरू इस्तेमालके वास्ते।

(ख) सोने चांदीके जेवरात घरू इस्तेमालके।

(ग) सब सिले हुए कपड़े अपने निज इस्तेमालके लिये इन चीजोंपरसे जकात उठा दी जावेगी।

पीतलपर जकात कम की जाकर बजाय ३) फी मनके २।) मन रक्खी जावेगी।

डलमेराके पत्थर पर रायल्टी २५) फी गाडीसे घटाकर २) फी गाडी कर दी जावेगी और खुली बिक्रीमें जो रुकावटें हैं वह दूर की जावेंगी लेकिन राज्यके कामोंकी जरूरतोंके वास्ते चंद खास हकूक महफूज रक्खे गये हैं।

तालीम—श्रीजी साहबको हमेशा यह ख्याल रहा है कि तालीमका होना बहुत जरूरी है लेकिन इस रियासतकी कुदरती हालतोंको ध्यानमें रख कर इस बातकी बड़ी जरूरत है कि कारवाई बहुत सोच विचारके साथ की जावे और तरक्की जैसी जल्दी होनी चाहिये थी इसी वजेसे नहीं हुई। इब्तिदाई तालीमके बारेमें चूँकि गांव दूर दूर फैले हुए हैं और बहुतसे ऐसे छोटे हैं और पढ़नेवालोंकी इतनी कम संख्या है कि वहां कोई मदर्सा नहीं खोला जा सकता इस-

लिये यह असम्भव है कि चन्द गांवोंके लिये एक मदर्सा खोला जावे और इस मुआमलेमें एक दिक्कत और भी यह है कि काश्तकार और मवेशी चरानेवाले लोग अपनी जगह छोड़कर दूसरी जगह चले जाया करते हैं, अगर्चे बहुत कुछ पाहिले भी किया गया है मगर श्री जी साहबका पूरा निश्चय है कि अब वक्त आगया है कि और भी कोशिश तालीमके फैलानेमें की जावे इस वास्ते नीचे लिखी तजवीजें मंजूर फर्माई हैं जिनसे न सिर्फ इब्तिदाई तालीम सब दर्जेके लोगोंको लड़कों और लड़कियोंको मिल सकेगी, बल्कि जो लोग कि इस तालीमसे ज्यादा सीखनेका इरादा रखते हैं उनको ऊंचे दरजेकी और सनअत और हिरफ़तकी तालीमके हासिल करनेमें आसानी हो जावेगी।

(क) महकमे तालीमके लिये एक डाइरेक्टरकी खास जगह तीन सालके लिये मंजूर की गई है और मिस्टर हर्बर्ट शेरिंग नायब प्रिंसिपल मेओ कालेज अजमेर पाहेले डाइरेक्टर मुकर्रर हुए हैं।

(ख) मौजूदा दर्बार हायस्कूल अब से डूँगर मेमोरियल कालेज कहलायेगा और कालिजका काम उस वक्तसे शुरू होगा जब ६ विद्यार्थी फर्स्ट ईयर क्लासमें पढ़नेके लिये इकट्ठे हो जायें।

(ग) इस कालिजमें जो कि राजधानीमें हालहीमें बना है पढ़ने-वाले विद्यार्थियोंके लिये एक बड़ा हौस्टेल (विद्यार्थियोंके रहनेका मकान) बनाया जावेगा जिसमें करीब ४००००) रुपयेकी लागत लगेगी।

(घ) वाल्टर नोबिल स्कूलमें वजीफोंकी तादाद बढ़ा दी जावेगी।

(च) वाल्टर नोबिल स्कूलमें बोर्डिङ्ग हाउस बढ़ाया जावेगा और २५०००) लागतमें खर्च होगा।

(छ) राज्यकी तरफसे इमदाद देनेका तरीका जारी किया जावेगा, जिससे रियासतमें खानगी मदर्सोंको रुपया बतौर इमदादके दिया जावेगा और इब्तदाई तालीमके बढ़ानेका मतलब इस तरह पर पूरा किया जावेगा कि बागेका पाठशालामें जबानी हिसाब किताबके साथ हिन्दी भी सिखाई जावेगी।

(ज) देशी आदमियोंको डूँगर मैमोरियल कालेज व दीगर जगह सनअत और हिरफतकी तालीम हासिल करनेको और रियासतके मुख्तलिफ महकमोंमें मुलाजिमतकी काबिलियत पैदा करनेके वास्ते वजीफे और इमदाद देनेका इन्तजाम किया जावेगा।

(झ) ऐसी पढनेवाली स्त्रियां नौकर रक्खी जावेंगी जो लोगोंके घरोंमें फिरकर उन लड़कियोंको शिक्षा देंगी जो बिलकुल पर्देमें रहती हैं ।

शफाखानाजात—राजधानीके शफाखानोंके सिवाय, जहां कि एक बहुत बड़ा सदर सफाखाना है जिसमें नये ढंगका आपरेटिंग थियेटर (चीर फार करनेका कमरा) मय बैक्टोरियोलोजी (कीड़ोंकी परीक्षा करनेकी विधी) और सर्जरी (चीर फाड़की विद्या) के नयेसे नये औजार मौजूद हैं—बाहर भी शफाखाने हैं । इस गरजके लिये कि रियायाको डाक्टरी इमदाद और भी ज्यादा पहुँच सके श्री जी साहबने महरबानी फर्माकर नीचे लिखी हुई चीजें और बढ़ानेकी मंजूरी फर्माई है ।

(क) राजधानीमें एक जनाना शफाखाना जिसमें सब प्रकारके औजार, दवाइयां और जरूरी सामान रक्खा जावेगा ३३०००) रुपयेकी लागतसे बनाया जावेगा ।

(ख) बडे शफाखानेमें ऐक्सरेजका आला नया मँगाया गया है ।

(ग) रासुवालेमें जहां कि आबादी जियादा है और इसीलिये जहां एक नई तहसील भी बनाई जावेगी एक नया शफाखाना खोला जायगा ।

(घ) कसबा गङ्गाशहर जो रोज बरोज तरक्की पर है उसके करीबी हिस्सोंके लिये जो शहरके बाहर हैं, एक नया शफाखाना खोला जावेगा ।

राजवी ।

इस बात पर गौर फरमाकर कि राजवी श्री हजूर साहब बहादुर दाम इकबालहूके करीबी रिश्तेदार हैं और उनका श्रीहजूर साहब बहादुर दाम इकबालहू व रियासत पर इस वजेसे हक है श्री हजूर साहब बहादुर दाम इकबालहूने मेहरबानी फरमा कर ।

(क) ड्योढ़ीवाले राजवीयोंके दोनों खानदानके वास्ते एक रकम रु० २५०००) की मंजूरी फरमाई है।

(ख) आनन्दसिंघोत राजवीयोंके वास्ते—

(१) उनकी लड़कियोंकी शादीके मौके पर परवरिश (नकद) दियेजानेके वास्ते एक शहर मुकर्रर फरमाई है।

(२) बेवाओंके लिये जिनके लड़का न हो या उनके कुनबेमेंसे किसी दूसरे शख्सके लिये जो किसी बीमारीकी वजेसे या किसी और वजेसे आयन्दाके लिये बेकार हो चुका हो, एक सालाना रकम बतौर गुजारेके मंजूर फरमाई है।

(३) उनकी औलादको पढ़ानेके लिये वज़ीफा और मदद दिये जानेका इन्तजाम फरमाया है।

ताजीमी पट्टेदार।

ताजीमी पट्टेदारोंको पहलेहीसे बड़ी इज्जत हासिल है और इसलिये कि वो उस इज्जतको ज्यादे अच्छी तरह महफूज रखसकें। श्रीहुजूर साहब बहादुर दाम इकबालहूने मेहरबानी फरमा कर नीचे लिखी हुई रियायतें उनके वास्ते मंजूर फरमाई हैं।

(क) आयन्दा सिवाय खास सूरतोंके पट्टेदारकी उमर १८ सालकी होजानेपर कोर्ट आफ वार्ड्जकी निगरानी बन्द की जावेगी बजाय २१ सालके कि जो गलत दस्तूर रीजेन्सी कौन्सिलके वक्तसे चला आता है क्योंकि कानूनके मुताबिक १८ सालकी उमर बालिग होनेकी है।

(ख) बाज सूरतोंमें राज्यका पुराना कर्जा सबका सब या उसका कुछ हिस्सा माफ फरमाया है।

(ग) अपने अपने पट्टेके अन्दर शिकार खेलनेकी इजाजत दी गई है सिवाय रियासतके खास शिकार गाहोंके।

(घ) सिवाय खास खास मुकदमोंके राजकी अदालतोंमें जाती हाजरीसे माफी दी गई है।

(ङ) पेश काशीके कायदेमें कुछ रियायत की गई है।

(च) उनके आरामके लिये और जागीरके इन्तजामकी बेहतरीके लिये बाज और सहूलियतें अता की गई हैं ।

फौज ।

रियासतकी फौजकी सामखोरी व सरगरमी और उमदा कारगुजारी के सिलसिलेमें श्रीहजूर साहब बहादुर दाम एकबालहूने नीचे लिखी हुई रियायतें बखशी हैं—

(क) तमाम फौजी बेड़ोंके नान-कमिशन्ड अफसरान व सिपाहियानको उनके रेककी आधे महीनेकी तनख्वाह बतौर इनाम ।

(ख) बाडी गारड और डूंगर लानसर्सके सब सवार व अफसरानकी तनख्वाहमें तरकी और सादुल लाइट इन्फैंटरीके नानकमिशन्ड अफसरान और सिपाहियानकी तनख्वाहमें इजाफा ।

(ग) तोपखानेमें चन्दे फण्डका कायम किया जाना और उसके शुरू करनेके लिये रियासतसे काफी मदद ।

फौजके आराम और बेहतरी इन्तजामके वास्ते,

(क) एक आम फौजी अस्पताल बनाया गया है ।

(ख) एक नई छावनी कायम होकर बेहतर व पक्की बारकें बनानेका काम शुरू किया जावेगा ।

मुलाजमान सिवल ।

मुलाजमान सिवलकी उमदा कारगुजारी व खैरख्वाहीके लिहाजसे श्री हजूर साहब बहादुर दामइकबालहूने बड़ी मेहरबानी फरमा कर मुलाजमतके कायदोंमें जो रुखसत; पेंशन इनाम और एकटिंग एलोंसके बाबत है रियायतें बख्शी हैं और खासकर कम दरजेके मुलाजमानको फायदा पहुँचनेकी गरजसे उनके भत्तेकी शरहमें बहुत कुछ इजादी फरमाई है, इन सबकी तफसील नये सिवल सरविस रेगूलशनमें जो तरमीम हो रहा है दरज की जावेगी ।

हकूक सकूनती.

परदेशियोंको जो रियासतमें रहते हैं इस वक्त बाज बाज दिक्कतें हैं जिनकी वजहसे वे उन हकोंसे महरूम हैं कि जो देशियोंको

हासिल हैं श्री हजूर साहब बहादुर दाम इकबालहूने अब आसान शर्तोंके साथ हकूक सकूनती बखशे हैं ।

काश्तकार.

अलावे उन आम रियायतोंके जिनसे तमाम किस्मके लोगोंको फायदा पहुँचेगा काश्तकारानको माली फायदा पहुँचानेकी गरजसे जिसकी उनको बहुत कुछ जरूरत थी श्री हजूर साहब बहादुरने बहुत कुछ बकाया रकम माफ फरमाई है ।

रिहाई कैदियान.

आखिरमें श्रीहजूर साहब बहादुर दाम इकबालहूने रहम फरमाकर अपने शाही अख्तियार की रूसे हुकम फरमाया है कि मौजूदा तादाद कैदियानमेंसे १५ फी सदी कैदी, जिनमें बाज जन्म कैदी भी शामिल हैं रिहा करदिये जावें ।

बाई कमांड ।

द: बाबू कामताप्रसादजी साहब

होम मेम्बर कौन्सिलर राज श्रीबीकानेर ।

जुबिलीमें पदवी प्रदान ।

श्रीमन्महाराजाधिराज श्रीराजराजेश्वर नरेन्द्रशिरोमणि कर्नल सर गङ्गासिंहजी बहादुरके २५ वर्षतक राज्य करनेके आनन्दमें बीकानेरमें २० से २६ सितम्बरतक (सन् १९१२ ईसवी) जो जुबिली महोत्सव हुआ उसका संक्षिप्त वृत्तान्त दिया जाचुका है । उस अवसर पर महाराज बहादुरने प्रजाकी भलाईके विचारसे जिन जिन सुधारोंकी घोषणा की उनकी सूची भी यथास्थान दीगयी है । यहांपर उन लोगोंकी नामावली दीजातीहै जिन्हें श्रीमन्महाराजने इस सुअवसर पर पदवी, इज्जत और इनाम दिये । नामोंकी सूची देनेके पहले महाराज गङ्गासिंहजी बहादुरके विषयमें इतिहासके उपसंहारके तौर पर दो एक ऐसी बातोंका वर्णन करना आवश्यक जान पड़ता है जिनका उल्लेख यथास्थान नहीं हुआ है ।

यह कहनेकी आवश्यकता नहीं है कि महाराज गङ्गासिंहजी बहादुरने शासनकी बागडोर अपने हाथमें लेनेके पश्चात् राज्यके प्रबन्धमें बहुत कुछ सुधार किया है और करते जाते हैं । बीकानेरमें राजस्व, बन्दोबस्त, चुंगी और आबकारी, म्यूनिसिपालिटी, जंगलात, पबलिकवर्क्स, पुलिस, औषधालय, शिक्षा और न्याय ईत्यादि भिन्न भिन्न विभागोंद्वारा राजकाज उत्तमतासे चल रहा है । दीवानका पद उठाकर अंगरेज गवर्नमेन्टके ढङ्गपर मेम्बरों और सेक्रेटरियोंकी नियुक्ति होनेसे और उनके हाथमें भिन्न भिन्न विभागोंका काम रहनेसे श्रीमानोंको राजकाज सम्हालनेमें पहलेसे बहुत कुछ सुभीता होगया है। श्रीमानोंने राजधानी बीकानेरमें बिजलीकी रोशनी और टेलीफोन भी लगवा दिया है । जलका प्रबन्ध भी अच्छा होगया है। सारांश यह है कि आधुनिक उन्नति और विज्ञानके लाभसे बीकानेर भी बञ्चित नहीं है । बीकानेरमें एक चीफकोर्टकी स्थापना भी होचुकी है ।

श्रीमानोंने जनवरी सन् १९१० ईस्वीमें कलकत्ते जाकर बड़े लाट लार्ड मिण्टो महोदयसे भेंट की और उनके अतिथि हुए थे वहांसे

लौटकर श्रीमान् कपूरथले गये और कपूरथलेके राजेराजगानसे मुलाकात की, दिसम्बर सन् १९०६ में कपूरथलेके महाराजने बीकानेर जाकर श्रीमानोंसे भेंट की थी, यह मुलाकात उसीके बदले की थी। ९ मई सन् १९१० ईस्वीको भारतके सम्राट् सप्तम एडवर्डका स्वर्गवास होनेसे बीकानेर राज्यके सब आफिस और बाजार ३ दिन बंद रहे। २० मई सन् १९१० को स्वर्गीय सम्राट्की लाश दफन करनेके दिन बीकानेरनरेशने एक दरबार करके गंभीर शोक प्रगट किया था। ९ मई सन् १९१० को पञ्चम जार्ज भारतके सम्राट् हुए। सर गङ्गासिंहजी १९०२ ईस्वीसे अबतक युवराज प्रिंस आफ वेल्स वर्तमान सम्राट्के आनरेरी एडीकाङ्ग कहलाते थे; ३ जून सन् १९१० ईस्वीको वह वर्तमान सम्राट्के एडीकाङ्ग हुए और उसी अवसरपर लफटेंट कर्नलसे कर्नल बनाये गये। जून सन् १९१० ईस्वीमें जब लन्दनमें सम्राट् पञ्चम जार्जका तिलकोत्सव हुआ तब महाराज गङ्गासिंहजी उसमें निमंत्रित होकर विलायत पधारे थे। फिर जब १२ दिसम्बर सन् १९११ ईस्वीको दिल्ली दरबार हुआ और सम्राट्ने सम्राज्ञी सहित पधार कर अपने दर्शनसे भारतीय–प्रजाको कृतार्थ किया उस समय महाराज बहादुर निमंत्रित होकर दिल्ली दरबारमें गये थे। श्रीमान् जी. सी. एस. आई. और एल. एल. डी. की उपाधियोंसे भी विभूषित किये गये हैं।

यह एक बड़े मार्केकी बात है कि आगामी २५ नवम्बर १९१२ ई. से जुबिलीका जो दूसरा धूमधामी उत्सव होनेवाला है उसमें भारतके बड़े लाट लार्ड हार्डिंज महोदय भी बीकानेर पधारेंगे।

महाराज गङ्गासिंहजी बहादुरके दो राजकुमार हैं। बड़े महाराज कुमारका नाम श्रीशार्दूलसिंहजी साहब और छोटेका नाम श्रीविजयसिंहजी है। बड़े अर्थात् युवराज कुमार श्रीशार्दूलसिंहजीका जन्म ७ सितम्बर सन् १९०२ ईस्वीको और छोटे कुमार श्रीविजयसिंहजीका जन्म २९ मार्च सन् १९०९ ईस्वीको हुआ।

राजकीय सूचना।

राज सिंहासनपर बिराजमान होनेके पचीस वर्ष पूरे होनेके

महोत्सव पर श्री जी साहबने बड़ी मेहरबानी फर्मा कर नीचे लिखे बमूजिब बड़ी पदवियां, इज्जतें और इनाम बखशे हैं—

बहादुरका खिताब बतौर जाती इज्जतके महाराज श्री भैरूंसिंह-जी साहब सी. एस. आई सीनियर मेम्बर कौंसिल ।

राजाका खिताब बतौर जाती इज्जतके—राव बहादुर ठाकुर हरीसिंह महाजन पबलिक वर्कस मेम्बर कौंसिल ।

ठाकुर जीवराजसिंह रिड़ी मेम्बर कौंसिलको ।

रावका खिताब बतौर जाती इज्जतके—ठाकुर कानसिंह भुकरका ।

साहका खिताब बतौर जाती इज्जतके-खजांची मेघराज, खजांची राज श्री बीकानेर ।

गढ़के अन्दर सवार होकर आने जानेकी इजाजत बतौर जाति इज्जतके—

राव बहादुर राजा हरीसिंह महाजन, पबलिक वर्क्स मेम्बर कौंसिलको हजूरकी पैड़ियों तक । लेफटिनेन्ट कर्नल ठाकुर हरीसिंह सत्तासर मिलिटरी मेम्बर कौंसिलको चोगान तक । लेफटिनेन्ट कुँवर गुलाबसिंह बोघेरा, ए डी. सी. असिस्टेंट प्राइवेट सेक्रेटरीको चौगान तक ।

जागीर ।

कुँवर गुलाबसिंह बोघेरा ए.डी.सी. असिस्टेन्ट प्राइवेट सेक्रेटरी । ठाकुर भूरसिंह रायसर नाजिम सूरतगढ़ ।

पहलेसे जागीर है उसमें बेशी—

ठाकुर सादूलसिंह बगसेउ सेक्रेटरी रेवन्यू व फाइनानशल डिपार्टमेन्ट । मेजर ठाकुर गोपसिंह मालासर ए. डी. सी. कमांडेन्ट डूङ्गर लानसर्स । कैपटेन ठाकुर बखतावरसिंह समन्दसर ए. डी. सी. कमांडेण्ट बाडी गार्ड । लेफटिनेन्ट कुँवर रंजीतसिंह गाडवाला ए. डी. सी. ।

ताजीम बतौर खान्दानी इज्जतके—

लेफटिनेन्ट कुँवर गुलाबसिंह बोघेरा, ए. डी. सी. असिस्टेन्ट प्राइवेट सेक्रेटरी । ठाकुर भूरसिंह रायसर नाजिम सूरतगढ़ ।

ताजीम बतौर जाती इज्जतके—

राय बहादुर बाबू सांवलदास, रेवन्यू मेम्बर कौंसिल। बाबू कामताप्रसाद, होम मेम्बर कौंसिल। मेजर कुँवर भैरूंसिंह रिडी, मुसाहिब खासगी, धाभाई मूलदास। धाभाई सालिगराम।

नीचे लिखे ताजीमी पट्टेदारोंको दर्जे बन्दीमें तरक्की बतौर खानदानी इज्जतके--

दूसरे दर्जेसे अव्वल दर्जेमें-राजा जीवराजसिंह रिडी। राव जीवराजसिंह, पूगल।

तीसरे दर्जेसे दूसरे दर्जेमें-ठाकुर नवलसिंह मगरासर। ठाकुर सुलतानसिंह सावन्तसर। ठाकुर प्रतापसिंह बीकमकोर।

चौथे दर्जेसे तीसरे दर्जेमें ठाकुर मेघसिंह लोहसना। ठाकुर रघुनाथसिंहनोखा। ठाकुर सादूलसिंह बगसेड। ठाकुर गोपसिंह मालासर। ठाकुर बखतावरसिंह समंदसर। कुँवर पृथ्वीराजसिंह। कुँवर रंजीतसिंह गाडवाला। कुँवर बनेसिंह मोटासर। कुँवर जीवराजसिंह सेरूना।

नगारा निशानकी बड़ी इज्जत-

ठाकुर सुलतानसिंह सावन्तसर। ठाकुर परतापसिंह बीकमकोर।

पगमें सोनेका कड़ा बतौर खानदानी इज्जतके नीचे लिखे ताजीमी सरदारोंको-

ठाकुर परतापसिंह बीकमकोर। ठाकुर सादूलसिंह बगसेड। ठाकुर गोपसिंह मालासर। ठाकुर बखतावरसिंह, समंदसर। कुँवर पृथ्वीराजसिंह। कुँवर रंजीतसिंह गाडवाला। कुँवर बनेसिंह, मोटासर। कुँवर जीवराजसिंह, सेरूना। कुँवर गुलाबसिंह, बोघेरा ठाकुर भूरसिंह, रायसर।

पगमें सोनेका कड़ा बतौर जाती इज्जतके नीचे लिखे अफसरोंको-

राय बहादुर बाबू सांवलदास रेवेन्यू मेम्बर कौंसिल। बाबू कामताप्रसाद होममेम्बर कौंसिल। मुंशी कृपाशंकर, चीफ जज, चीफ कोर्ट।

सोनेका कड़ा और लंगर बतौर खानदानी इज्जतके-भैरूंदान भंडसाली सरदारशहरको।

खासरुक्का—मुंशी कृपाशंकर—चीफ जज, चीफ कोर्ट । राय बहादुर सेठ सर कस्तूरचन्द डागा, के. सी. आई. ई. दीवान बहादुरको। सेठ चांदमल ढड्ढा ।

सिरोपाव यानी खिलअत नीचे लिखे अफसरान व अशखासको-बाबू निहालसिंह, सेकन्ड जज, चीफ कोर्ट । मुन्शी फतेहसिंह, थर्ड जज, चीफ कोर्ट । बाबू शिवगुलाम, इन्सपेक्टर जनरल जकात व आबकारी । मुन्शी सईदकअली, इन्सपेक्टर जनरल पुलिस । मुंशी सीताराम नाजिम रेनी। मेहता नेमीचंद, अफसर बड़ा कारखाना। व्यास महेशदास, दरबारी । फौजदार अमरसिंह, जूरी । परिहार मेहताबसिंह, हजूरी । विट्ठू सुखदान, हजूरी । पाँड़े हीरालाल हजूरी । हंसराज वरड़िया, बीकानेर । शम्भूराम कामदार माजी श्री जाड़ेचाजी साहिब । सरदारमल हीरावत, बीकानेर ।

कैफियत लिखनेकी इज्जत नीचे लिखे साहूकारोंको—

भैरूंदान भड़साली, सरदारशहर । रामलाल किशनलाल पचीसिया, नोहर।

डुलीचन्द गजानन्द नेवर, नोहर ।

सनद कारगुजारी नीचे लिखे अहलकारानको—

पण्डित बाबूराम, नायब अफसर महकमा हिसाब । बाबू नौनिहालसिंह, सेक्रेटरी कौंसिल । पण्डित कृष्णशंकर तिवारी, हेड मास्टर-डूंगर मेमोरियल कालेज । मेहता मेहरचन्द, तहसीलदार हनुमानगढ़ । पण्डित बजरंगलाल, कामदार पट्टा महाराज श्री बिजैसिंहजी साहब बहादुर । ऐसिस्टेन्ट सरजन बाबू हरखचन्द, स्टेट मेडीकल डिपार्टमेंट । सीनियर—सब—ऐसिस्टेन्ट सरजनखान साहिब मिर्जा इनायतहुसेन स्टेट मेडीकल डिपार्टमेन्ट । सीनियर सब ऐसिस्टेन्ट सर्जन हरिपद मुकरजी, स्टेट मेडीकल डिपार्टमेंट । सब ऐसिस्टेन्ट सरजन वृन्दावन स्टेट मेडीकल डिपार्टमेंट । मुन्शी हृषीकेश, मोतमिद, मेओ कालेज अजमेर । बाबू शिवनाथसिंह सुपरिंटेन्डेन्ट दफ्तर मुसाहिब खासगी ।

कोचर शिवबख्श, ट्रांसलेटर, महकमा खास । पंडित छतरसिंह, हेड क्लार्क, रेवेन्यू डिपार्टमेंट, महकमा खास । बाबू राधारमणदास, सुपरिंटेन्डेन्ट टाइपिंग डिपार्टमेंट, महकमा खास । बाबू चन्दनसिंह, रजिस्ट्रार, चीफकोर्ट । बाबू कैलाशसिंह, ट्राफिक इन्स्पेक्टर, बीकानेर भटिन्डा सेकशन जे. बी. रेलवे । पंडित शिवचरणदास, स्टेशन मास्टर बीकानेर ।

सोनेकी छड़ीकी इज्जत–भैरूंदान भड़साली, सरदार शहर ।

चांदीकी छड़ीकी इज्जत–रामलाल किशनलाल पचीसिया, नोहर ।

चांदीकी चपरास–भैरूंदान भंडसाली, सरदारशहर । रामलाल किशनलाल पचीसिया, नोहर । दूलीचन्द गजानन्द नेवर, नोहर ।

कड़ा व पागका इनाम नीचे लिखे चौधरियोंको–गंगाजल, चौधरी सेखसर, निजामत बीकानेर । रामारिख, चौधरी सेखसर, निजामत बीकानेर । गियाना जाट, चौधरी जसरासर, निजामत बीकानेर । सुलतान, चौधरी ढांबा निजामत सूरतगढ़ चौधरी कोहला, निजामत सूरतगढ़ । रावत विशनोई चौधरी, सरदारपुरा (बीकानेर) निजामत सूरतगढ़ । भानखां, चौधरी मटीली, निजामत सूरतगढ़ । खेता जाट, चौधरी डोबी, निजामत रेनी । मंगनी जाट, चौधरी किरारा छोटा निजामत रेनी । नन्दराम, चौधरी फेफाना, निजामत रेनी । चांदमल, चौधरी छापर, निजामत सुजानगढ़ । जसराम जाट, चौधरी डूंगरगढ़, निजामत सुजानगढ़ ।

बाई कमांड

बाबू कामताप्रसाद ।

होम मेम्बर आफ कौंसिल राज श्रीबीकानेर ।

श्रीहुजूर रावबहादुर दामइकबालहूने बड़ी मेहर्बानीसे हुक्म फरमाया है कि आयन्दासे घोड़ोंका रिसाला श्री "डूंगर लानसर्स" के नामसे पुकारा जाय ताकि इस तौरपर उसको वैकुंठबासी श्री महाराजा डूंगरसिंहजी साहब बहादुरके मवाजिज नामसे नामजद होनेकी इज्जत हासिल हो ।

श्री जी साहबने बड़ी मेहरबानी फरमाकर रियासतकी फौजमें नीचे लिखे मूजिब ओहदे और तरक्कियां मंजूर फरमाई हैं–

श्रीजी साहबके परसनल ए. डी. कांग होंगे ।

महाराज श्रीभैरूसिंहजी बहादुर सी. एस. आई. जिनको रियासतकी फौजमें लेफ्टिनेन्ट कर्नलका एजाजी ओहदा,अता किया गया है और जिसका ताल्लुक श्रीसादूल लाइट इन्फेन्टरीसे रहेगा ।

महाराज श्रीजैगलसिंहजी साहब जिनको रियासतकी फौजमें मेजरका एजाजी ओहदा अता किया गया है और जिनका ताल्लुक श्रीगंगा रिसालेसे रहेगा ।

तरक्कियां—कप्तान ठाकुर सादूलसिंह बगसेउ सेक्रेटरी रेवेन्यू व फिनानशल डिपार्टमेन्ट आनरेरी ए. डी. सी. को आनरेरी मेजर मुकर्रर कियागया ।

मेजर दीनदयाल, कमान्डेन्ट सादूल लाइट इन्फेन्टरी, आनरेरी ए. डी. सी. को. लेफ्टिनेन्ट कर्नलका ओहदा दिया गया ।

कप्तान ठाकुर बखतावरसिंह समन्दसर, कमान्डेन्ट बोडी गार्ड ए. डी. सी. को मेजरका ओहदा दिया गया ।

नीचे लिखे अफसरानको कप्तानका ओहदा दिया गया—

सानी हमीरसिंह, रिसालादार मेजर, डूंगर लानसर्स । ऐसिस्टेन्ट कमाण्डेन्ट गुरबख्शसिंह सादूल लाइट इन्फेन्टरी ।ठाकुर किशनसिंह, आई.ओ. ऐम. गङ्गारिसाला। ठाकुर शिवनाथसिंह, एड्जटेन्ट सादूल लाइट इन्फेन्टरी । लेफ्टिनेन्ट कुँवर रत्नजीतसिंह, गाडवाला ए. डी. सी. । लेफ्टिनेन्ट कुँवर बनेसिंह, मोटासर ए. डी. सी. । लेफ्टिनेन्ट कुँवर गुलाबसिंह, बोघेरा. ए. डी. सी. । ठाकुर. मानसिंह, सादूल लाइट इन्फैन्टरी ।

कप्तान ठाकुर मानसिंह सादूल लाइट इन्फेन्टरी श्रीजीसाहबके ए. डी. सी. मुकर्रर दिये गये ।

नीचे लिखे अफसरान श्रीजीसाहबके एक्स्ट्रा ए. डी. सी. मुकर्रर किये गये । कप्तान सानी हमीरसिंह, डूँगर लानसर्स । कप्तान गुरबख्शसिंह, सादूल लाइट इन्फेन्टरी । कप्तान ठाकुर किशनसिंह आई ओ. एम. गङ्गा रिसाला । कप्तान ठाकुर शिवनाथसिंह, सादूल लाइट इन्फेन्टरी ।

बाई कमांड,

लेफ्टिनेन्ट कर्नल ठाकुर हरीसिंहजी साहब,

मिलिटरी मेम्बर कौंसिल राज श्रीबीकानेर २४ सितम्बर १९१२.

श्रीः ।

परिशिष्ट ।

बीकानेर राज्यका भूगोल ।

(भूभाग.)

राजपूतानेकी दूसरे दरजेकी रियासतोंमें बीकानेरका राज्य सबसे बड़ा है । यह राज्य २७. १२ और ३०. १२ उत्तर अक्षांश और ७२. १२ और ७५. ४१ मध्य देशान्तर रेखाओंके बीचमें स्थित है । इसका कुल विस्तार २३३११ वर्गमील है । बीकानेर राज्यकी उत्तरीय और पश्चिमीय सीमा पर भावलपुरके जिले हैं, पश्चिमदक्षिणमें जैसलमेर राज्य, दक्षिणमें मारवाड़राज्य और जोधपुरकी सीमा. दक्षिण पूर्व्वमें जयपूर राज्यान्तर्गत शेखावाटीके गांव, पूर्व्वमें पञ्जाब प्रान्तके लाहौर और हिसारके जिले और पूर्व्वोत्तरमें फीरोजपुरके जिलोंकी भूमिका विस्तार है । बीकानेर राज्यकी भूमिका दक्षिण और पूर्व्वभाग एकदम रेतीला मैदान है जोकि बागर या बागड़ प्रदेशके नामसे प्रसिद्ध है । परन्तु पश्चिमोत्तर और उत्तर प्रान्तका अधिकांश हिन्दुस्तानकी प्रसिद्ध मरुभूमिके मध्य हृदयका एक भाग है । सिर्फ पूर्व्वोत्तर कोनेकी किञ्चित् भूमि यथेष्टरूपसे उपजाऊ है— बीकानेर राज्यकी समस्त भूमि रेतकी ऐसी पहाडियोंसे ढकी हुई है जो कि बीससे लेकर सौ फुटतक ऊंची है इन रेतीली पहाड़ियोंके ढालुआ बाजुओं पर जो प्रखर वायुके कारण झुर्रियों एवं धारियोंकी तरह शिकने पड़ जाती हैं वे दूरसे समुद्र किनारेके दृश्यकी भ्रांति प्रगट करती हैं । जहां पर जयपुर जोधपुर और बीकानेर राज्योंकी सीमाएँ परस्पर मिलती हैं वहां पर कुछ पथरीली पहाड़ियाँ भी हैं । सबसे ऊंची गोपालपुराकी पहाड़ी है, जो जमीनकी सत-

हसे छःसौ फुट ऊंची है। साधारणतया बीकानेर राज्यकी भूमि रूखी और अनुपजाऊ है।

सन् १८०८ में मिस्टर एलफिन्स्टन जो इसी राज्यकी सीमामें होकर काबुलको गये थे, लिखते हैं कि राजधानीसे थोड़ी ही दूर पर सारा देश अरबके उजाड़ जंगलकी भांति भयावना है, किन्तु बरसातके दिनोंमें थोड़ासा जल पड़ जाने पर यही भूमि अत्यन्त मनोहर होजाती है, सर्वत्र सुन्दर छोटी २ पर पुष्टिकर और स्वादिष्ट घास उग आनेसे यह भूमि एक उत्तम चरागाह बनजाती है।

जल और जलाशय।

बीकानेर प्रान्तमें जल एवं जलाशयोंकी बड़ी ही कमी है। पूर्वोत्तर सीमामें घग्घर नदी है, जो सौ वर्ष पहले सिंधमें जाकर मिलती थी किन्तु आजकल तो बिलकुल सूखी पड़ी रहती है। सिर्फ बरसातके दिनोंमें पानी रहता है सो भी हनुमानगढ़के कोई दो मील पाश्चिममें बहकर रेतमें छिप जाती है। पूर्वमें कातली नदी है, यह नदी असलमें जयपुर राज्यकी सीमामें बहती है पर जब वर्षा अच्छी होती है तब बीकानेर राज्यकी राजगढ़ तहसीलकी दक्षिण भूमिमें कुछ दूरतक बहती है। अंग्रेज गवर्नमेन्ट और बीकानेर राज्य दोनोंके संयुक्त व्ययसे पञ्जाबसे एक नहर लानेका प्रयत्न किया गया था परन्तु वह निष्फल हुआ। घग्घरके पानीसे सिर्फ ८ मील तककी जमीन दो नहरोंके द्वारा सींची जाती है; परन्तु नहरोंकी तरक्कीका अब भी उद्योग हो रहा है।

बीकानेर राज्यमें दो नमककी झीलें हैं एक दक्षिणमें सुजानगढ़के पास और दूसरी राजधानीसे ५१ मील पूर्वोत्तरमें लूणकरण सरके पास। इन दोनों झीलोंसे अच्छा नमक पैदा नहीं होता। यह नमक विशेषकर पशुओंके खाने योग्य होता है प्रायः मरु भूमिके गरीबलोग भी इसे खाते हैं। इनके सिवाय दो तीन ताल भी हैं जिन्हें इस देशकी स्थितिके अनुसार छोटी २ झीलें कहना चाहिये। ये तीनों बीकानेरके दक्षिण पश्चिममें हैं, एक कोड़मदेसर, दूसरा

गजनेर और तीसरा कौलायतजीका ताल। इन तीनों तालोंका विशेष वर्णन प्रसिद्ध जगहोंके बयानमें लिखा जायगा। इसी तरह यहाँ पर कुओंकी भी बड़ी कमी है। राज्यभरमें सिर्फ राजधानी बीकानेर एक ऐसा स्थान है जहां पर आठ या नौ बड़े २ कुएँ हैं। शेष गांव पीछे एक या दो कुएँ हैं अथवा कहीं २ दो दो तीन तीन गांवके बीचमें एक ही कुआँ है। ये कुएँ भी दो डेढ़सौ फुटसे कम गहरे नहीं होते। उनमें बाज कुएँ खारे पानीके निकल जाते हैं और किसी २ का पानी लगनेवाला होता है; यानी पशु भी अगर उस पानीको पीजाय तो पेट फूलकर या दम घुटकर उसी वक्त मरजाय। धनी लोगोंके मकानोंमें अकसर कुंड होते हैं ये कुंड भी ३० या ४० हाथ तक गहरे होते हैं। इनमें बरसातका पानी भरा रहता है वह भी एकसे दूसरी बरसात तक मुशकिलसे चलता है। यदि बरसात कुछ देरसे हुई तो लोगोंको पानीका बड़ा कष्ट होता है। दैवयोगसे बरसात भी यहांकी बड़ी विलक्षण होती है। बारिशकी औसत १२ इंच है, कभी कभी सिर्फ छः इंच ही बारिश होती है और इस मरुभूमिके लिये यही काफी होती है। सिर्फ दक्षिण पूर्व्व या पूर्व्वमें १४ इंच बारिशका औसत माना जाता है। अधिकांश वर्षा यहां श्रावण और भादोंमें होती है, सो भी एक एक झला आया और गया। दो चार घंटे कभी थँमकर बारिश नहीं होती यदि ऐसा हो तो देशका देश बैठ जाय। यह अवस्था हम मध्य मरुभूमिकी वर्णन करते हैं, उत्तर प्रान्त हनुमानगढ़के पासकी बारिश पंजाबसे मिलती जुलती है।

जल वायु।

बीकानेर प्रान्तका जल वायु यद्यपि बहुत रूखा है और गरमीके मौसिममें गरमी और सरदीके मौसिममें सरदीकी बड़ी प्रखरता होती है किन्तु फिर भी यह देश स्वास्थ्यकर है। गरमीके दिनोंमें मई, जून और आधे जुला-ई तक भी बड़े जोरसे लू चलती है जिसमें सैकडों मनुष्य मरजाते हैं और सूर्य्यकी प्रखरताके कारण लोग दोपहरके समय घरोंसे बाहर

निकलनेकी हिंमत नहीं करते । ठीक इसके विरुद्ध जाड़के दिनोंमें इतनी सरदी पड़ती है कि दिन रात कपड़े उतारनेकी नौबत नहीं आती । कुहरा छाया रहता है, आकाश मेघाच्छन्न रहता है और वर्षा भी होती है । सिर्फ वर्षाकालमें यहाँकी भूमि बड़ी आनन्दमय होती है दिनको साधारण गरमी पड़ती है और रात्रिको सरदी पड़ती है—यथा—

स्यालै तौ खाटू भलै ऊनाले अजमेर ।
... ... श्रावण बीकानेर ॥

बनस्पति ।

बीकानेर राज्यमें पहाड़ी प्रान्तोंकेसे वने जंगल एक भी नहीं । वरन यों कहना चाहिये कि पानीकी कमीके कारण यहाँके भूविस्तारके हिसाबसे वृक्ष वेलि बहुत कम हैं । ज्यादा तर यहाँ खेजड़ेके दरख्त होते हैं । इस वृक्षकी फली और पत्ते पशुओंके खानेके काममें आते हैं । अकालके समय लोग इसकी छालको चूर्ण करके आटेके साथ मिलाकर खाते हैं । यहां पर खैर जाल और बबूरके दरख्त भी होते हैं । सुजानगढ़ तहसीलके पास कुछ सीसमके दरख्त भी हैं. और खास राजधानी बीकानेरमें जो नीम और गोंदाके पेड़ हैं वे खास तौरसे लगवाये हुए हैं । कोगका पौधा यहां बड़े काममें आता है । लोग उससे घरोंके छप्पर बनाते हैं और इसकी बारीक शाखाओंको अकालके समय खाते भी हैं । इससे मकानोंकी दीवारें भी बनाते हैं । छोटी जंगली बेरी और आकके जंगल यहां कोसोंतक नजर आते हैं। सबसे मूल्यवान यहां सज्जी और लाजके पौधे हैं जिनसे खारी या सज्जी बनती है । इसके सिवाय और भी कई किस्मके घास फूस होते हैं जो जानवरोंके खानेके काममें आते हैं । घासोंमें यहां भुरट सबसे प्रसिद्ध और मुख्य है । इस घासका बीज भी लोगोंके खानेके काममें आता है । इसी घासकी उत्पत्तिकी बहुतायतसे बीकानेरको भुरट—देश भी कहते हैं । यहांके बागीचोंमें भी ज्यादातर कनेर और मैनारके वृक्ष देखनेमें आते हैं क्योंकि ये पौधे थोड़ेसे जलसे जीवित रह सकते हैं ।

पशु पक्षी और जीवजन्तु।

जहां जल नहीं वहां जंगली जीव जंतुओंकी गुजर कैसे होसकती है? यही कारण है कि इस राज्यके पूर्वोत्तर प्रान्तको छोड़कर सर्वत्र सुनसान मैदान है। हनुमानगढ़के आस पास तो सुअर हिरन भेड़िया चीते आदि वे सब जानवर पाये जाते हैं जो हिंदुस्तानके अन्यान्य प्रान्तोंमें बहुतायतसे हैं, पर शेष भूमि पर लोमड़ी सेई गोह और चूहोंके सिवाय और कोई जानवर नजर नहीं आते। राजधानी खास और गजनेरमें जो सुअर और हिरन देखे जाते हैं वे पालतू हैं। चिड़ियोंमें यहां आमतौरसे कबूतर चील कौवे और गौरैया है इनके सिवाय गजनेरके तालोंमें करूल और गेगा वगैरह शिकारी चिड़ियाँ भी जाड़ेके दिनोंमें रहती हैं। पानीके आश्रयसे यहाँ भटतीतर लवा और बटेर भी देखनेमें आते हैं। सर्प कम हैं पर बिच्छू यहाँ बहुत होते हैं और जहरीले भी बड़े होते हैं। यहां सर्पकी किस्मका एक कीड़ा होता है जिसे येंणा कहते हैं। यह कीट सोते हुए मनुष्य या पशुके मुँह पर मुँह रखकर उसकी स्वाँसको पीता है जिससे पशु या मनुष्य फौरन मर जाता है। मक्खी इस देशमें बहुत होती हैं पर चीलर पिस्सू और खटमल कम होते हैं। हनुमानगढ़ और सुजानगढ़के आस पास वर्षाके दिनोंमें डंकी नामका एक कीडा बढ़ता है इसके सबबसे लोगोंको बड़ा दुःख होता है। इसके काटनेसें सारा शरीर सूज जाता है और खाज करता है।

पालतू पशुओंमें यहां घोड़े गाय भैंस भेड़ बकरी ऊंट गदहा कुत्ता बिल्ली आदि साधारण सब पशु पाये जाते हैं। भैंस कम और गाय बकरी और भेड़ अधिक हैं। ऊंट तो यहाँका सर्वस्व है। यहां ऊँटसे सब काम लिये जाते हैं। ऊंट यहांके होते भी बड़े अच्छे हैं। यहांके ऊंट चलनेमें बडे हलके और तेज सर्वत्र प्रसिद्ध है।

छप्पय।

ऊंट सवारी देय, ऊंट पानी भर लावे।
लकड़ी ढोवै ऊंट, ऊंट गाड़ी लै धावै॥

खेती जोतै ऊंट, ऊंट पत्थर भी ढोव ।
जो न होय इक ऊंट, लोग कर्मोंको रोवै ॥
कवि कन्ह धन्य तुव साहबी, जैसे को तैसो मिले ।
विन जट्ट रु उट्ट सुरट्टमें, कहो काम कैसे चले ॥

खेती और उपज।

कहा जाचुका है कि बीकानेर राज्यकी भूमि प्रायः रेतकी पहाड़ियोंसे परिपूर्ण है सिर्फ उत्तर प्रान्तमें पंजाबके जिलोंसे मिलती हुई भूमि इससे कुछ भिन्न है। वहांकी मिट्टी चिकनी काली और उपजाऊ है जिसमें खरीफ और रबी दोनों फसलें पैदा होती हैं। पर रेतीली भूमिमें सिर्फ खरीफकी फसल होती है। इस भूमिको जोतना बड़ा सरल है। एक आदमी दिन भरमें करीब ४० एकड़ भूमि जोत सकता है। जुताईके बाद बीज छिटक देते हैं और वर्षाके अनुकूल फसल घरमें आजाती है। इस भूमिमें मुख्यकर ज्वार (छोटी बड़ी) बाजरा मोठ और तिल उपजते हैं, थोड़ी बहुत मूँग भी होजाती है। परन्तु हनुमानगढ़की तहसीलमें दोनों फसलें होती हैं और गेंहू चना जौ कपास तिल सरसों आदि सब जिनसें पैदा होती हैं। फलोंमें यहां खरबूजा (मतीरा) और ककड़ी होती है, ग्वारकी फली जो कोमल होती हैं शाकके काममें आती हैं। सूखी फली पशुओंको खिलाते हैं। खास तौरसे मूली भी जहाँ तहाँ होती है। बाकी सब शाक पात बाहरसे आते हैं।

खनिज पदार्थ ।

यहां सबसे प्रसिद्ध पलानेकी कोयलेकी खान है जो राजधानी बीकानेरसे कोई २० मील दक्षिणको है। इसका कोयला यद्यपि बहुत अच्छा नहीं है तो भी इसमें बङ्गालकी खानोंका कोयला मिलानेसे रेलका और राज्यके कारखानोंका काम बखूबी चल जाता है। लूणकरणसर और छापरमें दो खान नमक की हैं जिनका जिकर झीलोंके वर्णनमें हो चुका है। लूणकरणकी खानें तो अब एक तरहसे खतम हो चुकीं पर छापरकी खान जारी है। स्मरण

रहे कि ये दोनों खानें राज्यसे गवर्नमेण्टने इस्तमरारी ठेके पर अपने कब्जेमें लेली हैं। बीकानेरसे कोई ४२ मील पूर्वोत्तर दलमेरामें लाल पत्थर भी निकलता है। लालगढ़के महल और सब मकान इसी पत्थरसे बने हुए हैं। सबसे प्रसिद्ध वस्तु यहां मिट्टीकी खान है। मुलतानी मट्टी जो देशभरमें प्रसिद्ध है इसी राज्यकी सीमामें निकलती है। अठारहवीं शताब्दीके बीचो बीच बीदासरके पास ताँबेकी खानका भी पता लगा था पर उससे लागत भी पूरी न पड़नेके कारण वह बन्द करदी गयी।

व्यापार और कारीगरी।

आजसे सौ वर्षके पहले बीकानेर सिंधु और मध्य हिन्दके परस्पर व्यापारका मुख्य मार्ग था और इसी कारण यहांकी दस्तकारीकी चीजें दूर दूर तक प्रसिद्ध थीं। इस समय इस राज्यको उक्त व्यापारसे तो कोई लाभ नहीं होता और यहांकी दस्तकारीकी वस्तुओंकी भी उतनी खपत नहीं है पर फिर भी दस्तकारी, हाथीदांतकी चूड़ी ऊनी लोई और ऊँटके चमड़की कुप्पियोंके लिये अब भी यह स्थान प्रसिद्ध है। आजकल यहां ऊनी कालीन गलीचे और सूती दरी वगैरह भी अच्छी तय्यार होती हैं। यहाँ नक्काशीका काम भी बड़ा बारीक होता है और पत्थरके शिल्पी लोग भी यहांके बड़े चतुर हैं। उनकी वर्तमान कारीगरीका नमूना लालगढ़का महल प्रत्यक्ष है। यहांके उत्पन्न हुए पदार्थोंमें खार, सज्जी, मुलतानी मिट्टी और कम्मल लोई तथा खालिस ऊन दूसरे दूसरे मुल्कोंमें जाकर बिकते हैं। मोठ बाजरी और घीके सिवाय मनुष्यके निर्वाहके लिये यावत् पदार्थ बाहरसे यहां आते हैं, जैसे रुई, सन्, अफीम, तमाखू, शक्कर, गुड़, तेल इत्यादि।

रेलवे।

बीकानेर राज्यमें सिर्फ एक रेलवे लाइन है, जिसे जोधपुर बीकानेर रेलवे कहते हैं। यह रेल जोधपुरसे बीकानेर होती हुई जिला हिसारके पास पंजाबकी रेलसे जा मिलती है।

बीकानेर राज्यान्तर्गत रेलवे लाइनकी लम्बाई मय पलाना साइडिंगके २४५ मील है । यह लाइन सन् १८९८-१९०१ में दरबारके निज खर्चसे बनी थी । इसके द्वारा रेगिस्तानमें आने जाने वाले मुसाफिरों और व्यापारियोंको बड़ा लाभ पहुँचा है और राज्यको भी प्रतिवर्ष करीब आठ लाखकी आय होती है । बीकानेरमें सन् १९०४ से सरकारी डाकघर और तारघर भी है । पर यहां डाँक द्वारा वी. पी, से आये हुए सब सामान पर एक आना रुपयाके हिसाबसे चुंगी लगती है, सिर्फ किताबों पर नहीं लगती ।

जनसंख्या और जनसमूह ।

बीकानेर राज्यकी सीमामें कुल गांव और कसबोंकी संख्या २११० है । सन् १८८१ की मनुष्यगणनाके अनुसार यहां ८३१९५५ मनुष्योंकी आबादी थी, किन्तु बार बार अकाल अवर्षण और बीमारियोंके कारण सन् १९०१ की मनुष्य गणनामें केवल ५८४६२७ मनुष्योंकी आबादी पाई गई थी । उक्त जनसंख्यामें सब कौमें हैं, जिनमें ८४ फी सैंकडेके हिसाबसे ४९३५३४ हिन्दू, ग्यारहफी सैंकडेके हिसाबसे ६६०५० मुसलमान, चार फी सैंकडेके हिसाबसे २३४०३ जैन और १८३८ अलख गिरी हैं । हिन्दू मुसलमान और जैन मतके विषयमें तो विशेष कहना व्यर्थ है क्योंकि इनके भेद भावसे सर्वसाधारण परिचित हैं, सिर्फ अलख गिरी, इस प्रान्तका एक नवीन मत है । इस मतका अधिष्ठाता लालगिरि नामका एक चमार था, जिसे एक संन्यासीने धोखेसे अपना शिष्य बना लिया था; परंतु जात जानकर पीछे उसे निकाल दिया । निदान उसने अपना नवीन मत चलाया । अलख मतके माननेवाले केवल अलख अविनाशी ईश्वरको मानते हैं अलख ही उनका जप है और यही उनका ध्यान है । दान, धर्म और परापेकार करना अहिंसा और मांस न खाना, हार्दिक पवित्रता और आत्मबोध इत्यादि यही इस मतके मुख्य उद्देश हैं । अलख मतवाले अधिकांश साधु ही होते हैं और वे संन्यासियोंकी भांति गेरुआ वस्त्र धारण करते हैं । यद्यपि यह मत जैन मतकी शाखा अनुमान किया जाता है परंतु असलमें ऐसा नहीं है । प्रायः गृहस्थ भी अलखमतको

अङ्गीकार करते हैं। लालगिरिके जीवित समयमें बीकानेरके राजाओं पर भी इस मतका प्रभाव पड़ चला था परंतु थोड़ेही दिनके वाद इस मतसे घृणा हो गई यहांतक कि तमाम अलखमतवाले राज्यसे निकाल बाहर कर दिये गये थे।

बीकानेर राज्यमें जाटोंकी आबादी सबसे ज्यादा है। कुल आबादीमें २२ फी सैकड़ेके हिसाबसे राज्यमें १३३००० जाट बसते हैं। यही इस देशके भूमिया हैं और अब भी उन्हें भूमियापनेके हक प्राप्त हैं जैसा कि इतिहासमें लिखा गया है; अर्थात् नवीन राजाके गद्दी नशीन होने पर जाट लोग ही पहले पहल टीका करते हैं ये लोग किसानी का पेशा करते हैं। इनसे दूसरा दरजा महाजन या बनियोंका है जिनकी कुल संख्या ५६००० है,इनमें तीन शाखाएँ हैं ओसवाल, महेश्वरी और अग्रवाल। दो पहले अधिकांश जैनमतावलंबी हैं। महाजन लोग व्यापारसे अपनी जीविका निर्वाह करते हैं। राज्यके दफतरोंमें भी प्रायः ज्यादातर महाजनोंकी ही भरती है।बहुतेरे महाजन तो ऐसे धनी और व्यापारकुशल हैं कि उनकी हिन्दुस्तानके बड़े २ शहरोंमें कोठियां था दुकानें मौजूद हैं।ब्राह्मणोंकी संख्या ६४००० है। इनकी दो किस्मे हैं एक छन्याति और दूसरे पुष्करणा। पुष्करणा ब्राह्मणोंके यहां कुदालकी पूजा होती है। राठौडोंके राजपुरोहित गौड़ हैं। यह पुरोहित छन्यातिसे अलहदा रहते हैं। पुरोहितोंको ज्यादातर राज्यसे जीविकाके लिये जमीन मिली हुई है। शेष लोग धर्मार्थ काम करते या नौकरी या मिहनत मजदूरीसे पेट भरते हैं। बीकानेर राज्यमें चारणोंकी संख्या अन्य सब राज्योंसे विशेष है। ये लोग भाटोंकी किस्मसे हैं। भाटोंकी तरह कवित्त बनाना या राजवंशका विरद बखान करना ही इनका मुख्य पेशा है। ये लोग अपनेको भाटोंसे उच्च मानते हैं और अपनी उत्पत्ति शिवजीके मैलसे नादियाको चरानेके लिये हुई बतलाते हैं। इनकी ठीक संख्या नहीं मालूम है पर ये लोग भी ज्यादातर राज्यसे जीविकामें जमीन या गांव पाते हैं। पहले तो इन लोगोंका राज्यमें बड़ा प्रभाव था पर अब यह लोग समयानुकूल पढ़े लिखे न होनेके कारण बिलकुल गिर-

गये हैं। राजपूतोंकी कुल संख्या ५४५००० है। इनमें ज्यादा तर राजवंशी राठौड़ हैं, उक्त संख्याके अन्तर्गत चौहान, तैवर, भाटी और परिहार आदि राजपूतोंकी भी गणना है जो इस भूमिमें राठौड़ोंका राज्य होनेके पहले बसते थे या इस भूमिके स्वामी थे। पर अब उनकी संख्या बहुत कम है, भूमि स्वत्वाधिकार उनके हाथमें बिलकुल नहीं है। कुल राज्यभरमें५९००० चमारोंकी गणना है। ये लोग भी जाटोंकी तरह खेती करते हैं या मजदूरीके कामसे जीविका निर्वाह करते हैं। बहुतेरे चमड़ेके रोजगारसे अच्छा मुनाफा उठाते हैं। यहां पर सेवग नामक एक जाति विशेषके लोग पाये जाते हैं जो प्रायः मंदिरोंके पुजारी हैं। इनके आचार विचार सब ब्राह्मणोंकेसे हैं पर ये ब्राह्मण नहीं माने जाते। कहा जाता है कि पहले ये लोग ब्राह्मण थे। बीचमें इन लोगोंने किसी कारणवश जैन मत स्वीकार कर लिया था, और राज्यके दबावसे यह लोग जैन मत छोड़कर फिर हिन्दू होगये और इस अवस्थामें यह सेवग कहलाये। इनके शिवाय नाई, माली, डोम, थोरी आदि अनेक जातियोंके ऐसे लोग इस राज्यमें बहुतायतसे पाये जाते हैं जो और जगहों पर कम देखनेमें आते हैं। उक्त चारों जातियोंके लोग अपनेको राठौड़ोंकी पतित शाखाओंमेंसे बतलाते हैं। यद्यपि राज्यकी ख्यात वगैरहमें इस बातका कहीं प्रमाण नहीं मिलता परन्तु इन लोगोंके रस्म रवाज और राठौड़ोंके साथ उनके परस्पर व्यवहार बर्तावसे उन लोगोंके कथनमें सत्यता प्रतीत होती है। नाइयोंका पेशा प्रसिद्ध ही है। माली लोग खेती करते हैं और राजपूतोंमें यही लोग धाभाई होते हैं। थोरी अकसर वीर राजपूतोंकी गुणावली गान करके मांग मांग खाते हैं और जरायम पेशा भी है, डोम मिरासीपनेका पयानी गाने बजानेका पेशा करते हैं। सरकारमें नौबत नगाड़े भी यही लोग बजाते हैं। ये लोग गांव भी राज्यसे पाते हैं और जागीरदारोंमें इनकी त्योहारोंकी रकमें बँधी हैं। उन्हींसे इनकी जीविका निर्वाह होती है।

आकार प्रकार और आचार विचार ।

जल वायुके अनुसार यहाँके मनुष्योंका रंग स्याही मायल पक्का गेहुआँ होता है । स्त्रियोंका रंग कुछ सुर्खी मायल पीलासा होता है । चेहरा लम्बा आंखें मामूली पेट बड़ा और पैर पतले ऊंचाई औसत ५ फुट सात इंच तक, यही यहाँके मनुष्योंका ठीक हुलिया है । भूमि-गुणके अनुसार यह लोग व्यवहार चतुर होते हैं। लम्बा अंगरखा और सीधी पगड़ी ही यहाँका असली पहनावा है पर अब यह पहनावा ब्राह्मण और महाजनोंमें हीं देखाजाता है । राजपूतोंमें साफा और अंगरेजी कोटकी चाल अधिक प्रचार पाने लगी है। खान पानका आचार विचार यहां बहुत ही कम है। ब्राह्मणको छोड़ कर नाई माली और राजपूतोंका (नली बिना) एक हुक्का चलता है । नाई और कहा-रकी बनाई रोटी राजपूत लोग खाते हैं, दारू और मांस आमतौरसे वर्ता जाता है । शादीके अवसर पर तो दारूके बिना काम ही नहीं चलता । राजपूतोंमें परदा विशेष है । जिन राजपूतोंमें परदेका बंधन छूट जाता है और स्त्रियां दासी वृत्ति स्वीकार करलेती हैं वे लोग जातिसे पतित दरोगा[1] या गोलोंकी श्रेणीमें समझे जाते हैं । काम धंधेमें ऊँच नीचका कोई विचार नहीं है । हरएक आदमी कौमके लिहाजके बगैर चाहे जो पेशा या नौकरी इखतियार कर सकता है ।

प्रसिद्ध स्थान ।

बीकानेर—शहर बीकानेर ही बीकानेर राज्यकी राजधानी है । यह नगर कलकत्तेसे १३४० मील पश्चिमोत्तर और बम्बईसे ठीक ७५९ मील उत्तरमें स्थित है । बीकानेर राजपूताने भरमें चौथे

(१) राजपूतोंमें रक्खी हुई अन्य जातीय स्त्रियोंसे जो सन्तान होती है उसे गोला कहते हैं । अब यह एक जाति बन गई है। जिन लोगोंके हाथका छुआ पानी पीते हैं उनमेंसे कोई भी यदि गोला लोगोंमें ब्याह सगाई करले तो वह भी गोला होजाता है इसी तरह किसी भांति जातिच्युत राजपूत गोलोंमें मिल जाते हैं । ये गोले लोग राजपूतोंकी ऊंचसे ऊंच और नीचसे नीच सब प्रकारकी सेवा टहल करते और बराबर बैठकर भोजन भी कर सकते हैं ।

नंबरका बड़ा शहर है। सन् १९०१ की मनुष्य गणनाके अनुसार यहाँकी आबादी ५३०७५ मनुष्योंकी थी, जिसमें ३८७९६ हिन्दू १०१९१ मुसलमान ३९३६ जैन और शेष क्रस्तान, सिख, पारसी और आर्य्यसमाजी थे।

इतिहासमें लिखा गया है कि यह शहर राज्यके संस्थापक बीकाजी द्वारा सन् १४८८ में स्थापित किया गया था। यह शहर सुंदर और सुदृढ प्रकोटसे परिवेष्टित है। साढ़े चार मील लंबी पत्थरकी चहार दीवारीमें पांच दरवाजे और छः खिडकियाँ हैं यहां पर दो किले हैं। प्राचीन किला जो बीकाजीने बनवाया था, अब सिर्फ नाम निशानके लिये प्रसिद्ध है, वहां पर एक लक्ष्मीनारायणजीका और दो जैनमंदिर हैं। इस स्थान पर केवल दो तीन पीढ़ीतक राजसी जमैयत रही। बाद इसके राजसिंहजीने नवीन किला बनवाया जो अबतक साङ्गोपाङ्ग वर्तमान है। यह शहरके दरवाजेसे कोई ३०० गजके फासिले पर है। इस किलेमें पूर्व पश्चिम दो दरवाजे हैं और चारोंओर दोहरे दृढ़ कोट हैं और एक खाई है। यह खाई कोई २०–२५ फुट गहरी है। किलेके अंदरके पुराने मकान जो कि अलग अलग राजाओंके बनवाये और उन्हींके नामसे प्रसिद्ध हैं बहुत ही बढ़िया और देखने लायक हैं। किलेके पूर्व दरवाजेके पासवाले लाल पत्थरके महल गंगानिवासके नामसे प्रसिद्ध हैं और वह वर्तमान महाराजके ही बनवाये हुए हैं। संस्कृत पुस्तकालय और प्राचीन हथियारोंका सिलाखाना तथा तोशाखाना खजाना आदि प्रधान कार्यालय किलेमें ही रहते हैं। प्रकोटकी उंचाईके बराबर जितना भाग है वह तो पुराना है और जो मकान प्रकोटसे ऊपर अति उच्च दृष्टिगत होते हैं वे सब महाराज डूँगरसिंहजीके समयमें बने थे।

शहर बीकानेर खूब चौड़ा बसा हुआ है। यहाँ बड़े बड़े धनी लोगोंके आलीशान मकान पत्थरके बने हुए हैं। ये देखनेमें बड़े ही खूबसूरत और पुराने ढंगके हैं। सर्वसाधारण गरीब लोगोंके मकान लाल मिट्टीके बने हैं। वस्ती बड़ी घनी और सड़कें या

रास्ते बहुत ही तंग हैं, दरबार, हाईस्कूल, जेल, अस्पताल और पुलिस स्टेशन आदि जन साधारण संबंधी कार्यालय शहरके कोटके ही अन्दर हैं। बीकानेरमें कोई १० जैन मंदिर हैं जिनमें अति प्राचीन हस्तलिखित संस्कृत पुस्तकें पाई जाती हैं। १५९ हिन्दू देव मन्दिर और २८ मकबरे हैं। शहरके बाहर किलेसे कोई डेढ़ मील पूर्वोत्तर वर्तमान महाराजके निवासस्थान लाल गढ़के महल और विक्टोरिया क्लब, गंगा कचहरी, गंगा रिसाला आदि स्थान हैं। यहांका जेल बड़ाही अच्छा बना हुआ है सिवाय इसके वहां काम भी सब तरहके बहुत अच्छी तरहसे होते हैं। शहरमें म्युनिसिपल कमेटी स्थापित है, दरबार हाईस्कूल सहित शहरभरमें सात स्कूल और एक गर्लस्कूल है, फौजों और पुलिसके अस्पतालके सिवाय सर्व साधारणके लिये एक अस्पताल और दो डिस्पेन्सरियाँ हैं। जनाना अस्पताल भी बनरहा है, चुरूके सेठ भगवानदासके नाम पर एक और अस्पताल है।

शहर बीकानेरके आस पास देवीकुंड और शिवबाड़ी ये दो स्थान और भी देखने लायक हैं। देवीकुंड शहरसे पांच मील पूर्वमें है। यहां एक तलाव और राव जैतसिंहजीसे लेकर भूतपूर्व महाराज डूँगरसिंहजी तक सब राजाओंकी छतरियां बनी हुई हैं। प्रत्येक छतरी लाल पत्थरकी बनी हुई है, उनमें चौकी पर प्रत्येक महाराजकी प्रतिमा है और उनके जन्म तथा मृत्युकी तिथि संस्कृत या मारवाड़ी हिन्दीमें अंकित है। वर्षाके दिनोंमें यहां कई एक मेले भी होते हैं। दूसरा स्थान शिवबाड़ी शहरसे कोई तीन मील दक्षिणमें है। यहां एक ताल और बगीचा है, वर्तमान महाराजके पिता श्रीलालसिंहजीका स्थापित कराया हुआ लालेश्वर नामसे एक शिवमन्दिर है। यहां भी बरसातमें खासकर श्रावणके सोमवारोंके मेले होते हैं। आखिरी सोमवारके दिन महाराज साहब स्वयं यहां पधारते हैं। प्रसिद्ध है कि यह शिवलिंग ठीक मेवाड़के एकलिंगजीकी तरह गढ़ा गया है।

हनुमानगढ़—बीकानेरमें चार निजामतें और सोलह तहसीलें हैं। हनुमानगढ़की तहसील सूरतगढ़ निजामतके अधीन है। हनुमानगढ़

बीकानेरसे १४४ मील पूर्वोत्तरमें घघर नदीके बायें किनारे पर स्थित है। इस नगरमें कचहरी तहसील छोटा शफाखाना पोस्ट आफिस और हिन्दीका एक स्कूल है। इस स्थानका प्राचीन नाम भटनेर है यह एक ऐतिहासिक स्थान है। हनुमानगढ़का किला भट्टियोंका बनवाया हुआ है इसीसे इसका नाम भटनेर पड़ा। १८०५ में महाराज. सूरतसिंहजीके राज्यकालमें यह मंगलवारके दिन विजय होकर बीकानेर राज्यमें मिलाया गया था इसलिये श्रीहनुमान्‌जीके नाम पर इस स्थानका नाम हनुमानगढ़ रक्खा गया। किम्बदन्ती है कि सन् १००४ में महमूद गजनवीने भटनेरको भाटियोंके हाथसे छीना था। परंतु इस बातका कोई विशेष प्रमाण नहीं मिलता। यह निश्चय है कि सन् १३९९ में तैमूरने भटनेरका किला धौलचंद भाटीके हाथसे छीना था। किन्तु जब उसने अपनी बेटी मुसलमानोंको व्याहकर महम्मदी धर्म स्वीकार करलिया तब किला उसे वापिस दे दिया गया। यह किला पहले पहल सन् १५२७ में राठौड़ोंके हाथ लगा। सन् १५४७ में हुमायूँके भाई कामरांने इस पर अपना अधिकार जमा-लिया। सन् १५६० में इस किले पर फिर राठौड़ोंका अधिकार होगया। कुछ दिनों बाद हिसारके सूबेदारने फिर इस पर अपना दखल जमालिया। इसीतरह बहुत दिनोंतक कभी इधर कभी उधर होते रहनेके बाद सन् १८०५ में जाबताखां भट्टीके हाथसे यह किला बीकानेर राज्यमें मिलालिया गया।

चुरू– यह नगर बीकानेरसे सौ मील पूर्व शेखावाटीकी सरहदके पास है। यहां भी तहसीलकी कचहरी है जो रैनी निजामतसे लगती है। प्रसिद्ध है कि इस नगरको चुहरू नामक जाटने सन् १६२० के लगभग बसाया था इसीसे इसका नाम चुरू प्रसिद्ध हुआ चुरूकी आबादी सोलह हजारके करीब होगी, चुरू नगरमें बड़े बड़े लखपती साहूकार हैं क्योंकि अंगरेजी अमलदारीके पहले यह राज-पूतानेका व्यापार क्षेत्र था। बड़े बड़े मकान बाग बगीचे प्राचीन मकबरे और अगणित कुओंसे सुसज्जित होनेके कारण यह स्थान अति रमणीक है। यहांका किला सन् १७३९ का बना हुआ

बतलाया जाता है। यहां डाकघर, तारघर, एक छोटा अस्पताल और हिन्दी उर्दूका एक स्कूल है। यहांका अस्पताल सेठ भगवानदास के द्रव्यसे बना हुआ और उन्हींके नामसे प्रसिद्ध है। चुरूका किला और आसपासके ८० गांव पहले एक जागीरदारके अधीन थे। यह जागीरदार बीकानेर राज्यके पहले दरजेके आठ टिकाई सरदारों-मेंसे कांधलोंत सरदार थे। सन् १८१३ में जब राजाने किला घेर लिया तो चुरूका ठाकुर हीरेकी कनी खाकर मरगया। राज्यकी फौजने किले पर दखल जमा लिया पर उक्त ठाकुरके पुत्रने अमीरखाँकी मददसे किले पर शीघ्रही अपना अधिकार जमा लिया। सन् १८१८ में राज्यने अंग्रेज सरकारकी सहायतासे पुनः चुरू पर कबजा करके किलेको खोदकर भिसमार करदिया और वहांके ठाकुरको कुल पांच गांवकी जीविका देकर उसे सम्पूर्णरूपसे राज्यके अधीन बनालिया।

रेनी—यह नगर बीकानेरसे १२० मील पूर्वोत्तरको स्थित है। यहां निजामत और तहसीलकी दोनों कचहरियाँ हैं। यह नगर सुदृढ़ परिकोटसे परिवेष्टित है और यहां एक जैन मन्दिर है जो सन् १८४१ का बना हुआ है पर देखनेसे ऐसा मालूम होता है कि आजही कारीगरोंने उसका काम खतम किया है। महाराज सूरतसिंहजीके समयका (सन् १७८८–१८२८) का बना हुआ एक किलाभी यहां है। यहां भी पोस्ट आफिस छोटा अस्पताल हिन्दी उर्दूका स्कूल और एक छोटा जेल है जिसमें करीब ८२ कैदियोंकी औसत रहती है। रेनीमें चमड़ेके छागल पीपे आर चमड़पोश आदि बहुत अच्छे बनते हैं और उनका व्योपार दूरदूर तक होता है। रेनी निजामतके अधीन भादरा, चुरू, नौहर, राजगढ़ और रेनी ये पांच तहसीलें हैं। इन सबकी मनुष्यगणना करीब १७५११३ है।

अनूपगढ़—यह नगर बीकानेरसे ८२ मील ठीक उत्तर और घघरके रूक्ष किनारेसे कुछ दक्षिणको बसाहुआ है। यहां बीकानेर खास निजामतकी एक शाखा अदालत है। आबादी यहां कुल १०१५ मनुष्योंकी है। यहांका किला बड़ा अजूबा बना हुआ है। यह किला

सन् १६६८ में महाराज अनूपसिंहजीने बनवाया था इसके आसपास पचहत्तर गांवोंमें राठौड़ोंकी बस्ती बहुत है। इस प्रान्तमें जलके अभावसे खेती बहुतही कम होती है परन्तु घासकी उपज बहुत है। साथही इसके सज्जो और तिलकी पैदावार भी यहां अच्छी होती है।

भादरा—यह नगर बीकानेरसे १३६ मील पूर्वोत्तर और हिसारसे ३५ मील ठीक पश्चिममें स्थित है यहां २६५१ मनुष्योंकी बस्ती है और इसी नामसे रेनी अन्तर्गत तहसील कचहरी भी है। यहां एक किला है और पोस्ट आफिस, हिन्दी उर्दूका स्कूल और एक छोटा अस्पताल भी है। भादरा तहसीलमें १०९ गांव हैं जिनमें करीब ३१९९४ मनुष्योंकी बस्ती है। यह प्रदेश पहले कांधलोंतोंकी जागीरमें था परन्तु यहांका ठाकुर हमेशा राज्यके विरुद्ध लड़ता रहता था इसलिये सरकारी प्रभाव बढ़ने पर सन् १८१८ में राज्यने यह स्थान ठाकुरोंसे छीनकर राज्यमें मिलालिया। यहां जाटोंकी बसीकत ज्यादा है। जमीन यहांकी उपजाऊ है और कुछ भूमि यमुनाकी पश्चिमी नहरसे सिंचाई भी पाती है।

नौहर—यह नगर बीकानेरसे १२९ मील पूर्वोत्तर और हिसारसे ५८ मील पश्चिममें स्थित है। यहां ४६९६ मनुष्योंकी आबादी है और रेनी निजामतके अधीन इसी नामकी तहसील कचहरी यहां है एक हिन्दी-उर्दूका स्कूल, पोस्ट आफ़िस और एक छोटा दवाखाना भी है। यहां पर एक टूटाफूटा किला है। यहांसे १६ मील पूर्व गोगानों नामक गाँवमें अगस्त और सितम्बरके महीनेमें एक मेला होता है जिसमें चौपायोंका ही विशेषतः क्रयाविक्रय होता है। यह मेला गोगा मेड़ीके नामसे प्रसिद्ध है यह मेला और गाँव गोगादे चौहानके नाम पर प्रसिद्ध है जो कवल धर्मरक्षाके लिये मुसलमानोंसे लड़ते २ इसी स्थान पर काम आया था। यहां सर्प बहुत कसरतसे हैं पर साध इतने होते हैं कि वे आदमीके पैरसे कुचल जावें तो भी काटते नहीं; यदि काट भी खाँय तो कोई मरता नहीं। इस तहसीलमें १०० गाँव हैं पर वे अधिकांश राठौड़ जागीरदारोंके ही मातहत हैं।

राजगढ़—यह नगर बीकानेरसे १३५ मील पूर्व या कुछ पूर्वोत्तर बसा हुआ है । यहाँ रेनी निजामतके अधीन एक तहसील कचहरी है और पोस्ट आफिस एक अंग्रेजी हिन्दीका स्कूल और छोटा शफाखाना भी है पर नगर सन १७६६ मे महाराज गजसिंहने अपने पाटवी कुमार राजसिंहजीके नाम पर बसाया था । इस तहसीलमें कोई १८७ गांव हैं—जिनमें पूनिया जाटोंकी वस्ती अधिक है, इस प्रदेशको अक्सर पूनिया परगना भी कहते हैं ।

रतनगढ़—यह स्थान बीकानेरसे ६० मील पूर्व और शेखावाटीकी सरहदसे १० मीलके फासले पर है । यहां सुजानगढ़ निजामतकी एक तहसील कचहरी है । यहां राजा सूरतसिंहने पहले कौलासर नामसे छोटा मजरा वसाया था परंतु उनके पुत्र रतनसिंहजीने इस स्थानको पूर्ण उन्नति देकर हजारों आदमियोंकी वस्ती बनादिया । इस लिये यह स्थान उन्हींके नाम पर रतनगढ़ नामसे प्रसिद्ध हुआ यहां चौपरका बाजार है, एक किला है और नगर प्रकोटसे घिरा हुआ है । पोस्टआफिस है स्कूल है और एक दवाखाना है ।

सुजानगढ़—यह शहर मारवाड़की सरहदसे मिलता हुआ बीकानेरसे ७२ मील दक्षिण पूर्वमें स्थित है । यहां आबादी ९५७३ मनुष्योंकी है । पुराना नाम इस गाँवकी हरबूजीका कोट था । हरबूजी सांखला बड़ा बहादुर और प्रसिद्ध पुरुष हो गया है । मारवाड़का ठिकाना उसीकी बदौलत राठौड़ोंके हाथ लगा था । इस स्थानको महाराज सूरतसिंहने उन्नति दी और सुजानसिंहजीके नाम पर इस स्थानका नाम सुजानगढ़ रखा । यहां एक छोटा पर सुदृढ़ किला भी है जो संड़वाके ठाकुरोंका बनवाया कहा जाता है । इस किलेको राजा सूरतसिंहजीने और भी मजबूत कराया और उक्त ठाकुरोंसे छीनकर बीकानेर राज्यमें मिलालिया । सन् १८६८ से १८७० तक यहां पर अंग्रेज पोलिटिकल अफसरोंका अड्डा भी रहा है । ये अफसर जयपुर मारवाड़ और बीकानेरकी परस्पर सीमावर्ती डकैतीको दमन करनेके लिये तैनात हुए थे । यहाँ तारघर पोस्टआफिस जेल अंग्रेजी हिंदीके एक स्कूल और दवाखाना आदिका उत्तम प्रवन्ध है । निजामत और

तहसीलकी कचहरियां भी यहाँ हैं। यहां से कोई छः मील पूर्वोत्तरको गोपालपुराकी पहाडी है जो समुद्रकी सतहसे १६५१ फुट यानी मरुथलमें सबसे ऊंची पहाडी है। कहाजाता है कि जहां गोपालपुरा बसा हुआ है वहीं पर द्रोणपुर नामका एक शहर था और वह पाण्डव गुरु द्रोणाचार्य्यका बसाया हुआ था। इस तहसीलमें १५१ गांव हैं पर वे प्रायः सर्व बीदावतोंकी जागीरमें हैं क्योंकि यही स्थान असलमें बीकाजीके भाई बीदाजीने मोहिलोंको मारकर अपने कबजेमें किया था।

सूरतगढ़-यह नगर घघर नदीके बायें किनारे पर बीकानेरसे ११३ मील पूर्वोत्तर और भटिंडासे ८८ मील दक्षिण पश्चिम स्थित है। यहां २३९८ मनुष्योंकी आबादी है। यह शहर भी महाराज सूरतसिंहजीने अपने नाम पर बसाया था। यहां एक किला है, पोस्टआफिस है, हिन्दी उर्दूकी एक स्कूल है और छोटा अस्पताल है। सूरतगढ़से कोई दो मील पूर्व्वोत्तर रंग महलके खण्डहर हैं जहां पहले जोइया राजपूतोंकी राजधानी थी। यहां पर एक ऐसी बावडी (बेहर) पाई गई है जिसमें ढाई फुट लम्बी ईंटें लगी थीं। इस तहसीलमें १२६ गांव हैं। पहले यह प्रदेश सोढ़ावाटीके नामसे प्रसिद्ध था क्योंकि सोढ़ाराजपूतोंकी अमलदारी यहां पर थी। सोढ़ा राजपूतोंको भाटियोंने निकाला और भाटियोंको राठौड़ोंने पामाल किया। यहां ज्यादातर आबादी राठौड़ों और जाटोंकी है।

राव श्री बीकाजीके प्रपिता राव रिडमलजीके भाई राव रिडकमलजीका विवाह राना माणिकराव मोहिलकी बेटी कोड़मदेसे निश्चित हुआ था; किन्तु राव रिडकमलजी कुछ स्वरूपवान न थे इसलिये कोड़मदेके अस्वीकार करने पर पूगलके भाटी राव राणकदेके पुत्र कुँवर सादासे उसका विवाह हुआ। मोहिल स्वयं-वर दुलहिन दोनोंकी सकुशल पूगल तक पहुँचानेके लिये लौटती बरातके साथ थे, परन्तु राव रिडकमलजीने राठौड़ सेनाके साथ आक्रमण करके मोहिलोंको भगाया और कुँवर सादाको मार डाला। नयी दुलहिन कोड़मदे अपने पतिके साथ सती हुई। सती

होते समय उसने अपने हाथका कंगन देकर कहा था कि मेरे स्मारकमें यहां एक तालाब खुदवाया जावे। वैसा ही किया गया और वह तालाब इसी कारण कोड़मदेसर कहलाता है। बहुत दिनोंकी बात है मरु भूमिमें माधोसिंह राजपूत एक प्रसिद्ध डाकू था। वह सिंधके एक कारवानको लूटनेके लिये कोड़मदेसर आया परन्तु उसे उन लोगों पर सहसा दया आगई और वह साधु होकर रहने लगा; उसीके वंशके लोग अब भी कोड़मदेसरके पुजारी हैं। मण्डोरसे चलते समय राव बीकाजीको जो भैरवजीकी मूर्ति प्राप्त हुई थी वह भी कोड़मदेसरके पास वाले एक टीले पर स्थापित है। भाद्रपद्र सुदी १३ को कोड़मदेसरमें एक मेला होता है जिसमें बहुत दूर २ के लोग दर्शन करने आते हैं, बीकानेर राज्यकी स्थापना करनेके पहले बीकाजीने कोड़मदेसरमें ही किला बनाया था। उस किलेका भग्नावशिष्ट अबतक दृष्टिगोचर होता है।

नाल।

बीकानेरसे ४ मील पश्चिम यह स्थान है। नाल पर पहले राठी राजपूतोंका अधिकार था। जब झालौरके किलेपर मुसलमानोंका अधिकार हो गया तो कान्हरदेका पुत्र राव बाघा झालौरसे भागकर अपने मामा लोदवाके राव जैतसीके यहां रहने लगा। उन्हीकी मददसे राव बाघाने सन् ११३१ ई. में राठियोंको मारकर नाल पर अपना कबजा किया। बीकानेर राज्यकी स्थापना होनेके समय तक बाघाकी सन्तानके बाघोड़ लोग स्वतन्त्र रूपसे ८४ गांवोंके स्वामी थे। ज्यों २ राठौड़ोंका अधिकार बढ़ता गया त्यों २ बाघोड़ बलहीन होते गये, किन्तु फिर भी वे सदैव बीकानेर राज्यके शुभचिन्तक और पक्षपाती रहे। इस समय बाघोड़ भूस्वत्वसे वंचित हो केवल कृषककी भांति जीवन बिताते हैं।

गजनेर।

बीकानेरसे २० मील पश्चिममें गजनेर नामक एक छोटासा गांव है उसीके पास एक बड़ा तालाब है। यह स्थान पहले बहुत मामू-

ली था परंतु महाराज गजसिंहजीने इस तालको और भी गहरा करा कर बंधान बँधाकर और एक सुविस्तृत बागीचा भी लगवाया। महाराज डूँगरसिंहजीके समयमें इस स्थानकी और भी उन्नति हुई। वर्तमान महाराजके समयमें तो गजनेर बहुतही रमणीक स्थान होगया है। गजनेरमें जा पहुँचनेसे यह स्वप्नमें भी ध्यान नहीं होता कि हम मरुभूमिके मध्यमें खडे हैं। प्राचीन इमारतें तोडकर नये ढङ्गके महल बन रहे हैं। बागीचेका भी अधिक विस्तार होरहा है जो कोई अंग्रेज या राजा रईस बीकानेरमें मेहमान होकर आता है उसे दरबार साहब गजनेरकी सैर जरूर कराते हैं। गजनेरसे बीकानेर तक टेलीफोन लगा है। सर्वत्र बिजलीकी रोशनी है। खासकर जडिके दिनोंमें यहां जलमें मुर्गाबी और किनारे पर भटतीतरोंके शिकारका बड़ा आनंद रहता है पर खेद है कि इस तालका जल कुछ विकारक है। कहा जाता है कि गजसिंहजीके समयमें जोधपुरकी फौजने गजनेर पर अड्डा जमाया तो दो बोरे जहर संखियाके तालमें डलवा दिये गये थे। उसीका असर अब तक बाकी है। महीने दो महीने लगातार तालका पानी पीनेसे मनुष्य बीमार पड़े बिना नहीं रहता।

कौलायतजी।

गजनेरसे कोई ८ मील पूर्व दक्षिणमें कौलायतजी भी देखने लायक स्थान है। यहां भी एक ताल है। और तालके किनारे कपिल मुनिकी त्रिमूर्ति प्रतिमा एक मंदिरमें स्थापित है। यह ताल पहले छोटासा गढ़ा था और दो छोटी २ नदियां पूर्व पश्चिमसे आकर वहां मिलती थीं। उसी स्थान पर बीकानेरके महाजनोंने बड़ा ताल बनवा दिया। यहां दूरसे साधुलोग कपिल मुनिके दर्शन करने आते हैं। श्री दरबार साहब स्वयं कपिल मुनिजीको बहुत मानते हैं। पहले यहां राजसे बंधान था पर रेजीडेन्सी कौंसिलके समय वह भोग बंधान टूट गया था। श्रीदरबार साहबने उसे फिरसे कुछ तरक्कीके साथ जारी करा दिया है। यहां पर

राज्यकी ओरसे एक धर्मक्षेत्र भी है और सरकारी मंदिर है। कई एक महाजनोंकी धर्मशालाएँ और देवमंदिर भी हैं।

राजधानी बीकानेरके मुख्य मुख्य स्थान।

लाल महल।

यह महल वर्तमान महाराज सर गंगासिंहजीने अपने पिता लालसिंहजी साहबकी यादगारमें बनाया है। लालमहल शहरसे १॥ मील के फासले पर उत्तर की तरफ है। महाराज इसीमें निवास करते हैं। यह राजप्रासाद पत्थरोंसे बना है। इसका लालमहल नाम इससे भी सार्थक होता है कि इसका बाहरी भाग सब लाल पत्थरोंसे बना है पत्थरों पर तरह तरहकी शिल्पकारी की गयी है। यह पत्थर बीकानेर राज्य में ही खानसे निकलते हैं। अन्दर सब जगह संगमर्मरका फर्श है। बीचका फर्श बड़ा ही सुन्दर और स्वच्छ है। इस फर्शके चारों तरफ कमरे बने हैं। इन्हीं कमरोंमें महाराज तथा माननीय अभ्यागत जैसे रेसीडेण्ट आदि विश्राम करते हैं। महाराजका दफतर भी यहीं है। दीवारों पर महाराजके हाथसे मरे हुए शेर बाघोंके चर्म्म लटक रहे हैं। बिजलीकी रोशनी और पंखे जगह जगह लगे हैं। ऊपरके भागमें राजमाहिषी निवास करती हैं।

किला।

किला शहरसे मिलाहुआ उत्तर भागमें अवस्थित है। नियम है कि प्रत्येक राजा कुछ न कुछ इमारत इसके अन्दर बनवाते। वर्त्तमान महाराजने भी अपने नामसे एक बड़ा हाल बनवाया है; उसका नाम गङ्गानिवास है। किला बहुत बड़ा तथा मनोहर है। चारों ओर खाई होनेसे वह दुर्गम और रमणीक होगया है। किलेके सामने पबलिक मेमोरियल गार्डन बनाया जा रहा है। काम बड़े जोरशोरसे जारी है। बिजलीकी रोशनी किलेके भीतर और बाहर

होती है तोपों की एक कतार किलेके बाहर लगी हुई है । किलेके भीतरके अनेक महल उल्लेख योग्य हैं परन्तु यहाँ केवल दो एककी बात कही जाती है ।

किलेमें दरबार के लिये दो स्थान हैं । एकके सामने एक बड़ा चौक है । यहाँ सुनहले काम की चित्रकारी बड़ी ही निपुणतासे की गई है । नजर गुजारनेका दरबार यहाँ पर होता है । दूसरा जो दरबार स्थान है उसमें दो दालान बने हैं । उनमें कालीने बिछी हैं मीनाकारीके कामका एक सिंहासन रक्खा हुआ है । इन दालानों की शिल्पकला इस किलेमें प्रथम श्रेणीकी है । जब कोई बड़े लाट महोदय या अन्य कोई महाराज आते हैं तब यह खोला जाता है और यहाँ दरबार होता है । गङ्गा निवास भी अपनी चमक दमकमें निरा ला ही है । इसमें लाल पत्थरों पर बेल बूटे काढ़े गये हैं । किलेके पुस्तकालयमें प्राचीन पुस्तकोंका अच्छा संग्रह है । पहले समयमें जब यहाँके अधीश्वरों ने गुजरात पर चढ़ाई की थी तब वहांसे विजयी होकर अच्छे २ शस्त्र और पुस्तकें लाये थे । विशेषकर प्राचीन पुस्तकें गुजरातसे आई हैं । पुस्तकालयके वर्त्तमान अध्यक्ष पं० नृसिंह लालजी हैं आप महाराजके गुरु तथा राजकुल पुरोहित हैं किलेके शस्त्रागारमें पुराने जमानेकी तलवार, कटार, बर्छी, फारले, छुरे, पिस्तौल, बन्दूक, तमंचा, कड़ाबीन, कुल्हाड़ा, मुद्गर, हूल, संगीन, जंबूरा, पेशकब्ज, दांतिया, जिगरफाड़, लोहेके सोटे. झिलम, बख्तर आदि रक्खे हुए हैं । बीचमें एक सिंहासन भी मौजूद है ।

कलका कुआँ ।

किलेके बाहर थोड़ी दूर पर यह कुआँ बनाया गया है । बिजलीके यंत्रसे पानी खींच कर ऊपर टंकोंमें भरादिया जाता है । टंकोंसे पम्प लगे हैं जिनसे पानी हौजमें आता है और उसीमेंसे शहरवासी पानी लेजाते हैं । कुएँ के पास ही एक कमरेमें आइस फेक्टरी है जो रोज २४ मन बर्फ तय्यार करती है । पीछेके कमरेमें टेली-फोन है ।

बिजली घर।

किलेके पीछे कुछ फासले पर बहुत बड़ा बिजलीघर बना है। उसमें ३ इंजिन लगे हैं परन्तु नित्य २ चला करते हैं। एक इस लिये बन्द रखा जाता है कि उसकी भीतरी सफाई हो जावे। दूसरे रोज वह साफ किया हुआ इंजिन चलाया जाता है और चलते हुएमेंसे एक बन्द कर दिया जाता है। इस तरह बारी बारी तीनों इंजिनों-की सफाई हुआ करती है। इंजिनमें बीकानेरकी खानसे निकला हुआ कोयला झोंका जाता है। कोयले के भीतर से पीली मिट्टी की कंकडियाँ निकलती हैं परन्तु कोयला जलता खूब जोरशोरसे है। कोयलेसे गैस बनायी जाती है और गैससे बिजली। बिजलीकी शक्तिसे राजधानी की कितनी ही मशीनें चलती हैं।